भारतीय रेल

जनवरी 2022

मूल्य ₹ 20



रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोय
रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका



भारतीय रेल

की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

विज़िट करें

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn



सदस्यता शुल्क

मद		ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ऑनलाइन सदस्यता शुल्क (₹)
एक प्रति (मासिक अंक)		20	-
एक प्रति (विशेषांक)		70	-
वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण)	एक वर्ष	250	263
	दो वर्ष	460	483
	तीन वर्ष	675	709
वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी)	एक वर्ष	200	210
	दो वर्ष	370	389
	तीन वर्ष	540	567
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा		1,250	1,313
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा		2,500	2,625

(वार्षिक सदस्यता शुल्क विशेषांक के साथ)

भुगतान का माध्यम

ऑनलाइन सदस्य www.irctctourism.com/IRBRMag पर सदस्यता शुल्क का भुगतान कर सकते हैं।

ऑफलाइन डी.डी./चेक/म.ओ./पो.ओ./नगद **देय** - 'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली'

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

पोस्ट..... जिला.....

राज्य..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

रेल कर्मचारी : हाँ / नहीं वर्तमान सदस्यता (यदि हो तो) संख्या ..... तारीख .....

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001,
टेलीफोन: 011-47845378, 23382531, 45380 (रेलवे) **bmpr310rb@gmail.com**

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

जनवरी 2022 आरंभ : 1960 वर्ष : 62 अंक : 6 मूल्य : ₹20

संपादक मंडल

श्री विनय कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

श्री नरेश सालेचा
सदस्य (वित्त), रेलवे बोर्ड

श्री आर.एन. सिंह
सचिव, रेलवे बोर्ड

श्री राजेश दत्त बाजपेई
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार

संपादक
श्री योगेश अवस्थी

संपादकीय कार्यालय

संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क

श्री प्रशान्त कुमार पट्टनायक
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
टेलीफोन: 23303665, 23382531
bmpr310rb@gmail.com

संपादन सहयोग

श्री रणमत सिंह

आवरण

रेल कोच कारखाना, कपूरथला उत्पादित
श्री फेज मेमू

फॉलो करें

Twitter : @bhartiyarailrb
Instagram : bhartiyarailpatrika

इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।

सदस्यता शुल्क

सर्वसाधारण - ₹250
रेलकर्मियों के लिए - ₹200
(विदेशी) सी-मेल द्वारा - ₹1,250
(विदेशी) एयर-मेल द्वारा - ₹2,500

© भारतीय रेल

05 **रेल मंत्री का वाराणसी दौरा**

07 **रेल मंत्री ने माल लदान में सुगमता हेतु**
सुगम कंटेनर इकाइयों का निरीक्षण किया

08 **रेल मंत्री का प्रयागराज दौरा**

09 **बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर**
के 'महापरिनिर्वाण दिवस' पर रेल मंत्री ने श्रद्धांजलि अर्पित की

11 **रेल राज्यमंत्री ने डिमापुर-कोहिमा**
नई बी.जी. लाइन परियोजना स्थलों का निरीक्षण किया

12 **रेल राज्य मंत्री द्वारा**
दो पैसेंजर रेल सेवा की बहाली का शुभारम्भ

13 **रेल राज्यमंत्री ने शताब्दी एक्सप्रेस**
की विस्तारित सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

14 **भारतीय रेल की वर्ष 2021 की उपलब्धियाँ**

22 **तेजस डिब्बों के साथ**
4 राजधानी एक्सप्रेस का संचालन शुरू

28 **31वें एनईसीए कार्यक्रम में**
उत्तर मध्य रेलवे और पश्चिम रेलवे पुरस्कृत

29 **श्री विनय कुमार त्रिपाठी**
ने संभाला अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का पदभार

31 **रेलों के आँचल से**

51 **खेल जगत**

55 **सोनभद्र**
श्री सुरेंद्र अग्निहोत्री

59 **डिजिटल मीडिया की हदें और सरहदें**
प्रो. संजय द्विवेदी

63 **गोटमार**
श्री विपिन पवार

65 **पिंजरा**
सुश्री सविता मिश्रा 'अक्षजा'

68 **भानुपुरा की लाड़ली बेटी : मन्नू भंडारी**
सुश्री कल्पना मनोरमा

70 **जीवन के पक्षधर फिल्मकार : बिमल रॉय**
श्री अजय कुमार शर्मा

72 **कलावृक्ष की स्तंभ हैं : गीतांजलि शर्मा**
श्री रणमत सिंह

सम्पादकीय



भारतीय रेल के लिए चुनौतियों और परिवर्तन का वर्ष रहा 2021

'भारतीय रेल' पत्रिका की टीम की ओर से आप सभी को नववर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वर्ष 2021 में कोरोना की दूसरी लहर से लाखों लोग प्रभावित हुए। इस लहर के दौरान देश के कई राज्यों में मेडिकल ऑक्सीजन की कमी महसूस की गई। ऐसे में हमेशा की तरह भारतीय रेल फिर एक बार अपने देशवासियों की मदद के लिए आगे आई। जहाँ जरूरत थी, उन राज्यों में मेडिकल ऑक्सीजन पहुँचाने में यथासंभव मदद की। मेडिकल ऑक्सीजन की जरूरत को पूरा करने के लिए भारतीय रेल ने 15 राज्यों में 899 से अधिक ऑक्सीजन एक्सप्रेस चला कर 36,840 मीट्रिक टन से अधिक मेडिकल ऑक्सीजन पहुँचाई थी। मेडिकल ऑक्सीजन की भविष्य में कमी न हो, इसके मद्देनजर रेल अस्पतालों में 78 ऑक्सीजन प्लांट्स स्थापित किए गए हैं। 69 रेलवे अस्पतालों में कोविड के इलाज के लिए जरूरी सुविधाओं में वृद्धि की गई है।

टीकाकरण में भी भारतीय रेलकर्मी पीछे नहीं रहे। 30 दिसम्बर, 2021 तक लगभग 10.97 लाख रेलकर्मियों ने पहली डोज लगवाई थी और 8.38 लाख रेलकर्मियों ने दोनों डोज लगवा ली थीं।

पिछले दो वर्षों से कोविड 19 की महामारी ने पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले रखा है, किन्तु ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी भारतीय रेल की विकास यात्रा थमी नहीं बल्कि और अधिक तेजी से आगे बढ़ी। वर्ष 2021 भारतीय रेल के लिए प्रमुख परिवर्तन का वर्ष रहा है, क्योंकि इसी वर्ष कई महत्त्वपूर्ण कार्य हुए, जिसमें बुनियादी ढांचे के विकास, नवाचार, नेटवर्क की क्षमता विस्तार, माल ढुलाई तथा विविधीकरण में अभूतपूर्व वृद्धि आदि शामिल है।

गत वर्ष पीपीपी मोड पर पुनर्विकसित किए गए गांधीनगर रेलवे स्टेशन तथा रानी कमलापति रेलवे स्टेशन का लोकार्पण प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया। इन स्टेशनों पर एयरपोर्ट जैसी अत्याधुनिक सुविधाएँ यात्रियों को उपलब्ध करवाई जा रही हैं। देश के कई रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास तथा सौन्दर्यीकरण का कार्य तेजी से किया जा रहा है। इसी क्रम में एक नवीकृत रेलवे स्टेशन बनारस का हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने निरीक्षण कर सुविधाओं का जायजा लिया।

अत्याधुनिक यात्री सुविधाओं के साथ-साथ सुरक्षा तथा संरक्षा पर भी भारतीय रेल द्वारा विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जिसके कारण अप्रैल 2019 से अब तक किसी भी यात्री की मृत्यु नहीं हुई है, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है।

भारतीय रेल किसान तथा व्यापारियों को माल लदान के लिए प्रोत्साहित कर रही है, जिसके उत्कृष्ट परिणाम हमें वर्ष 2021 में दिखाई दिए हैं। वर्ष 2021-22 के दौरान 31 दिसम्बर, 2021 तक 1,029.94 मीट्रिक टन माल का लदान किया गया, जो गत वर्ष की इसी अवधि के दौरान किए गए लदान के मुकाबले में 159.53 मीट्रिक टन (18 प्रतिशत) अधिक है। इस अवधि के दौरान मेल व एक्सप्रेस ट्रेनों का समयपालन 92.55 प्रतिशत दर्ज किया गया।

'भारतीय रेल' पत्रिका की टीम हमेशा आपके सुझावों तथा वर्तमान बाजार के वर्तमान प्रचलनों को ध्यान में रखकर पत्रिका के कलेवर तथा कंटेंट में परिवर्तन करती आ रही है। वर्तमान अंक में कुछ बदलाव किए गए हैं। हमें विश्वास है कि आपको हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। आप हमें जरूर बताएँ।



रेल मंत्री का वाराणसी दौरा

रेल मंत्री ने वाराणसी से जुड़ी रेल परियोजनाओं की समीक्षा की

भारतीय रेल धार्मिक और पर्यटन महत्त्व वाले स्टेशनों पर बेहतर यात्री सुविधाएँ प्रदान करने पर ध्यान केन्द्रित कर रही है। आध्यात्मिक महत्त्व वाले दुनिया के सबसे पुराने जीवंत शहरों में से एक वाराणसी के दो बड़े रेलवे स्टेशनों वाराणसी शहर और बनारस में यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मुहैया कराने के लिए रेलवे ने अत्याधुनिक सुविधाओं, विस्तृत यात्री सहूलियतों, स्वच्छता और संरक्षा उपलब्ध कराते हुए इन स्टेशनों को पुनर्विकसित कर आधुनिक बनाया है। भारत में गंगा के किनारे जहां बहुत बड़ी आबादी रहती है और जहां महत्त्वपूर्ण कृषि, औद्योगिक और हस्तशिल्प का उत्पादन होता है, रेलवे वहां रेल नेटवर्क के विस्तार पर ध्यान केन्द्रित कर रही है।



वाराणसी कैंट रेलवे स्टेशन का निरीक्षण करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

वाराणसी दौरे के दौरान केंद्रीय रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 24 दिसम्बर, 2021 को वाराणसी कैंट रेलवे स्टेशन में मौजूद प्रत्येक सुविधा और स्वच्छता के स्तर का विस्तृत निरीक्षण किया। उन्होंने प्लेटफॉर्म नं. 1 पर नए खुले एक्जक्यूटिव लाउंज को देखा और स्टेशन पर मौजूद यात्रियों से भी बातचीत की। रेल मंत्री ने रेलवे कर्मचारियों के लिए बनी एईएन कॉलोनी का भी दौरा किया और संबंधित अधिकारियों को जल्द से जल्द स्टाफ क्वार्टरों का आवश्यक फेसलिफ्ट करने के निर्देश दिए।

इससे पहले रेल मंत्री ने वेंडर्स, एमएसएमई और स्टार्ट-अप कंपनियों के साथ एक बैठक की। बैठक में रेल मंत्री ने रेलवे की सरल व्यापार नीति के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि रेलवे राष्ट्रीय परिवहन प्रणाली की भूमिका निभाते हुए छोटी खेपों के परिवहन सहित सभी प्रकार के उद्यमियों को लॉजिस्टिक समाधान प्रदान करने के लिए पूरी तरह तैयार है। उन्होंने व्यवसायियों से आग्रह किया कि वे अपने माल को सुरक्षित और सुविधाजनक रूप से शीघ्रतापूर्वक देश के किसी भी हिस्से में ले जाने के लिए रेल नेटवर्क का उपयोग करें।

रेल मंत्री ने बनारस लोकोमोटिव वर्क्स कारखाने का भी निरीक्षण किया। इस परिसर में भारतीय रेल के लिए डीजल और बिजली के रेल इंजन बनाए जाते हैं। यहां उन्होंने जनप्रतिनिधियों से भी बात की। उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्रियों, श्री नीलकंठ तिवारी व श्री रविन्द्र जायसवाल, सांसद, श्री बी.पी. सरोज, विधायकगण श्री सुरेन्द्र नारायण सिंह और श्री शरद प्रसाद, एमएलसी श्री केंद्र नाथ सिंह और केन्द्रीय भारी उद्योग मंत्री, डॉ. एम.एन. पाण्डेय के प्रतिनिधि श्री हेमंत सिंह ने रेल मंत्री के समक्ष अपनी माँगें रखीं। रेल मंत्री ने कहा कि 2014 से पहले उत्तर प्रदेश में रेल परियोजनाओं के विकास पर जहाँ 1,100 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष खर्च किए जाते थे, वहीं वर्तमान सरकार द्वारा 12,000 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष खर्च किए जा रहे हैं।

रेल मंत्री ने क्षेत्र में चल रही विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं की समीक्षा बैठक ली। बैठक में उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, श्री आशुतोष गंगल, उत्तर पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक, श्री विनय कुमार त्रिपाठी, उत्तर मध्य रेलवे के महाप्रबंधक, श्री प्रमोद कुमार और बनारस लोको वर्क्स की महाप्रबंधक, सुश्री अंजली गोयल भी उपस्थित थीं।



बनारस रेल इंजन कारखाना के कर्मियों से बात करते हुए रेल मंत्री

रेल मंत्री द्वारा बनारस रेलवे स्टेशन का निरीक्षण

रेल मंत्री ने बनारस रेलवे स्टेशन के उत्कृष्ट कार्यों पर प्रसन्नता व्यक्त की



बनारस स्टेशन पर सुविधाओं का जायजा लेते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

केंद्रीय रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 25 दिसम्बर, 2021 को सुबह तड़के वरिष्ठ रेल अधिकारियों के साथ बनारस रेलवे स्टेशन का गहन निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने सर्कुलेटिंग एरिया में स्थापित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 3D कलाकृति को नमन करने के उपरान्त सर्कुलेटिंग एरिया, धरोहर के रूप में सुसज्जित नैनो गेज के इंजन, प्लेटफॉर्म, फुट ओवर ब्रिज, सामान्य यात्री हाल, खानपान व्यवस्था, वी.आई.पी. लाउंज, स्टॉल एवं अन्य उपलब्ध यात्री सुविधाओं को देखा। बनारस रेलवे स्टेशन के निरीक्षण के दौरान रेल मंत्री ने क्षेत्रीय विधायक के साथ बनारस स्टेशन के टी-स्टॉल पर कुल्हड़ वाली चाय का आनन्द लिया तथा वेंडर को धन्यवाद दिया। उन्होंने बनारस स्टेशन के विकास में नवनिर्मित द्वितीय प्रवेश द्वार को स्थानीय स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट नमूना बताया। बनारस स्टेशन पर उन्होंने उपलब्ध यात्री सुविधाओं एवं विकास कार्यों का निरीक्षण किया तथा उत्कृष्ट कार्यों पर प्रसन्नता व्यक्त की।

रेल मंत्री द्वारा बनारस से प्रयागराज जंक्शन तक विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण

केंद्रीय रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 25 दिसम्बर, 2021 को पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री विनय कुमार त्रिपाठी के साथ बनारस से प्रयागराज जंक्शन तक दोहरीकरण एवं गति विस्तार समेत विभिन्न विकास कार्यों का विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण किया। इस दौरान मंडल रेल प्रबन्धक, वाराणसी श्री रामाश्रय पाण्डेय समेत वरिष्ठ रेल अधिकारी उपस्थित थे।

रेल मंत्री ने बनारस से झूंसी तक विण्डो ट्रेलिंग के माध्यम से दोहरीकरण कार्यों और उससे जुड़े स्टेशनों के विकास कार्यों को देखा। इस दौरान उन्होंने प्लेटफॉर्म के उन्नयन और विस्तार, फुट ओवरब्रिज का कार्य, समपार फाटकों में सुधार, स्टेशनों पर शेड एवं अन्य यात्री सुविधाओं का जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान रेल मंत्री झूंसी रेलवे स्टेशन पर रुके और स्टेशन के परिचालनिक सुधार, यात्री सुख-सुविधाओं, भवन सुधार व सुंदरीकरण समेत मेला अवधि में श्रद्धालुओं हेतु अस्थाई रूप से बनने वाले आश्रय केंद्र, रैन बसेरा, शौचालय, वॉटर हाइड्रेंट, टिकट काउंटर, पूछताछ केंद्र तथा कंट्रोल रूम आदि का संज्ञान लिया।



बनारस-प्रयागराज रेलखंड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

रेल मंत्री ने बनारस-प्रयागराज रेल खण्ड दोहरीकरण परियोजना के अंतर्गत झूंसी-दारागंज के मध्य संगम पर निर्माणाधीन महत्त्वपूर्ण रेल ब्रिज का अवलोकन किया तथा इसके निर्माण में तेजी लाने का निर्देश दिया। रेल मंत्री विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण करते हुए दारागंज-प्रयागराज रामबाग होते हुए प्रयागराज जंक्शन पहुंचे। इस दौरान उन्होंने बनारस से प्रयागराज तक परिचालनिक व्यवस्था के सुदृढ़ और तीव्र बनाने की योजनाओं पर महाप्रबन्धक श्री विनय कुमार त्रिपाठी से विचार-विमर्श किया।

रेल मंत्री ने माल लदान में सुगमता हेतु सुगम कंटेनर इकाइयों का निरीक्षण किया

केंद्रीय रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 19 दिसम्बर, 2021 को उत्तर पश्चिम रेलवे के क्षेत्राधिकार में स्थित कंटेनर इकाइयों का निरीक्षण कर माल लदान को समाज के प्रत्येक वर्ग तक सुगमता से पहुंचाने के लिए दिशानिर्देश प्रदान किए।

ऊपर तथा दोनों साइडों से खोलकर सामान को लोड-अनलोड किया जा सकता है। रेल मंत्री ने कंटेनर निर्माण में नवाचार की इस प्रक्रिया की सराहना की और कहा कि यह देश में माल लदान की आवश्यकता के अनुसार किया जा रहा कार्य है।

इस अवसर पर श्री वैष्णव ने रेलवे के नौजवान अधिकारियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि हमें देश को आगे ले जाने वाले नए आइडियाज पर कार्य करना है क्योंकि हर आइडिया का कुछ-न-कुछ मूल्य होता है, वह निरर्थक नहीं होता एवं हर प्रश्न का उत्तर अवश्य मिलता है। इस



लदान में सुगमता हेतु विशिष्ट रूप से डिजाइन किए गए कंटेनर (बाएं) का निरीक्षण करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

श्री वैष्णव ने रेवाड़ी के निकट पाली स्थित एक कंटेनर इकाई द्वारा विशेष प्रकार के निर्मित कंटेनर का अवलोकन किया तथा उनकी उपयोगिता की जानकारी प्राप्त की। ये कंटेनर विशेष रूप से छोटे उद्यमियों, व्यापारियों व किसानों के उपयोग को ध्यान में रखकर बनाए जा रहे हैं। श्री वैष्णव ने कंटेनर का निरीक्षण करते हुए बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी का विजन है कि सरकार की सभी योजनाओं का लाभ प्रत्येक वर्ग को प्राप्त हो, इसको ध्यान में रखकर हम कार्य कर रहे हैं।
प्रधानमंत्री जी की गति शक्ति परिकल्पना ने हमें नई दिशा की ओर अग्रसर किया है, जिसमें हम रेलमार्ग, सड़क मार्ग व जलमार्ग से अधिकाधिक सामान का ट्रांसपोर्ट व्यवस्थित व तीव्र गति से करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इन छोटे कंटेनर्स में 32 टन तक सामान आ सकता है और इनको इस तरह से तैयार किया गया है कि इनको

श्री वैष्णव ने काठूवास स्थित कंटेनर साइडिंग का निरीक्षण कर कंटेनर लोडिंग की प्रक्रिया का गहनता के साथ अवलोकन किया। इस अवसर पर उन्होंने स्वयं लिफ्टिंग क्रेन द्वारा विभिन्न प्रकार के कंटेनर्स को ट्रेन पर लोड करने की प्रक्रिया को बारीकी से देखा, इस कार्य में सम्मिलित कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाया। खाटूवास कंटेनर साइडिंग से अभी तक डबल स्टैक कंटेनर का परिवहन किया जाता है। रेल मंत्री की उपस्थिति में ट्रिपल स्टैक कंटेनर को लोड कर नई शुरुआत की गई। श्री वैष्णव ने कहा कि यह प्रधानमंत्री जी की विस्तृत सोच का परिचायक है कि हम नई तकनीक को अपना कर अधिक क्षमता के साथ कम राजस्व में बेहतर परिणाम को प्राप्त करें तथा अंत्योदय की भावना से कार्य करते हुए निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हों।

अवसर पर श्री वैष्णव के साथ श्री संजय कुमार मोहंती, सदस्य, परिचालन एवं व्यवसाय विकास, रेलवे बोर्ड, श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे, श्री आशुतोष गंगल, महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे, श्री आर.के. जैन प्रबंध निदेशक, डेडीकेटेड फ्रेट कॉरीडोर उपस्थित रहे।

रेल मंत्री ने काठूवास कंटेनर साइडिंग से न्यू डाबला तक फुट-प्लेट कर व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। इसके अतिरिक्त यात्री सुविधाओं एवं रेल परिवहन को सुगम बनाने के लिए न्यू डाबला से रेवाड़ी तक विंडो ट्रेलिंग कर अधिकारियों को दिशा-निर्देश प्रदान किए। पाली स्टेशन पर रेलमंत्री जी का जनप्रतिनिधियों तथा नागरिकों ने रेल सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए आभार व्यक्त किया। डाबला स्टेशन पर भी जनप्रतिनिधियों एवं आमजन ने रेल मंत्री जी का स्वागत किया।

रेल मंत्री का प्रयागराज दौरा

भारतीय रेल धार्मिक और पर्यटन महत्व वाले स्टेशनों पर यात्रियों को विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में प्रयागराज जंक्शन स्टेशन सहित प्रयागराज क्षेत्र के अन्य स्टेशनों पर रेल उपयोगकर्ता की यात्रा को आरामदायक और सुविधाजनक बनाने के लिए कई नई सुविधाएं जोड़ी गई हैं।

दिनांक 25 दिसम्बर, 2021 को रेल, संचार, सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव प्रातः विशेष ट्रेन से प्रयागराज जं. पहुंचे। स्टेशन पर पहुंचने के बाद रेल मंत्री ने प्रयागराज जंक्शन पुनर्विकास योजना, प्रयागराज जंक्शन ले-आउट और प्रयागराज में समग्र रेल नेटवर्क के विषय में जानकारी प्राप्त की। श्री प्रमोद कुमार महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे और श्री मोहित चंद्र डीआरएम, प्रयागराज ने मंत्रीजी को स्टेशन पर उपलब्ध सुविधाओं तथा योजनाओं के बारे में अवगत कराया। इसके बाद उन्होंने स्टेशन परिसर का भ्रमण कर सभी सुविधाओं और सफाई व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने यात्रियों की सुविधा, भोजन की व्यवस्था, पेयजल, साफ-सफाई और यात्रियों की सुगम आवाजाही सहित अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने स्टेशन पर मौजूद मीडियाकर्मियों से भी बातचीत की। उन्होंने मीडियाकर्मियों से बात करते हुए स्टेशन पर साफ-सफाई और यात्री सुविधाओं की तारीफ की। उन्होंने प्रयागराज जंक्शन के पुनर्विकास की आवश्यकता के बारे में बोलते हुए कहा कि यह सबसे बड़े धार्मिक समागम कुंभ को सेवित करने वाला अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्टेशन है। स्टेशन के भविष्य के स्वरूप के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि भविष्य का स्टेशन 'विरासत भी विकास भी' की थीम पर आधारित होगा। उन्होंने आगे कहा कि कोविड और ओमीकॉर्न की स्थिति को ध्यान में रखकर मशीनीकृत लॉन्ड्री जैसी कोविड पूर्व सुविधाओं को बहाल किया जाएगा।



प्रयागराज जंक्शन का निरीक्षण करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

इसके बाद, मंत्री ने उत्तर मध्य रेलवे, उत्तर रेलवे और पूर्वोत्तर रेलवे के रेल अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक में मंत्री ने कहा कि दयित्वों का निर्वहन करते समय जिन तीन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए, वो हैं 'राष्ट्र प्रथम, सर्वदा प्रथम', 'अंत्योदय' और 'सामाजिक सद्भाव'। बैठक में प्रयागराज जंक्शन की यार्ड रीमॉडलिंग, आरओबी/आरयूबी के निर्माण आदि सहित प्रयागराज क्षेत्र के प्रमुख आधारभूत संरचना कार्यों पर चर्चा की गई। उन्होंने स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ प्रयागराज क्षेत्र में रेलवे के विकास पर भी गहन चर्चा की।

- **प्रयागराज जं का किया निरीक्षण और उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में की जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों से वार्ता**
- **प्रयागराज जं. के आधारभूत संरचना विकास और पुनर्विकास योजनाओं के बारे में की चर्चा**
- **डीएफसी के कंट्रोल सेंटर का भी किया निरीक्षण**



बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर
के 'महापरिनिर्वाण दिवस' पर रेल मंत्री ने श्रद्धांजलि अर्पित की



भारतीय भारतीय संविधान के महान वास्तुकार एवम् निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की 65वीं पुण्यतिथि 'महापरिनिर्वाण दिवस' पर रेल भवन में रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने बाबा साहब की तस्वीर पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। रेल भवन के अलावा विभिन्न क्षेत्रीय रेलों और उत्पादन इकाइयों में भी रेलकर्मी द्वारा बाबासाहब को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

उत्तर रेलवे

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के 'महापरिनिर्वाण दिवस' पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे श्री आशुतोष गंगल तथा अन्य रेलकर्मी।



दक्षिण पूर्व रेलवे



बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के 'महापरिनिर्वाण दिवस' पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे सुश्री अर्चना जोशी।

पश्चिम मध्य रेलवे



भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के
'महापरिनिर्वाण दिवस' के अवसर पर
महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेल,
श्री सुधीर कुमार एवं अन्य अधिकारियों द्वारा
उनके चित्र पर माल्यार्पण करके पुष्पांजलि अर्पित
करते हुए श्रद्धांजलि दी गई।

पश्चिम रेलवे

भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर को
उनके 65वें 'महापरिनिर्वाण दिवस' पर
पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक
श्री आलोक कंसल एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों
द्वारा भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई।



उत्तर मध्य रेलवे



भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. बी आर अंबेडकर के
'महापरिनिर्वाण दिवस' के अवसर पर,
महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे
श्री प्रमोद कुमार ने उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय प्रयागराज
में आयोजित एक समारोह में
डॉ. अम्बेडकर को पुष्पांजलि अर्पित की ।

मेट्रो रेलवे

भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. बी आर अंबेडकर
के 'महापरिनिर्वाण दिवस' के अवसर पर,
महाप्रबंधक मेट्रो रेलवे श्री मनोज जोशी ने
मेट्रो रेल भवन में आयोजित
एक समारोह में डॉ. अम्बेडकर
को पुष्पांजलि अर्पित की।



रेल राज्यमंत्री ने डिमापुर-कोहिमा
नई बी.जी. लाइन परियोजना स्थलों का निरीक्षण किया





समीक्षा बैठक के दौरान (बाएं) एवं वातानुकूलित रनिंग रूम का उद्घाटन करते हुए (दाएं) रेल कोयला तथा खान राज्यमंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे

केंद्रीय रेल, कोयला तथा खान राज्यमंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में विभिन्न विकासमूलक कार्यों तथा चल रही रेलवे परियोजनाओं पर 24 नवम्बर, 2021 को गुवाहाटी में पूर्वोत्तर सीमा रेल के महाप्रबंधक के साथ एक समीक्षा बैठक की। विभिन्न राज्यों में पूर्वोत्तर सीमा रेल (ओपेन लाइन) के समग्र कार्य निष्पादन एवं यात्री सुविधाओं के विकास पर विमर्श के दौरान मंत्री के साथ पूर्वोत्तर सीमा रेल के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता उपस्थित थे। पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण संगठन) के महाप्रबंधक श्री सुनील शर्मा ने भी निर्माण संगठन के वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों के साथ पूर्वोत्तर में निर्माण संगठन की चल रही परियोजना का प्रस्तुतीकरण दिया।

पूर्वोत्तर राज्यों की राजधानियों के साथ जोड़ने के लिए पू.सी. रेल विभिन्न नई रेलवे लाइन परियोजनाओं पर कार्य कर रही है। परियोजनाएं समापन के विभिन्न चरणों में है। समीक्षा बैठक के दौरान सभी भागीदारों द्वारा इन परियोजनाओं के निर्धारित समय पर पूरा करने के संबंध में विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई।

इसके पहले गत 22 नवंबर, 2021 को श्री दानवे ने सेवक- रंगपो नई रेलवे लाइन परियोजना के पुलों तथा सुरंग निर्माण कार्यों का भी निरीक्षण किया। इस परियोजना के जरिए सिक्किम को रेलवे नेटवर्क के साथ जोड़ा जाएगा। मंत्री ने डिमापुर-कोहिमा नई रेलवे लाइन परियोजना स्थलों का निरीक्षण किया, इसके जरिए नागालैंड राज्य की राजधानी कोहिमा को जोड़ा जाएगा। यह लाइन धनसिरी स्टेशन से शुरू होगी, जो लामडिंग तथा डिमापुर के बीच मेन लाइन पर डिमापुर से करीब 18 किमी पहले है। नई लाइन कोहिमा से संलग्न जुब्जा में समाप्त होगी। मंत्री ने अपने दौरे के दौरान नवनिर्मित शोखुवि रेलवे स्टेशन, सुरंग तथा पुल कार्यों का निरीक्षण किया। रेल राज्यमंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे ने 23 नवम्बर, 2021 को कामाख्या स्टेशन पर आधुनिक सुविधाओं वाले 60 बिस्तरों के एक वातानुकूलित रनिंग रूम का भी उद्घाटन किया। इसमें शाकाहारी/मांसाहारी रसोईघर है तथा महिला कर्मचारियों के लिए पृथक् कमरों की व्यवस्था है। उन्होंने रनिंग स्टॉफ के साथ वार्तालाप भी किया।

डिमापुर-कोहिमा नई रेलवे लाइन परियोजना

पू.सी. रेल (निर्माण संगठन) 6,648 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत पर 82.50 किमी लंबी नई रेलवे लाइन परियोजना का निष्पादन कर रहा है। परियोजना में 8 नए स्टेशन (कोहिमा सहित), 24 प्रमुख पुल, 166 छोटे पुल, 4 सड़क ऊपरी पुल, 18 सड़क अधोमार्गी पुल और 14 सीमित ऊंचाई वाले सबवे शामिल हैं। डिमापुर और कोहिमा के बीच पहाड़ी इलाका होने के कारण विभिन्न तकनीकी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। काम की गति तेज करने के लिए रेलवे इंजीनियरों और निर्माण एजेंसियों की टीम चौबीसों घंटे काम कर रही है। कुल परियोजना में से, 2.75 किमी असम क्षेत्र में और शेष 79.75 किमी नागालैंड के अधीन हैं। संपूर्ण परियोजना का कार्य तीन चरणों में निष्पादित किया जा रहा है -

चरण-I : धनसिरी-शोखुवि (16.5 किमी), **चरण-II :** शोखुवि-फेरिमा (28.00 किमी), **चरण-III:** फेरिमा-जुब्जा (38.00 किमी) पूरा होने के लक्ष्य के संदर्भ में। चरण-I का सीआरएस निरीक्षण किया गया है और अक्टूबर, 21 में प्राधिकृत हो चुका है।



परियोजना स्थल पर मजदूरों से बातचीत करते हुए रेल कोयला तथा खान राज्यमंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे

रेल राज्य मंत्री द्वारा
दो पैसेंजर रेल सेवा की बहाली का शुभारम्भ

जबलपुर से नैनपुर पैसेंजर एवं नैनपुर से चिरईडोंगरी पैसेंजर दोनों ट्रेनों की बहाली सेवा

दिनांक 5 दिसम्बर, 2021 को ट्रेन नं. 05705 जबलपुर से नैनपुर पैसेंजर एवं ट्रेन नं. 05711 नैनपुर से चिरईडोंगरी पैसेंजर, दोनों ट्रेनों की बहाली सेवा का केन्द्रीय रेल, कोयला और खान राज्यमंत्री श्री रावसाहेब दादाराव पाटिल दानवे द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से हरी झंडी दिखाकर उद्घाटन किया गया। श्री दानवे ने इस अवसर पर कहा कि यात्री सुविधाओं में विकास के लिए भारतीय रेल ने हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है। इन दोनों यात्री पैसेंजर सेवा की बहाली से जबलपुर और नैनपुर की आम जनता को अतिरिक्त ट्रेन की सुविधा मिलेगी। इस अवसर पर केन्द्रीय इस्पात एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री फग्गन सिंह कुलस्ते, सांसद राज्यसभा श्रीमती सम्पतिया उईके, विधायक श्री देवीसिंह सैयाम एवं दक्षिण पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री आलोक कुमार द्वारा भी ट्रेन नंबर 05711 नैनपुर–चिरईडोंगरी पैसेंजर की सेवा बहाली का नैनपुर स्टेशन से और सांसद लोकसभा जबलपुर श्री राकेश सिंह, पश्चिम मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री सुधीर कुमार गुप्ता एवं मंडल रेल प्रबंधक जबलपुर श्री संजय विस्वास द्वारा भी गाड़ी संख्या 05705 जबलपुर–नैनपुर पैसेंजर ट्रेन को जबलपुर रेलवे स्टेशन प्लेटफॉर्म नंबर 1 से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।





हरी झंडी दिखाकर जबलपुर–नैनपुर पैसेंजर रेल सेवा को बहाल करते हुए रेल कोयला तथा खान राज्यमंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे

पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्री
ने महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेल के साथ चर्चा की

भारतीय रेल का बोगीबील ब्रिज भारत का एक प्रतिष्ठित रेल सह सड़क पुल है। पूर्वोत्तर सीमा रेल ने ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे और पुल की पृष्ठभूमि में इको टूरिज्म के लिए अपनी भूमि का उपयोग किया है। 24 अक्टूबर, 2021 को केन्द्रीय पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग और आयुष मंत्री श्री सर्वानंद सोनोवाल की उपस्थिति में पूर्वोत्तर सीमा रेल के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता ने भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (आईडब्ल्यूएआई) और असम सरकार के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ बोगीबील ब्रिज साइट पर एक बैठक की। बैठक में 'गति शक्ति मिशन' लक्ष्यों को हासिल करने वाले रेल और जलमार्गों का उपयोग करके पर्यटन और कार्गो के लिए संयुक्त रूप से मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक सिस्टम विकसित करने की परिकल्पना की गई थी।



श्री अंशुल गुप्ता के साथ चर्चा करते हुए केन्द्रीय पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग और आयुष मंत्री श्री सर्वानंद सोनोवाल

श्री सोनोवाल ने बोगीबील ब्रिज के पास प्रस्तावित परियोजना स्थल का भी दौरा किया और कहा कि भारत के प्रमुख नदी बंदरगाह के रूप में डिब्रूगढ़ के गौरव को बहाल करने हेतु पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय, असम सरकार और पूर्वोत्तर सीमा रेल मिलकर कार्य कर रहे हैं। कार्गो की आवाजाही में तेजी लाने और ब्रह्मपुत्र नदी तट पर पर्यटन की संभावनाएं तलाशने के लिए विभिन्न परियोजनाओं की योजना बनाई जा रही है। इससे स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के रास्ते खुलेंगे और वैश्विक बाजार तक आसानी से पहुंचने के लिए स्थानीय उत्पाद उपलब्ध होंगे।

रेल राज्यमंत्री ने शताब्दी एक्सप्रेस की विस्तारित सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

मुंबई सेंट्रल-अहमदाबाद शताब्दी एक्सप्रेस अब गांधीनगर कैपिटल स्टेशन तक जाएगी



मुंबई सेंट्रल-अहमदाबाद शताब्दी एक्सप्रेस की विस्तारित सेवा का शुभारंभ करती हुई रेल और कपड़ा राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश

रेल और कपड़ा राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने सूरत स्टेशन पर आयोजित समारोह में 24 दिसंबर, 2021 को प्रतिष्ठित मुंबई सेंट्रल-अहमदाबाद शताब्दी एक्सप्रेस की विस्तारित सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, जिसे अब गांधीनगर केपिटल स्टेशन तक विस्तारित किया गया है। इस अवसर पर सांसद श्री सी. आर. पाटील और विधायक श्रीमती संगीताबेन पाटील, पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री आलोक कंसल, रेलवे के अन्य वरिष्ठ अधिकारी, रेल उपभोक्तागण और इलेक्ट्रॉनिक/प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

इस अवसर पर रेल राज्य मंत्री ने कहा कि इस प्रतिष्ठित ट्रेन के विस्तार से अब गुजरात राज्य की राजधानी और देश की आर्थिक राजधानी मुंबई के बीच रेल संपर्क बेहतर होगा। इससे गांधीनगर के यात्रियों और देश के बाकी हिस्सों से गांधीनगर आने वाले पर्यटकों को फायदा होगा। श्रीमती जरदोश ने दैनिक यात्रियों को लाभान्वित करने वाली चार ट्रेनों की बहाली की भी घोषणा की और यह उन 16 अन्य ट्रेनों के अतिरिक्त होगी, जिन्हें पहले बहाल किया गया था।

अंतरराष्ट्रीय रेलवे उपस्कर प्रदर्शनी का आयोजन

भारतीय रेल और कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री (CII) के सहयोग से प्रगति मैदान नई दिल्ली में 16 से 18 दिसंबर तक आयोजित अंतरराष्ट्रीय रेलवे उपस्कर प्रदर्शनी (IREE) 2021 का सफल आयोजन किया गया, जिसका रेल एवं वस्त्र राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने उद्घाटन किया। उसके पश्चात् उन्होंने भारतीय रेल की क्षेत्रीय रेलवे तथा उत्पादन इकाइयों द्वारा लगाए गए पंडाल का अवलोकन किया। इस अवसर पर श्री सुनीत शर्मा, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड तथा वरिष्ठ अधिकारीगण उनके साथ उपस्थित थे। प्रदर्शनी में लोकोमोटिव तथा रोलिंग स्टॉक, सिविल निर्माण, औद्योगिक इंजीनियरिंग उपकरणों का प्रदर्शन किया गया।



अंतरराष्ट्रीय रेलवे उपस्कर प्रदर्शनी का अवलोकन करती हुईं रेल राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी गण

भारतीय रेल की वर्ष 2021 की उपलब्धियाँ

अवसंरचना प्रगति

वित्तीय वर्ष 2021–22 के दौरान बुनियादी ढांचे के विकास के लिए उच्चतम पूंजी का आवंटन

2.15
लाख करोड़ ₹

1,04,238
करोड़ ₹

नवंबर 2021 तक का खर्च (**48.5%**) है



नई लाइन/ दोहरीकरण/ गेज परिवर्तन

1,330.41
किमी

120.5 एनएल
242.3 जीसी
967.61 डीएल

30 दिसम्बर, 2021 तक



83 आरओबी
338 आरयूबी
172 एफओबी
48 लिफ्ट्स
50 एस्केलेटर्स

नवंबर, 2021 तक

रेलवे विद्युतीकरण में प्रगति



1,903
किमी रूट

पिछले वर्ष की अवधि के दौरान

1,924
किमी रूट

30 दिसम्बर, 2021 तक

माल लदान

2020–21

870.41 मीट्रिक टन

2021–22 (31.12.2021 तक)

1029.24 मीट्रिक टन



+159.53 मीट्रिक टन

+18%

वर्ष के पहले 8 महीनों में (सितंबर 2020 से दिसंबर 2021 तक संबंधित महीने में लगातार 16 महीने) में अब तक का सबसे अधिक माल लदान

मालगाड़ी की गति



42.97 किमी प्रति घंटे

2020–21

44.36 किमी प्रति घंटे

2021–22

(31.12.2021 तक)

गति शक्ति कार्गो टर्मिनल नीति

भारतीय रेल की माल लदाई अंशधारिता को बढ़ाने के लिए कार्गो टर्मिनल्स की स्थापना में आसानी के लिए अनुमोदनों को तेजी से ट्रैक करने का शुभारंभ किया गया।



किसान रेल



1,806 किसान रेलें

5.9 कृषि उत्पादों
लाख टन

153 मार्गों पर परिचालित
24.12.2021 तक

पहली किसान रेल सेवा 7 अगस्त, 2021 को देवलाली (महाराष्ट्र) और दानापुर (बिहार) के मध्य शुरू की गई थी।

100वीं किसान रेल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा रवाना की गई थी।

गांधीनगर कैपिटल और रानी कमलापति रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास

गांधीनगर कैपिटल स्टेशन भारतीय रेल का प्रथम पुनर्विकसित स्टेशन है और इसे 16.07.2021 से कार्यान्वित किया गया है।





रानी कमलापति दूसरा पुनर्विकसित स्टेशन है और इसे 15.11.2021 से कार्यान्वित किया गया है।

दोनों स्टेशनों का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया था

वाई-फाई
की सेवा उपलब्ध

6089
स्टेशन्स

120
स्टेशन पर
(वर्ष के दौरान)



सुरक्षा में वृद्धि

अप्रैल 2019
से किसी यात्री
की मृत्यु नहीं

आनुषंगिक दुर्घटनाएं

48 2019–20

14 2020–21

22 2021–22
30 दिसम्बर, 21 तक









840 स्टेशनों
(वर्ष के दौरान **47**)
पर सीसीटीवी
लगाए गए

भारत गौरव

थीम आधारित ट्रेनें

भारत की विशाल पर्यटन क्षमता का दोहन करने के लिए, भारतीय रेल ने एक नया पर्यटन उत्पाद यानी थीम आधारित पर्यटक सर्किट ट्रेन **'भारत गौरव'** का शुभारंभ किया है।

इससे देश के कोने-कोने में फैले सेवा प्रदाता देश के अप्रयुक्त लेकिन ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण समृद्ध सम्पदा का प्रदर्शन करने में सक्षम होंगे

सेवा प्रदाता कोचों का नवीनीकरण करने में सक्षम होंगे और उन्हें इस मामले में थीम, शुल्क, आंतरिक प्रारूप और अन्य व्यावसायिक तौर-तरीकों को तय करने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है

1,768
कुल मेल/एक्सप्रेस ट्रेनें
वर्तमान में
1,646
93%
ट्रेनों का संचालन

5,626
कुल सब अर्बन ट्रेनें
वर्तमान में
5,528
98%
ट्रेनों का संचालन

3,634
कुल पैसेंजर ट्रेनें
वर्तमान में
1,599
44%
ट्रेनों का संचालन

31 दिसम्बर, 21 तक

वर्तमान में आरक्षित यात्रियों की बुकिंग 2019–20 से अधिक है

समयपालनता



92.55%
मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों की
समयपालन

2021–22 (31.12.2021 तक) के दौरान

एसी इकोनॉमी कोच

भारतीय रेल में 10 फरवरी, 2021 से हाई कैपेसिटी थर्ड एसी इकोनॉमी कोच शामिल

पिछले दो महीनों में ऐसे 33 कोचों का निर्माण। इनके साथ, भारतीय रेल में कुल 54 एसी-III टियर इकोनॉमी कोच उपलब्ध कराए गए हैं।

यात्री स्थान में वृद्धि के लिए इस कोच के डिजाइन में कई नवीन व्यवस्था।

वर्तमान में बोर्ड पर स्थापित उच्च वोल्टेज इलेक्ट्रिक स्विचगियर को भारतीय रेल में पहली बार अंडर फ्रेम के नीचे स्थानांतरित किया गया।

इससे यात्री क्षमता में 11 अतिरिक्त बर्थ की बढ़ोत्तरी के साथ 72 से 83 बर्थ हो गई है।



तेजस श्रेणी के साथ 4 राजधानी एक्सप्रेस

- मुंबई-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस
- अगरतला-आनंद विहार
- मुंबई-निजामुद्दीन अगस्त क्रांति राजधानी एक्सप्रेस
- राजेंद्र नगर-नई दिल्ली (पटना राजधानी एक्सप्रेस)





रोलिंग स्टॉक उत्पादन

नवंबर 21 तक

विद्युत लोकोमोटिव

पिछले वर्षों के 414 की तुलना में 570

लक्ष्य : 981

एलएचबी कोच

पिछले वर्ष 2,788 की तुलना में 3790

लक्ष्य : 6,497

विस्टा डोम कोच

उत्पादित - 13

कुल उपलब्धता - 57

लक्ष्य : 90

रेलकर्मियों का टीकाकरण

10.97 लाख फर्स्ट डोज • **8.38** लाख सेकंड डोज

135 टीकाकरण केंद्र



30.12.2021 तक

क्वारंटाइन/आइसोलेशन



4,176 कोचों को क्वारंटाइन/आइसोलेशन सुविधाओं के लिए रूपांतरण

324 कोचों को दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, नगालैंड, असम और त्रिपुरा राज्यों में राज्य सरकार की मांग के अनुसार तैनात किया गया था।

15 राज्यों में

899 ऑक्सीजन एक्सप्रेस से

36,840 टन से अधिक तरल ऑक्सीजन पहुंचाई गई।

रेलवे टैंकरों की आपूर्ति करने वाली राज्य सरकारों की मांग को पूरा करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहा है।

रेलवे की ओर से लगभग सभी क्षेत्रों में सभी वांछित मार्ग और रेक्स तैयार किए गए थे।

ऑक्सीजन एक्सप्रेस



ऑक्सीजन एक्सप्रेस ने बांग्लादेश के लिए भी (3911.41 एमटी) ऑक्सीजन का वितरण किया है।

रेल अस्पताल



17 नए ऑक्सीजन संयंत्र चालू होने के विभिन्न चरणों में हैं।

69 रेलवे अस्पताल कोविड-19 से प्रभावित रेलवे कर्मचारियों का इलाज कर रहे हैं। इनमें कोविड के इलाज के लिए बिस्तरों की संख्या 2,539 से बढ़ाकर **3,948** कर दी गई है।

कुल कोविड बेड बढ़कर **6,972**, आईसीयू बेड 273 से **404** हो गए हैं, इनवेसिव वेंटिलेटर 62 से बढ़कर **3,544** हो गए हैं, अतिरिक्त 449 नॉन इनवेसिव वेंटिलेटर और **129** हाई फ्लो नेजल ऑक्सीजन मशीनें हैं। साथ ही, **3,420** ऑक्सीजन सिलेंडर अस्पतालों में पूरक के रूप में हैं।

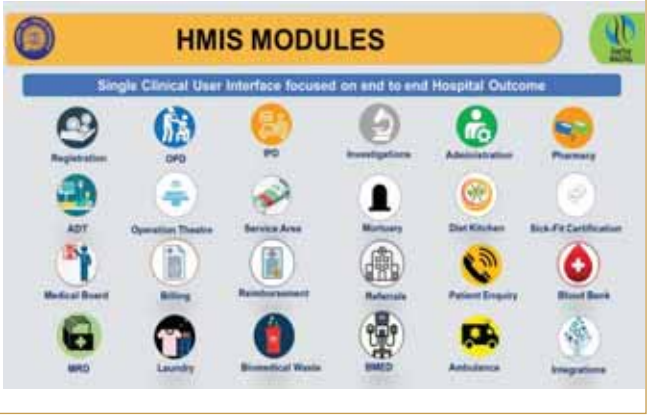
भारतीय रेल में अस्पताल प्रबंधन सूचना प्रणाली

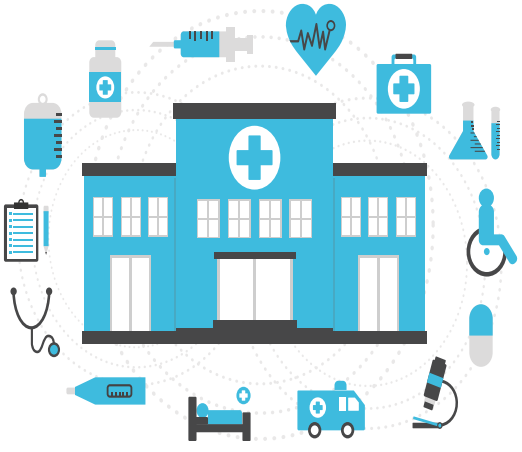
572 रेल अस्पतालों और स्वास्थ्य इकाइयों में पिछले एक वर्ष में एचएमआईएस प्रदान किया गया है। शेष मार्च, 22 तक कवर किया जाएगा।

42.09 लाख यूएमआईडी कार्ड वितरित

रेलवे ने अधिकांश कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों को यूएमआईडी प्रदान किया है।

यूएमआईडी को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की राष्ट्रीय स्वास्थ्य आईडी से भी जोड़ा गया है।





आयुष सुविधा

5 क्षेत्रीय अस्पताल

- नई दिल्ली
- कोलकाता
- मुंबई
- चेन्नई
- गुवाहाटी

तेजस डिब्बों के साथ
4 राजधानी एक्सप्रेस का संचालन शुरू

- भारतीय रेल के लिए विशिष्ट रूप से तैयार तेजस स्मार्ट स्लीपर डिब्बों वाली पहली रेलगाड़ी जुलाई 2021 में चलाई गई थी
- लंबी दूरी की यात्रा के लिए तेजस कोच का इस्तेमाल यात्रियों के सफर अनुभव को शानदार बनाने के लिए एक आदर्श बदलाव है

भारतीय रेल ने नये उन्नत तेजस कोचों के साथ राजधानी एक्सप्रेस के डिब्बों का कायाकल्प करके अधिक आरामदायक रेल यात्रा के अनुभव के एक नए युग की शुरुआत की है। लंबी दूरी की यात्रा में राजधानी रेलगाड़ियों के तौर पर आधुनिक तेजस स्लीपर डिब्बों वाली ट्रेन की शुरुआत यात्रियों के लिए सफर के अनुभव को बेहतरीन बनाने हेतु भारतीय रेल द्वारा एक और आदर्श व शानदार बदलाव है। वर्तमान में, भारतीय रेल तेजस स्लीपर कोच के साथ चार राजधानी रेलगाड़ियों का संचालन कर रही है।

रेलगाड़ी संख्या	मार्ग	क्षेत्रीय रेलवे
12951/52	मुंबई–नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस	पश्चिम रेलवे
20501/02	अगरतला–आनंद विहार	पूर्वोत्तर सीमा रेलवे
12953/54	मुंबई–निजामुद्दीन अगस्त क्रांति राजधानी एक्सप्रेस	पश्चिम रेलवे
12309/10	राजेंद्र नगर–नई दिल्ली (पटना राजधानी एक्सप्रेस)	पूर्व मध्य रेलवे

भारतीय रेल में तेजस स्लीपर डिब्बों के साथ एलएचबी प्लेटफॉर्म पर अत्याधुनिक तेजस ट्रेनों की शुरुआत की गई है। इन अल्ट्रा मॉडर्न रेलगाड़ियों में निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएं हैं:

- स्वचालित प्रवेश द्वार।
- पीए/पीआईएस (यात्री घोषणा/यात्री सूचना प्रणाली)।
- आग और धुआं जांच एवं शमन प्रणाली।
- सीसीटीवी कैमरे।
- बेहतर शौचालय – बायो–टॉयलेट के साथ वैक्यूम असिस्टेड फ्लशिंग, सुपीरियर टॉयलेट फिटिंग, स्पर्श रहित साबुन डिस्पेंसर, सीलबंद गलियारा।
- एल.इ.डी. लाइट्स।
- सुन्दर तरीके से तैयार मनभावन कलर स्कीम आदि।

उल्लेखनीय है कि तेजस डिब्बों के साथ अपग्रेड की गई पहली राजधानी जुलाई 2021 में पश्चिम रेलवे द्वारा दिल्ली–मुंबई मार्ग पर चलाई गई थी।









राँची राजधानी एक्सप्रेस का परिवर्तित मार्ग से संचालन शुरू

दिनांक 26 नवम्बर, 2021 को केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, आवासन और शहरी कार्य मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से रांची राजधानी एक्सप्रेस का परिवर्तित मार्ग से संचालन का शुभारंभ किया। इस अवसर पर विदेश और संस्कृति राज्यमंत्री, श्रीमती मीनाक्षी लेखी, सांसद डॉ. हर्षवर्धन, सांसद श्री नारायण दास गुप्ता के अलावा श्री सुनीत शर्मा, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड, श्री आशुतोष गंगल, महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे, श्री डिम्पी गर्ग, मंडल रेल प्रबंधक दिल्ली भी उपस्थित थे। यह ट्रेन अब नए मार्ग चुनार-चोपन-टोरी-लोहरदगा से चलेगी। यह यात्रा रूट 100 किलोमीटर कम है, जिससे 45 मिनट के यात्रा समय की बचत भी होगी। ट्रेन का नए मार्ग पर 5 और 2 मिनट के लिए चोपन और रेणुकूट स्टेशनों पर ठहराव होगा।



रांची राजधानी एक्स. का शुभारंभ करते हुए केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, आवासन और शहरी कार्य मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी, सांसद डॉ. हर्षवर्धन, सांसद श्री नारायण दास गुप्ता एवं श्री सुनीत शर्मा, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का अध्यक्ष राष्ट्रीय सफ़ाई कर्मचारी आयोग द्वारा निरीक्षण

श्री एम. वेंकटेशन, अध्यक्ष, राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार ने 22 नवम्बर, 2021 को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। उन्होंने भारत सरकार द्वारा सफाई कर्मचारियों के पुनर्वास कार्यक्रम तथा सिर पर मैला ढोने की कुप्रथा के उन्मूलन तथा इस कार्य में लगे सफाई मजदूरों के पुनर्वास तथा उनके कार्य करने की प्रणाली का भी निरीक्षण किया। बाद में उन्होंने महाप्रबंधक श्री आशुतोष गंगल के साथ एक मीटिंग भी की। जिसमें महाप्रबंधक ने बताया कि उत्तर रेलवे में सिर पर मैला ढोने की प्रथा कहीं भी नहीं है, और उन्हें उनके कार्य में प्रयोग किए जाने वाले सभी उपकरण



जैसे वर्दी, फ्लोरोसैंट जैकेट, गमबूट, कैप, दस्ताने, मॉस्क, सैनेटाइजर और मशीनें उपलब्ध कराई जाती हैं।

यात्री सेवा समिति के सदस्यों ने प्रयागराज मंडल के फिरोजाबाद एवं टूण्डला स्टेशनों का किया निरीक्षण



यात्री सुविधाओं का अवलोकन करने हेतु 20 से 22 अक्टूबर 2021 तक दौरा कार्यक्रम के अंतर्गत यात्री सेवा समिति रेलवे बोर्ड द्वारा उत्तर मध्य रेलवे के आगरा एवं प्रयागराज मण्डल के फिरोजाबाद एवं टूंडला स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं का जायजा लिया गया।

सुविधाओं से प्रसन्न होकर समिति ने फिरोजाबाद स्टेशन के लिए रु 10,000 एवं टूंडला स्टेशन के बेहतर साफ-सफाई एवं यात्री सुविधाओं के साथ-साथ गुमशुदा बच्चों को बचाकर उनके परिवारजनों या चाइल्ड लाइन को सौंपने, फर्जी टीटीई को पकड़ने जैसे प्रशंसनीय कार्यों से प्रभावित हो कर रु 25,000 के पुरस्कार राशि की घोषणा भी की।

इस अवसर पर समिति के चेयरमैन श्री रमेश चंद्र रत्न, सदस्य श्री प्रकाश पाल, श्री जयंती लाल, डॉ. गुलाब सिंह टिकरिया, श्री किशोर संभाग सहित अपर मण्डल रेल प्रबंधक (सामान्य) श्री अजित कुमार सिंह, वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबंधक श्री विपिन कुमार सिंह, मण्डल यातायात प्रबंधक श्री जे संजय कुमार एवं मंडल के अन्य अधिकारी गण एवं कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

केंद्रीय चिकित्सालय, बिलासपुर में नवनिर्मित पीएसए ऑक्सीजन प्लांट का लोकार्पण

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 7 अक्टूबर, 2021 को उत्तराखंड अवस्थित *AIIMS* ऋषिकेश से सभी राज्यों/केंद्र शासित राज्यों में पीएम केयर फंड से निर्मित पीएसए ऑक्सीजन प्लांट का लोकार्पण किया गया। केंद्रीय चिकित्सालय, बिलासपुर के नवनिर्मित 02 पीएसए 600 लीटर प्रति मिनट उत्पादन क्षमता ऑक्सीजन प्लांट का लोकार्पण सांसद, बिलासपुर श्री अरुण साव द्वारा किया गया। इस अवसर पर विधायक श्री शैलेष पाण्डेय, महापौर श्री रामशरण यादव उपस्थिति रहे। प्रधान मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ पी.के. सरदार, मंडल रेल प्रबंधक बिलासपुर श्री आलोक सहाय तथा अधिकारीगण इस अवसर पर उपस्थित थे।



एमसीफ में पीएसए ऑक्सीजन प्लांट का लोकार्पण



आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना (एमसीएफ), रायबरेली के चिकित्सालय में नवनिर्मित ऑक्सीजन प्लांट का लोकार्पण मुख्य अतिथि सदस्य विधान सभा सरेनी श्री धीरेन्द्र बहादुर सिंह के द्वारा किया गया। इस समय महाप्रबंधक, एमसीएफ श्री विनय मोहन श्रीवास्तव भी साथ रहे। कोविड-19 महामारी के समय पूरे देश में ऑक्सीजन की अत्याधिक मांग बढ़ जाने के कारण भारत सरकार द्वारा अस्पतालों में ऑक्सीजन प्लांट लगाये जाने हेतु निर्देश दिए गए थे। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाने में भी 152 लीटर प्रति मिनट फ्लो रेट क्षमता का ऑक्सीजन प्लांट लगाया गया है।

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे में ऑक्सीजन संयंत्र राष्ट्र को समर्पित





पूर्वोत्तर सीमा रेल में स्वीकृत 7 ऑक्सीजन संयंत्रों में से 2 पीएसए ऑक्सीजन संयंत्रों का न्यू बंगाईगाँव में मंडल रेल अस्पताल में सांसद श्री अब्दुल खालेक द्वारा तथा लामडिंग स्थित मंडल रेल अस्पताल में विधायक श्री शिबु मिश्रा द्वारा उद्घाटन किया गया। इससे पहले, 24 सितम्बर, 2021 को रेल एवं वस्त्र राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश द्वारा केंद्रीय अस्पताल, मालीगाँव में 500 एलपीएम क्षमता के एक नए ऑक्सीजन संयंत्र का उद्घाटन किया गया था। स्वीकृत तथा सम्पन्न होने के अग्रिम चरण के अधीन 4 अन्य ऑक्सीजन संयंत्रों (कटिहार, न्यू जलपाईगुड़ी, अलीपुरद्वार, डिब्रूगढ़ रेलवे अस्पतालों के प्रत्येक में 250 एलपीएम क्षमता) के साइट पर संबंधित क्षेत्रों के जनप्रतिनिधि भी उपस्थित थे। न्यू बंगाई गांव स्थित संयंत्र की क्षमता 250 एलपीएम है, जबकि लामडिंग स्थित अस्पताल की क्षमता 100 एलपीएम है।

पश्चिम रेलवे : रेलवे मुख्य अस्पताल दाहोद परिसर में ऑक्सीजन प्लांट का उद्घाटन

कोविड-19 महामारी के खिलाफ लड़ाई में पश्चिम रेलवे ने चिकित्सा क्षेत्र में अपने चिकित्सा विभाग को मजबूत और अपने लक्ष्य के लिए प्रतिबद्ध करने के लिए स्वयं के पूर्व प्रयासों को और बेहतर किया है। इस लक्ष्य को जारी रखते हुए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री आलोक कंसल ने 9 दिसंबर, 2021 को रेलवे मुख्य अस्पताल, दाहोद में एक पीएसए ऑक्सीजन प्लांट का उद्घाटन किया। यह पश्चिम रेलवे का 8वां पीएसए ऑक्सीजन प्लांट है। 180 एलपीएम की क्षमता वाला यह पीएसए ऑक्सीजन प्लांट रेलवे मुख्य अस्पताल, दाहोद के इनडोर रोगियों को ऑक्सीजन की निरंतर आपूर्ति करेगा। इस अस्पताल में कुल 105 बिस्तर हैं और नया पीएसए संयंत्र 41 बिस्तरों को ऑक्सीजन की आपूर्ति करने में सक्षम होगा। यह प्रेशर स्विंग एब्जॉर्पशन (PSA) ऑक्सीजन प्लांट आपातकालीन में ऑक्सीजन की कमी दूर करेगा।



तपन सिंह मेमोरियल अस्पताल में ऑक्सीजन जेनरेटर संयंत्र का उद्घाटन



श्री मनोज जोशी, महाप्रबंधक, मेट्रो रेलवे ने 1 दिसम्बर, 2021 को तपन सिन्हा मेमोरियल अस्पताल में एक प्रेशर स्विंग एडसॉर्पसन (PSA) ऑक्सीजन जेनरेटर प्लांट का उद्घाटन किया। यह संयंत्र अस्पताल में भर्ती रोगियों की ऑक्सीजन की मांग को पूरा करने में काफी मददगार साबित होगा। इस संयंत्र में प्रति मिनट 250 लीटर ऑक्सीजन उत्पादन की क्षमता है। यह थोक ऑक्सीजन सिलेंडर खरीदने के खर्च को 70% तक कम करने में भी मदद करेगा। तपन सिन्हा मेमोरियल अस्पताल के प्रधान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अमिताभ दत्ता ने कहा कि यह ऑक्सीजन जेनरेटर प्लांट पीएसए तकनीक पर आधारित है और वायुमंडल से शुद्ध चिकित्सा ऑक्सीजन उत्पादित करने में सक्षम है। यह मशीन काफी हद तक ऑक्सीजन सिलेंडरों पर निर्भरता को दूर करेगी, जोकि कोविड के समय में एक दुर्लभ वस्तु बन गई है एवं इस अस्पताल में चिकित्सीय ऑक्सीजन उत्पादन में आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करेगी।

दक्षिण पूर्व रेलवे : महाप्रबंधक द्वारा तरल मेडिकल ऑक्सीजन स्टोरेज टैंक, इंटिग्रेटेड सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्रोजेक्ट का उद्घाटन

सुश्री अर्चना जोशी, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा 01 नवम्बर, 2021 को तरल चिकित्सा ऑक्सीजन (एलएमओ) भंडारण टैंक, एकीकृत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन परियोजना और दक्षिण पूर्व रेलवे मुख्यालय, गार्डनरीच, कोलकाता में रेलवे क्वार्टर के कार्य की शुरुआत का उद्घाटन किया गया। श्री अतुल्य सिन्हा, अपर महाप्रबंधक, श्री उमेश कुमार वरीन, प्रधान मुख्य अभियंता, डॉ. मिहिर कुमार चौधरी, प्रधान मुख्य चिकित्सा निदेशक इस अवसर पर उपस्थित थे। सेंट्रल अस्पताल में स्थापित 13 के.एल. क्षमता वाला एलएमओ स्टोरेज टैंक रोगियों के साथ-साथ कोविड प्रभावित व्यक्तियों के इलाज हेतु चिकित्सा ऑक्सीजन के विभिन्न उपयोग के लिए दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा एक प्रमुख पहल है।



मेट्रो रेल भवन में मेट्रो रेल उपभोक्ता परामर्शदात्री समिति की बैठक संपन्न

नवगठित मेट्रो रेलवे उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति की बैठक 9 नवम्बर, 2021 को मेट्रो रेल भवन में आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री मनोज जोशी ने की, जिसमें मेट्रो रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल हुए। उन्होंने सदस्यों को मेट्रो परिसर में यात्री सुविधाओं को और बढ़ाने के लिए मेट्रो प्राधिकरण द्वारा की गई विभिन्न पहलों और शहर में चल रही विभिन्न मेट्रो परियोजनाओं की प्रगति के बारे में जानकारी दी। सदस्यों ने मेट्रो सेवाओं में सुधार के लिए अपने सुझाव और सलाह दिए। बैठक में सांसद श्रीमती रूपा गांगुली, ओएसडी और पदेन संयुक्त सचिव, उपभोक्ता मामले विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार श्री प्रसाद कुमार बसु, वरिष्ठ सहायक संपादक, द टाइम्स ऑफ इंडिया, श्रीमती अजंता चक्रवर्ती, रेलवे बोर्ड के मनोनीत सदस्य श्री शंकर दास उपस्थित



थे और उन्होंने सेवाओं में सुधार के लिए मेट्रो रेलवे के प्रयासों का समर्थन किया। महाप्रबंधक ने आश्वस्त किया कि एमआरयूसीसी के सदस्यों से प्राप्त सभी सुझावों पर आवश्यक उपाय किए जाएंगे।

पूर्वोत्तर सीमा रेल द्वारा क्षेत्रीय रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति की 95वीं बैठक का आयोजन



पूर्वोत्तर सीमा रेल ऑफिसर्स क्लब, मालीगाँव में 8 नवम्बर, 2021 को जेडआरयूसीसी (क्षेत्रीय रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति) की 95वीं बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य रेलवे से संबंधित सभी क्षेत्रों की सेवाओं में और सुधार लाने के लिए समाज के विभिन्न वर्गों तथा रेलवे उपयोक्ता के प्रतिनिधियों के साथ सीधे संवाद करना था। इस समिति में पश्चिम बंगाल तथा बिहार के अलावा विभिन्न पूर्वोत्तर राज्यों के विभिन्न सांसद, विधायक, विभिन्न राज्यों के परिवहन विभाग के उच्च अधिकारीगण, यात्री एसोसिएशन, मर्चेंट एसोसिएशन, चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अधिकारीगण तथा विशेष हित समूह इत्यादि शामिल हैं, जिसमें सांसद (लोकसभा) श्री तपन कुमार गोगोई तथा श्री खगेन मुर्मू तथा पूर्वोत्तर सीमा रेल के अधिकारीगण शामिल थे। रेलवे की ओर से पूर्वोत्तर सीमा रेल के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता, पूर्वोत्तर सीमा रेल रेल के अपर महाप्रबंधक श्री राहुल गौतम के साथ पू.सी. रेल मुख्यालय के वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों ने प्रतिनिधित्व किया। बैठक में लोकल ट्रेनों की पुनर्बहाली, ट्रेनों के अतिरिक्त ठहराव, यात्री सुविधाओं में सुधार तथा स्टेशनों तथा ट्रेनों इत्यादि में सुरक्षा प्रदान करने जैसे विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई।

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा मेट्रो रेलवे, कोलकाता की निरीक्षण बैठक सम्पन्न

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति ने 23 दिसम्बर, 2021 को मेट्रो रेलवे, कोलकाता के साथ निरीक्षण बैठक की जिसकी अध्यक्षता सांसद श्रीमती रंजनाबेन भट्ट ने की। समिति के अन्य सदस्यों में सांसद श्री मनोज तिवारी, सांसद श्री दुर्गा दास उईके उपस्थित थे। मेट्रो रेलवे की ओर से महाप्रबंधक श्री मनोज जोशी, अपर महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री शरद कुमार श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी श्रीमती विनीता जैन, उप मुराधि श्री दामोदर हेम्ब्रम, महाप्रबंधक के सचिव श्री प्रत्युष कुमार घोष एवं राजभाषा अधिकारी श्रीमती किरण बोस शामिल थे। इस अवसर पर मेट्रो रेलवे की राजभाषा पत्रिका 'मेट्रो चेतना' के नवीनतम अंक का विमोचन भी किया गया।



पश्चिम मध्य रेलवे : जबलपुर रेल मंडल परिक्षेत्र के सांसदों के साथ महाप्रबंधक के मध्य बैठक आयोजित



दिनांक 23 नवम्बर, 2021 को जबलपुर रेल मंडल परिक्षेत्र के सांसों के साथ महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेल के मध्य बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में मंडल के 09 सांसदों ने अपने क्षेत्र के लिए विकास एवं यात्रियों की सुविधाओं के लिए अपने सुझाव दिए। बैठक का शुभारम्भ महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेल, श्री सुधीर कुमार गुप्ता का एमपीएलएडी फंड से यात्रियों की सुविधा के लिए सहायता उपलब्ध कराने के लिए सभी सांसद सदस्यगणों को धन्यवाद देते हुए सभी सम्मानित जनप्रतिनिधिगणों जो समय-समय पर हमें मार्गदर्शन एवं बहुमूल्य सुझाव तथा सहयोग देते रहे हैं, उनका आभार व्यक्त किया। इसके पश्चात् मण्डल रेल प्रबंधक, जबलपुर द्वारा पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मण्डल पर हुए एवं चल रहे विकास कार्यो की जानकारी प्रदान की। इसके उपरांत बैठक में सांसद, जबलपुर श्री राकेश सिंह, सांसद, सतना श्री गणेश सिंह, राज्यसभा सांसद, श्री राजमणि पटेल, राज्यसभा सांसद, श्री कैलाश जोशी, राज्यसभा सांसद, श्री अजय प्रताप सिंह, सांसद, होशंगाबाद श्री उदय प्रताप सिंह, सांसद, रीवा श्री जनार्दन मिश्रा, सांसद, सीधी श्रीमती रीती पाठक, सांसद, सागर श्री राजबहादुर सिंह ने यात्री सुविधाओं में बढ़ोत्तरी हेतु अपने-अपने सुझाव व्यक्त किए। बैठक का संचालन उप महाप्रबंधक (सामान्य) श्री चेतन गुलवानी ने किया एवं वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री विजय कुमार गुप्ता ने सभी उपस्थित सांसदों का आभार व्यक्त किया।

उत्तर रेलवे : आगरा मंडल परिक्षेत्र के सांसदों के साथ महाप्रबंधक की बैठक आयोजित

दिनांक 26 नवम्बर, 2021 को उत्तर मध्य रेलवे आगरा मंडल परिक्षेत्र के सांसदों की महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे के साथ बैठक आगरा में आयोजित की गई। बैठक में सांसद, दौसा श्रीमती जसकौर मीना एवं सांसद, आगरा प्रो. श्री एस.पी. सिंह बघेलजी के प्रतिनिधि श्री दिगम्बर सिंह धाकरे, सांसद, मथुरा श्रीमती हेमा मालिनी के प्रतिनिधि श्री जनार्दन शर्मा, सांसद, इटावा प्रो. (डॉ.) श्री राम शंकर कठेरिया के प्रतिनिधि श्री सुरेन्द्र सिंह, सांसद, अलवर मंहत श्री बालक नाथ योगी के प्रतिनिधि श्री सुखवंत सिंह, सांसद, भरतपुर श्रीमती रंजीता कोली के प्रतिनिधि श्री संतोष कुमार उपस्थित थे।

बैठक में सांसद दौसा श्रीमती जसकौर मीना को प्रतिनिधियों द्वारा बैठक का अध्यक्ष चुना गया। बैठक में सभी उपस्थित सांसद, प्रतिनिधियों एवं अधिकारीगणों द्वारा संविधान दिवस के अवसर पर संसद भवन दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम के माध्यम से संविधान दिवस की प्रस्तावना का वाचन किया गया।

उसके बाद महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार ने सांसदों को आगरा मंडल की उपलब्धियों एवं विकास कार्यों से अवगत कराया।



इसके बाद बैठक में उपस्थित सांसद, दौसा श्रीमती जसकौर मीना द्वारा अपने क्षेत्र से सम्बंधित मांगें भी रखीं। साथ ही, उन्होंने कोविड के दौरान उत्तर मध्य रेलवे द्वारा कोविड-19 के दौरान किए गए सराहनीय कार्यों हेतु बधाई दी। इसी क्रम में सांसदों के प्रतिनिधियों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों से सम्बंधित मांगो एवं सुझावों पर उपस्थित अधिकारियों के साथ चर्चा की।

31वें एनईसीए कार्यक्रम में
उत्तर मध्य रेलवे और पश्चिम रेलवे पुरस्कृत

उत्तर मध्य रेलवे को 31वें राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार 2021 में परिवहन श्रेणी के तहत द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे श्री प्रमोद कुमार ने प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर श्री सतीश कोठारी के साथ विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में यह पुरस्कार प्राप्त किया। बिजली और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री आर.के. सिंह ने पुरस्कार विजेताओं को सम्मानित किया। इस अवसर पर विद्युत राज्य मंत्री श्री कृष्ण पाल भी उपस्थित थे। ज्ञात हो कि 07 से 14 दिसम्बर तक 'राष्ट्रीय उर्जा संरक्षण सप्ताह' का उत्तर मध्य रेलवे में आयोजन किया गया और इस दौरान ऊर्जा संरक्षण के लिए जनता में जागरूकता प्रसारित करने के लिए प्रदर्शनी, नुक्कड़ नाटक, प्रश्नोत्तरी जैसी विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं। इस वर्ष एनईसीए पुरस्कार 'आजादी का अमृत महोत्सव' की थीम पर आयोजित किए जा गए थे।

एक अन्य कार्यक्रम में लखनऊ स्थित यूपीनेडा के प्रशिक्षण केन्द्र में 14 दिसम्बर को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'ऊर्जा संरक्षण



राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार 2021 में बिजली और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री आर.के. सिंह से पुरस्कार प्राप्त करते हुए महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे श्री प्रमोद कुमार ने प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर श्री सतीश कोठारी

दिवस' मनाया गया। इस दौरान उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज मंण्डल को तीन श्रेणियों में - महाप्रबंधक कार्यालय उत्तर मध्य रेलवे ने सरकारी भवन श्रेणी में प्रथम पुरस्कार, इटावा रेलवे स्टेशन ने वाणिज्यिक भवन - 20 से 100 किलोवाट श्रेणी में द्वितीय और प्रयागराज रेलवे स्टेशन ने वाणिज्यिक भवन - 100 किलोवाट से अधिक श्रेणी में तृतीय पुरस्कार हासिल किया है। उत्तर मध्य रेलवे की ओर से ये पुरस्कार वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर / सामान्य, प्रयागराज मंडल ने प्राप्त किया। ज्ञात हो कि प्रथम पुरस्कार प्राप्त महाप्रबंधक कार्यालय का कुल संयोजित भार 976 किलोवाट है। इस कार्यालय द्वारा विगत वर्ष की तुलना में वर्ष-2020-21 में लगभग 1.1 लाख के डब्लू एच ऊर्जा की बचत की गई और इससे 09 लाख रुपये की बचत हुई।

पश्चिम रेलवे को मिला
राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार

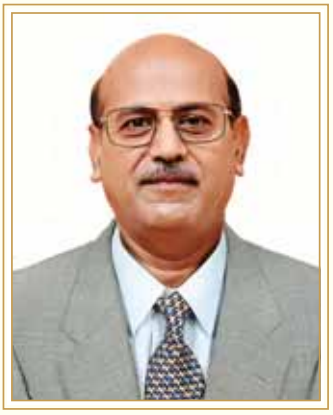
इस वर्ष पुनः पश्चिम रेलवे ने भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय के ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी (BEE) के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार 2021 में अपनी चमक बिखेरी और दो श्रेणियों में प्रशंसनीय पुरस्कार प्राप्त किये। राजकोट स्थित पश्चिम रेलवे के मंडल रेलवे अस्पताल ने कम वाट क्षमता वाली ऊर्जा कुशल एलइडी फिटिंग द्वारा पुरानी लाइट फिटिंग को बदलने, स्टार रेटेड इन्वर्टर एसी द्वारा पारंपरिक विंडो एसी को बदलने, बीएलडीसी ऊर्जा कुशल पंखों द्वारा पुराने परम्परागत छत पंखों को बदलने, परम्परागत फ्रीजरों के स्थान पर 5 स्टार रेटिंग उपकरण लगाने, सौर ऊर्जा और सौर वॉटर हीटर का उपयोग आदि जैसे अपने विभिन्न ऊर्जा संरक्षण उपायों के लिए भवन श्रेणी (अस्पताल सेक्टर) में द्वितीय पुरस्कार जीता।



राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार 2021 में बिजली और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री आर.के. सिंह से पुरस्कार प्राप्त करते हुए पश्चिम रेलवे के उच्च अधिकारीगण

श्री विनय कुमार त्रिपाठी

ने अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का पदभार संभाला



श्री विनय कुमार त्रिपाठी ने रेलवे बोर्ड (रेल मंत्रालय) के नये अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) का 01 जनवरी, 2022 से पदभार संभाल लिया है। मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने श्री त्रिपाठी की इस पद के लिए नियुक्ति को मंजूरी दी है। इससे पूर्व आप पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। तत्कालीन अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सुनीत शर्मा 31 दिसम्बर, 2021 को सेवानिवृत्त हुए हैं। उनके स्थान पर श्री त्रिपाठी ने पदभार संभाला है।

रूड़की से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में बी.टेक. की उपाधि प्राप्त करने के बाद श्री त्रिपाठी 1983 बैच के भारतीय रेल विद्युत इंजीनियरिंग सेवा (आई.आर.एस.ई.ई.) के अधिकारी के रूप में रेल सेवा में आए। आपकी पहली नियुक्ति उत्तर रेलवे में सहायक विद्युत इंजीनियर के पद पर हुई। तत्पश्चात् आपने उत्तर रेलवे, उत्तर मध्य रेलवे, मध्य रेल एवं पश्चिम रेलवे में विद्युत इंजीनियरिंग विभाग के अनेक महत्त्वपूर्ण पदों के उत्तरदायित्व का निर्वहन बखूबी किया। आपने मंडल रेल प्रबन्धक, उत्तर मध्य रेलवे, इलाहाबाद, मुख्य विद्युत लोकोमोटिव इंजीनियर एवं अपर महाप्रबन्धक, पश्चिम रेलवे तथा अपर सदस्य, संकर्षण जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर कुशलतापूर्वक कार्य किया।

श्री त्रिपाठी ने स्विट्जरलैंड, इटली एवं अमेरिका में उच्च प्रबन्धन में प्रशिक्षण प्राप्त किया है तथा अद्यतन तकनीक के 3 फेज वाले विद्युत लोकोमोटिव के विकास एवं इसके स्वदेशीकरण में सराहनीय योगदान दिया है। ये इंजन आज भारतीय रेल के अग्रवाहक हैं।

श्री त्रिपाठी को रेल प्रबन्धन एवं प्रशासन का गहन अनुभव प्राप्त है। आप रेल कर्मचारियों एवं अधिकारियों में समान रूप से लोकप्रिय हैं।

चिरेका उत्पादित 300वां रेलइंजन
राष्ट्र को समर्पित





चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना (चिरेका) के वीआईपी लोको साइडिंग से 15 दिसंबर को चिरेका उत्पादित आजादी का अमृत महोत्सव को समर्पित 300वें रेलइंजन डब्लूएजी-9एचसी (33150) के माध्यम से श्री सुनीत शर्मा, तत्कालीन अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक, चिरेका उपस्थित थे। इस अवसर पर रेल लिंक द्वारा श्री संजीव मित्तल, एमआई एंड एमटीआरएस, रेलवे बोर्ड के अधिकारी और सदस्यगण सहित चिरेका के सभी कर्मी उपस्थित थे। श्री शर्मा ने अपने संबोधन में इस उपलब्धि के लिए चिरेका के उत्साही टीम के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि टीम चिरेका ने



श्री कश्यप के नेतृत्व में बहुत ही कम दिनों में आपूर्ति की बाधाओं और अन्य चुनौतियों का सामना करते हुए यह उपलब्धि हासिल की है, वो भी ऐसे समय में जब देश और भारतीय रेल मुश्किल और चुनौती के दौर से गुजर रही है। यह सफलता टीम के संकल्प और समर्पित परिश्रम का परिणाम है। चिरेका रेलइंजन उत्पादन के क्षेत्र में हमेशा से ही लीडर रहा है। आधुनिक तकनीक के इंजन का निर्माण भी चिरेका में किया जा रहा है।

श्री शर्मा ने उम्मीद जताया कि चिरेका वर्तमान वित्तीय वर्ष 2021-22 में विगत वर्षों के रिकार्ड को पीछे छोडते हुए अपने निर्धारित लक्ष्य को पार करने में सक्षम होगा।

केवड़िया रेलवे स्टेशन पर स्मारिका दुकान
सहित आर्ट गैलरी विकसित की गई

स्टैचयू ऑफ यूनिटी' के निकट एक और पर्यटक आकर्षण विकसित करने के क्रम में, पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल ने सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) पहल के तहत केवड़िया रेलवे स्टेशन पर स्मारिका दुकान सहित एक आर्ट गैलरी विकसित करने के लिए एक अनुबंध किया है। यह भारतीय रेल में अपनी तरह का पहला अनुबंध है।

पीपीपी मॉडल के लाभों के विवरण सहित आर्ट गैलरी गुजरात तथा भारत के कला एवं शिल्प के विभिन्न रूपों को प्रदर्शित करेगी और रेलवे को 24.7 लाख रुपए अर्जित करने और 2.83 करोड़ रुपए के संभावित राजस्व के साथ निजी पक्षों द्वारा विकसित और संचालित की जाएगी। यह अवधारणा न केवल केवड़िया आने वाले लोगों के अनुभव को समृद्ध करेगी, बल्कि सामाजिक मोर्चे पर, यह अनूठी अवधारणा नर्मदा जिले के स्थानीय जनजाति के लोगों को उनकी जनजातीय कला को



बढ़ावा देने का अवसर देकर रोजगार भी प्रदान करेगी।

आरडीएसओ द्वारा भारतीय रेल के संरक्षा श्रेणी के पदों हेतु
कम्प्यूटरीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विकास

स्टेशन मास्टर, लोको पायलट, मोटरमैन और स्टेशन कंट्रोलर, मेट्रो रेलवे में ट्रेन ऑपरेटर और ग्राहक संबंध सहायक जैसे भारतीय रेल सुरक्षा श्रेणी के कर्मचारी, जो सीधे ट्रेन संचालन से जुड़े हैं, सुरक्षित ट्रेन संचालन सुनिश्चित करने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से फिट होने चाहिए। निर्णय से उत्पन्न होने वाली त्रुटियों की संभावना को समाप्त करने के लिए उचित मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य आवश्यक है, जो जान और माल के नुकसान सहित गंभीर परिणाम दे सकता है। उचित मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए इन रेल कर्मियों को समय-समय पर मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से गुजरना पड़ता है। आरडीएसओ का मनो-तकनीकी निदेशालय इन सुरक्षा श्रेणी के कर्मचारियों के लिए कई वर्षों से मनोवैज्ञानिक परीक्षण कर रहा है। पहले यह परीक्षण मैनुअल इंटरफेस के साथ पेपर पेंसिल मोड द्वारा आयोजित किया जाता था, जिसे अब कम्प्यूटरीकृत परीक्षणों में बदल दिया गया है। परीक्षण प्रक्रियाओं से त्रुटियों और व्यक्तिगत पूर्वग्रहों और पक्षपात को खत्म करने के लिए यह आवश्यक था। रेलवे बोर्ड द्वारा सभी मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को कम्प्यूटरीकृत करने के सुझाव के बाद वर्ष 2006 में, द्रुतगति गाड़ियों के चालकों हेतु कम्प्यूटरीकृत परीक्षण का एक पूर्ण मॉड्यूल विकसित किया गया था। 110 किलोमीटर से अधिक गति से चलने वाली ट्रेनों के सभी चालक दल को हाई स्पीड ट्रेनों के सुरक्षित संचालन के लिए इस मॉड्यूल के माध्यम से मनोवैज्ञानिक परीक्षण में उपस्थित होना और पास करना आवश्यक है।

कंप्यूटरीकृत परीक्षण के उपयोग के दौरान यह महसूस किया गया कि वर्तमान परिपेक्ष्य में दिन-प्रतिदिन हो रहे सॉफ्टवेयर के विकास एवं नए मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की जरुरत के कारण एक नए सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म पर और परीक्षणों का विकास किया गया, जिससे कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके। मनो तकनीकी निदेशालय ने परीक्षण के दौरान होने वाली कमी और बाधाओं का विश्लेषण किया तथा पूर्व में हुए अनुभव के आधार पर एक नया संवर्धित कंप्यूटरीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण मॉड्यूल का विकास किया। पूर्व में 5 प्रकार के कंप्यूटरीकृत परीक्षण किए जाते थे, जिनकी संख्या 2021 के नए मनोवैज्ञानिक परीक्षण मॉड्यूल में 11 हो गई है।



कार्यकारी निदेशक यातायात/मनो तकनीकी निदेशालय के कुशल नेतृत्व में मनोवैज्ञानिकों की एक समर्पित टीम विगत कुछ वर्षों से मनोवैज्ञानिक सॉफ्टवेयर के विकास में शामिल थी। इसके विकास में आने वाली बाधाओं को इस टीम ने न केवल सफलतापूर्वक दूर किया बल्कि अपने अनुभव के आधार पर इसे और अधिक उन्नत बनाया, जिससे कि इस सॉफ्टवेयर को विभिन्न विंडो प्लेटफॉर्म पर सफलतापूर्वक इंस्टाल कर के चलाया गया।

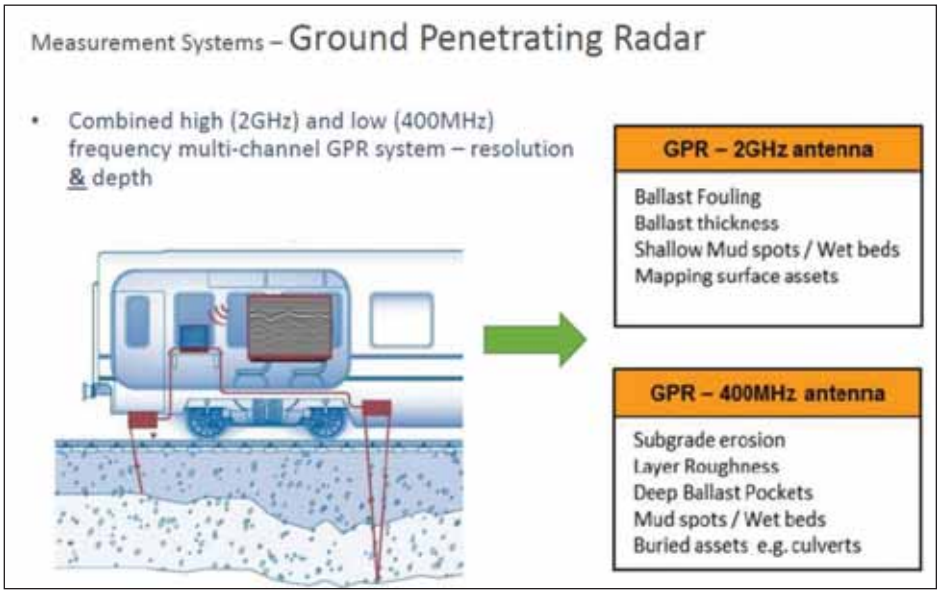
इस कंप्यूटरीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण मॉड्यूल में 11 नए प्रकार के परीक्षणों का विकास किया गया है जोकि आकृति प्रत्यक्षीकरण परीक्षण, अवधारणात्मक गति, स्मरणशक्ति, चित्र स्मृति, एकाग्रता परीक्षण, गति प्रत्यक्षीकरण परीक्षण-1, गति प्रत्यक्षीकरण परीक्षण-2, दृष्टि बोध, सतर्कता परीक्षण, डिस्ट्रिब्यूशन ऑफ अटेंशन टेस्ट एवं प्रतिक्रियाकाल परीक्षण। 1 अक्टूबर, 2021 से उन्नत कम्प्यूटरीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण मॉड्यूल को कार्यात्मक बनाया गया है।

परीक्षण मॉड्यूल को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि सॉफ्टवेयर इंजीनियर की सहायता के बिना सभी 11 परीक्षणों में समय-समय पर इसके मापदंडों, विषय वस्तु और समय सीमा को बदला जा सकता है ताकि इस परीक्षण मॉड्यूल का प्रभाव कई वर्षों के बाद भी बना रह सके। विभिन्न मानकों पर विभिन्न सुरक्षा ग्रेड पदों की मनोवैज्ञानिक परीक्षा आयोजित की जा सकती है।

इन सभी परीक्षणों का प्रशासन और इसका परिणाम बिना किसी मैनुअल इंटरफेस के पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत है और ये सभी परीक्षण अलग-अलग मनोवैज्ञानिक आयामों के विभिन्न मापदंडों पर व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से आयोजित करने में सक्षम हैं। परीक्षण के समाप्त होने के उपरांत अभ्यर्थियों का परिणाम इनके मूल प्राप्तांक या फिर टी स्कोर पर तुरंत प्राप्त किया जा सकता है। परीक्षाफल की संगणना पूर्णतया स्वचालित है।

निदेशालय द्वारा सभी परीक्षणों के मापदंडों को निर्धारित करने के लिए डेटा एकत्र किया जा रहा है ताकि आने वाले समय में 110 किमी प्रति घंटे या उससे अधिक की गति से चलने वाली ट्रेनों के सभी चालक दल और अन्य सुरक्षा श्रेणी के कर्मचारियों पर भी ये परीक्षण किए जा सकें। यह उम्मीद की जाती है कि ये परीक्षण मैनुअल त्रुटियों को समाप्त कर देंगे और यात्री सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे।

आरडीएसओ ने ट्रैक और फ़ॉर्मेशन के गिट्टी की स्थिति की निगरानी के लिए जीपीआर तकनीक को अपनाया



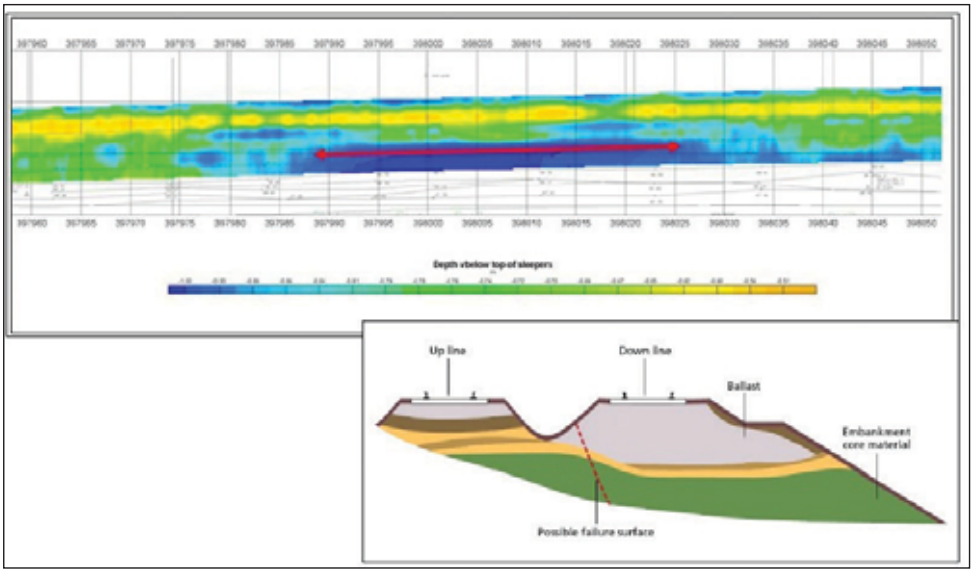
ट्रैक गिट्टी ट्रैक बेड बनाती है जिस पर स्लीपर बिछाए जाते हैं। इसको स्लीपर के बीच, नीचे और आसपास पैक किया जाता है। इसका उपयोग रेलरोड से भार वहन करने, पानी की निकासी की सुविधा के लिए और वनस्पतियों को नीचे रखने के लिए भी किया जाता है जो ट्रैक संरचना में हस्तक्षेप कर सकते हैं। जैसे ही ट्रेनें इस पर चलती हैं, ट्रैक की गिट्टी भी ट्रैक को अपने स्थान पर जोड़े रखती है।

इस प्रकार ट्रैक और फॉर्मेशन में गिट्टी की उपस्थिति उच्च गति और भारी धुरा भार वाली ट्रेनों के संचालन में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान में गिट्टी की वास्तविक स्थिति के आकलन के बिना 10 साल की सेवा या 500 जीएमटी जो भी पहले हो, के बाद इस गिट्टी को बदल दिया जाता है और इसलिए यह विधि अवैज्ञानिक है।

आरडीएसओ ने गिट्टी की स्थिति के सर्वेक्षण के लिए ग्राउंड पेनेट्रेशन रडार की उन्नत तकनीक अपनाने का फैसला किया है। ग्राउंड पेनेट्रेशन रडार एक गैर-विनाशकारी विधि है जो उच्च और निम्न आवृत्ति के विद्युत चुम्बकीय विकिरणों के संयोजन का उपयोग करती है और उपसतह से परावर्तित संकेतों का पता लगाती है। इन परावर्तित संकेतों का विश्लेषण सॉफ्टवेयर और विशेषज्ञों द्वारा गिट्टी की स्थिति की निगरानी और गठन की उपसतह स्थितियों का पता लगाने के लिए किया जाता है।

ग्राउंड पेनेट्रेशन रडार तकनीक में डेटा संग्रह का मूल्यांकन, डेटा व्याख्या के तरीके और उपलब्ध ट्रैक स्थिति की जानकारी के लिए ग्राउंड पेनेट्रेशन रडार डेटा की तुलना शामिल है। इस सर्वेक्षण के परिणाम ट्रैक गिट्टी की गहरी जांच के लिए एक वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ मानदंड में परिणत होंगे। ग्राउंड पेनेट्रेशन रडार तकनीक उन स्थानों के लिए उपसतह स्थितियों का विस्तृत विश्लेषण भी देगी जहां फॉर्मेशन संबंधी समस्याएं मौजूद हैं, जिसके आधार पर आवश्यक फॉर्मेशन उपचार रणनीतियों को अंतिम रूप दिया जा सकता है।

आरडीएसओ ने इसके लिए विनिर्देशों को अंतिम रूप दे दिया है और 48,450 किमी ट्रैक और लगभग 2,400 किमी फॉर्मेशन को कवर करने के लिए एक निविदा आमंत्रित की है, जिसे फॉर्मेशन की समस्या के लिए जाना जाता है, इसके लिए निविदा को शीघ्र ही अंतिम रूप दिए जाने की संभावना है और गिट्टी और फॉर्मेशन का वास्तविक सर्वेक्षण शीघ्र शुरू होने की उम्मीद है। जीपीआर के इस्तेमाल से काफी समय और पैसे की बचत होगी।



रीवा-सीधी नई रेल लाइन परियोजना में मध्यप्रदेश की सबसे लम्बी 3,338 मीटर लम्बी रेलवे सुरंग निर्माणाधीन

भारतीय रेल में नई रेल लाइन परियोजनाओं के निर्माण कार्य को कोविड की चुनौतियों के बावजूद तीव्र गति से किया जा रहा है। इसी कड़ी में ललितपुर-सिंगरौली नई रेल परियोजना के निर्माण कार्य बहुत तेजी से चल रहा है। गौरतलब है कि रीवा-सीधी नई रेल लाइन परियोजना का निर्माण कार्य पश्चिम मध्य रेलवे पर तीव्र गति से चल रहा है। रीवा-सीधी नई रेल लाइन निर्माण कार्य में रीवा और सीधी जिले की सीमा पर छुहिया घाटी को पार करने के लिए सुरंग का निर्माण किया जा रहा है। रीवा-सीधी के बीच नई रेल लाइन परियोजना के अंतर्गत बनने वाले गोविंदगढ़-बगवार स्टेशनों के बीच 3,338 मीटर लंबाई की ब्रॉडगेज सिंगल लाइन अंडरग्राउंड रेलवे टनल नंबर 01 का निर्माण किया जा रहा है। यह मध्यप्रदेश की सबसे लंबी रेलवे सुरंग है। इस निर्माण कार्य में अब तक निम्न बिंदुओं पर कार्य किया गया है-

- निर्माण कार्य शुरू करने से पहले इसकी पूरी डिजाइन सरंचना पर गहन अध्ययन किया गया तथा डिजाइन के अनुसार कार्य को अंजाम देने हेतु और तकनीकी मार्गदर्शन के लिए विख्यात संस्थान मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान भोपाल को नियुक्त किया गया।
- जिला प्रशासन अनुमति के बाद नियंत्रित ब्लास्टिंग का कार्य किया गया, जिससे प्राकृतिक संरचना की प्रभुता कायम रहे।
- इस निर्माण कार्य में उत्खनन का कार्य भी अनुमोदित डिजाइन के अनुसार ही पूर्ण किया गया। सुरंग का निर्माण कार्य गोविंदगढ़ (रीवा छोर) और बगवार (सीधी छोर) दोनों छोर से किया गया है। इसमें दोनों छोर से उच्च तकनीक की इंजीनियरिंग मशीन, जिससे ड्रिलिंग और टनलिंग का कार्य एक साथ होता है, उसका उपयोग कर सुरंग की खुदाई शुरू की गई है।
- सुरंग में हॉरिजेंटल रॉक जोड़ों की कठिन चुनौतियों को भी बेहतर तरीके से समाहित कर निर्माण कार्य किया जा रहा है। सुरंग को स्थिर मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से अतिरिक्त रॉक बोल्ट लगाए जा रहे हैं।
- इस निर्माण कार्य में सभी प्रकार के इंजीनिरिंग मापदंडों एवं भौगौलिक सरंचना के अनुसार प्रत्येक गतिविधियों पर अतिरिक्त ध्यान दिया जा रहा है। रेलवे के विकास में नई रेल लाइन परियोजनाओं के निर्माण कार्य में पश्चिम मध्य रेलवे हमेशा अग्रणी रही है। पमरे द्वारा रीवा-सीधी नई रेल लाइन परियोजना को तीव्र गति से पूर्ण किया जा रहा है।



दक्षिण रेलवे

चेन्नई-मैसूर-चेन्नई शताब्दी एक्सप्रेस

को एकीकृत प्रबंधन प्रणाली प्रमाणित ट्रेन का दर्जा





चेन्नई-मैसूर-चेन्नई शताब्दी एक्सप्रेस दक्षिण रेलवे की पहली एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस) प्रमाणित ट्रेन, भारतीय रेल की पहली शताब्दी और दूसरी मेल / एक्सप्रेस ट्रेन बन गई है। ट्रेन संख्या 12007/12008, डॉ. एमजीआर चेन्नई सेंट्रल-मैसूर जंक्शन-डॉ. एमजीआर चेन्नई सेंट्रल शताब्दी एक्सप्रेस दक्षिण रेलवे की पहली ऐसी ट्रेन सेवा है, जिसने आईएसओ 9001: 2015, आईएसओ 14001:2015 और आईएसओ 45001: 2018 के साथ आईएमएस प्रमाण-पत्र प्राप्त किया है। ट्रेन का प्रारंभिक रख-रखाव चेन्नई मंडल के बेसिन ब्रिज कोचिंग डिपो द्वारा किया जा रहा है। प्रमाणन एजेंसी ने व्यापक लेखा-परीक्षा और रेलवे द्वारा सभी निर्धारित मानदंडों के पालन के विधिवत सत्यापन के बाद यह प्रमाण-पत्र प्रदान किया है। चेन्नई-मैसूर-चेन्नई के बीच शताब्दी सेवा को कोविड पूर्व समय में ट्रेन संख्या 12007/12008 के रूप में चलाया गया था और वर्तमान में विशेष सेवा के रूप में ट्रेन संख्या 06081/ 06082 (बुधवार को छोड़कर) के साथ चलाया जा रहा है।

दक्षिण रेलवे के महाप्रबंधक श्री जॉन थॉमस ने और बेसिन ब्रिज डिपो के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की टीम को बधाई दी, जिनके ठोस प्रयासों ने प्रीमियर ट्रेन के लिए आईएमएस प्रमाण-पत्र प्राप्त किया। महाप्रबंधक ने कोच डिपो अधिकारी/बेसिन ब्रिज को आईएमएस प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने उल्लेख किया कि यह सेवा यात्रियों के लिए सुरक्षित और आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने के लिए अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है।

चेन्नई-मैसूर-चेन्नई शताब्दी एक्सप्रेस द्वारा हासिल महत्त्वपूर्ण चरण

- चेन्नई-मैसूर-चेन्नई शताब्दी एक्सप्रेस ट्रेन 11 मई, 1994 को शुरू की गई थी।
- दक्षिण रेलवे में यह पहली आईएसओ 9001:2001 प्रमाण-पत्र प्राप्त ट्रेन है (19 जून, 2007 में प्राप्त)
- ट्रेन में 1 जुलाई, 2009 को अत्याधुनिक एलएचबी डिब्बे शामिल किए गए
- एचओजी पर चलने से प्रदूषण कम होता है और संसाधनों को खत्म होने (डीजल) से रोका जा सकता है।
- यात्री सुविधाओं को काम करने की स्थिति में 100% बनाए रखना, 100% एचओजी और 100% बायो डाइजेस्टर शौचालय संचालन और काम में आने लायक 100% उप-पेंट्री उपकरण।
- गुणवत्तापूर्ण वातानुकूलन, प्रकाश व्यवस्था और अन्य विद्युत सुविधाएं।

ट्रेन की मुख्य विशेषताएं

- ट्रेन में हाउस कीपिंग की सुविधा (5-चरण की सफाई)
- एलइडी लाइटों और बिजली की फिटिंग के माध्यम से ऊर्जा संरक्षण
- ब्रेल साइनेज सीट संकेत संख्या
- प्री-लोडेड वाई-फाई इंफोटेनमेंट प्रणाली
- एक्जीक्यूटिव कोच में कूपे हेतु स्वचालित स्लाइडिंग डोर क्लोजर
- कोच में परछाईं के साथ संकेतक और शौचालय में कब्जे का संकेतक
- कोच के अंदरूनी हिस्सों के लिए एस्थेटिक विनाइल रैपिंग
  - यात्री कूपों और शौचालयों के लिए स्वचालित एयर फ्रेशनर
  - उच्च गुणवत्ता वाले साज सामान के साथ आरामदायक सीटें
  - पावर कारों के सभी कोचों में अग्नि शमन प्रणाली के साथ अग्निशमन यंत्र प्रदान किए गए हैं
  - यात्रियों के लाभ के लिए सभी डिब्बों में आपातकालीन संपर्क नंबरों के साथ एकीकृत सूचना स्टिकर लगाए गए हैं।

पश्चिम मध्य रेल में

कई स्थायी गति प्रतिबंधों को हटाया गया

पश्चिम मध्य रेल में ट्रेन संचालन की गतिशीलता एवं आधारभूत संरचनाओं का विकास तेज गति से किया जा रहा है। पश्चिम मध्य रेल पर ट्रेन परिचालन की गति बढ़ाने के लिए स्थायी गति प्रतिबंध (पीएसआर) को हटाना एक महत्त्वपूर्ण कार्य रहा है। गौरतलब है कि इस कार्य में पश्चिम मध्य रेल द्वारा असाधारण प्रगति हासिल की गई है। रेलवे बोर्ड ने वर्ष 2021-22 में 09 पीएसआर में रिलेक्सेशन/रिमूवल देने का लक्ष्य निर्धारित किया था, जिसे पश्चिम मध्य रेल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत के साथ योजनाबद्ध तरीके एवं उच्च निगरानी के साथ समय से पहले 14 स्थायी गति प्रतिबंध (पीएसआर) हटाकर लक्ष्य से ज्यादा हासिल किया।



- बीना मालखेड़ी-अगासोद रेलखण्ड में 50 किमी प्रति घण्टे का गति प्रतिबंध हटा दिया गया और 75 किमी प्रति घण्टे की अनुमति दी गई।
- स्लीमनाबाद-नीवार रेलखण्ड में 30 किमी प्रति घण्टे का गति प्रतिबंध हटा दिया गया और 110 किमी प्रति घण्टे की अनुमति दी गई।
- अशोक नगर यार्ड में 30 किमी प्रति घण्टे का गति प्रतिबंध हटा दिया गया और 110 किमी प्रति घण्टे की अनुमति दी गई।
- पीलीघाट यार्ड में 30 किमी प्रति घण्टे का गति प्रतिबंध हटा दिया गया और 110 किमी प्रति घण्टे की अनुमति दी गई।
- कोटा-मथुरा में गंगापुरसिटी-छोटी ओडई रेलखण्ड में 90 किमी प्रति घण्टे के 40 साल पुराने गति प्रतिबंध को हटाकर 130 किमी प्रति घण्टे किया गया।
- कोटा-मथुरा में छोटी ओडई-गंगापुरसिटी रेलखण्ड में 90 किमी प्रति घण्टे के 40 साल पुराने गति प्रतिबंध को हटाकर 130 किमी प्रति घण्टे किया गया।
- बुदनी यार्ड में 110 किमी प्रति घण्टे के गति प्रतिबंध को हटा कर 130 किमी प्रति घण्टे की अनुमति दी गई।
- मिसरोद-रानी कमलापति रेलखण्ड में 110 किमी प्रति घण्टे के गति प्रतिबंध को हटा दिया गया और 130 किमी प्रति घण्टे की अनुमति दी गई।
- इटाया कलां-ओबेदुल्लागंज रेलखण्ड में 120 किमी प्रति घण्टे के गति प्रतिबंध हटा को दिया गया और 130 किमी प्रति घण्टे की अनुमति दी गई।
- औबेदुल्लागंज-बरखेड़ा रेलखण्ड में 70 किमी प्रति घण्टे का गति प्रतिबंध हटा दिया गया और 130 किमी प्रति घण्टे की अनुमति दी गई।
- भोपाल-रानी कमलापति रेलखण्ड में 100 किमी प्रति घण्टे का गति प्रतिबंध हटा दिया गया और 130 किमी प्रति घण्टे की अनुमति दी गई।
- बरखेड़ा-औबेदुल्लागंज रेलखण्ड में 110 किमी प्रति घण्टे का गति प्रतिबंध हटा दिया गया और 130 किमी प्रति घण्टे की अनुमति दी गई।
- औबेदुल्लागंज-मण्डीदीप रेलखण्ड के बीच में 110 केएमपीएच का स्थायी गति प्रतिबंध (पीएसआर) हटा कर 120 केएमपीएच की गति की अनुमति दी गई।
- सुमेर-सोराई रेलखण्ड के बीच में 110 केएमपीएच का स्थायी गति प्रतिबंध (पीएसआर) हटा कर 120 केएमपीएच की गति की अनुमति दी गई।
- स्थायी गति प्रतिबंध (पीअएसआर) के हटाने से रेलवे में कई फायदे हैं।
- ट्रेनों की गति में भी वृद्धि होगी।
- यात्रा के लिए लगने वाले समय में भी कमी आएगी।
- ज्यादा/अधिकतम ट्रेनों का संचालन बढ़ेगा।
- मेंटेनेंस के लिए ब्लॉक की उपलब्धता बढ़ेगी।

पश्चिम मध्य रेल द्वारा तीनों मण्डलों में स्थायी गति प्रतिबंध पर कार्य करके गाड़ियों के संचालन में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। पमरे महाप्रबंधक श्री सुधीर कुमार गुप्ता के मार्गदर्शन में यात्री यातायात और माल यातायात को लाभान्वित करने वाली यात्री गाड़ियों एवं मालगाड़ियों की गति बढ़ाने के लिए जोनल रेलवे में समग्र रूप से गतिशीलता बढ़ाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहा है।

पश्चिम मध्य रेलवे की धरोहर का
स्वर्णिम इतिहास

स्वतंत्रता से पहले भारत में ईस्ट इंडिया रेलवे (EIR) और ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे (GIPR) द्वारा रेलगाड़ी चलाने और रेल लाइन बनाने में अहम भूमिका निभाई गई थी। इन दोनों कंपनियों द्वारा 150 वर्ष पहले सन् 1870 में मुंबई और कलकत्ता के बीच पहली बार रेल संपर्क के लिए जबलपुर में जोड़ा गया था।



गौरतलब है कि जबलपुर से इटारसी रेलखण्ड पर नर्मदा नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी तवा पड़ती है। इस रेल लाइन पर सबसे पुराना तवा ब्रिज एवं बागरातवा सुरंग का कार्य ईस्ट इंडियन रेलवे और ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे के सिविल इंजीनियर रॉबर्ट मेटलैंड ब्रेरेटन द्वारा 19 महीने में 08 मार्च 1870 को पूरा किया गया था। इस ऐतिहासिक पुराने पुल को 150 वर्ष पूर्ण हो गए हैं।

इस चुनौतीपूर्ण कार्य को नर्मदा घाटी की मिट्टी एवं तवा नदी के रेतीले तल को पार करते हुए संपन्न किया गया। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य, सुरंग के बाई ओर लगभग 300 मीटर का कर्व (वक्र) था। तवा ब्रिज और बागरातवा सुरंग आज भी सोनतलाई और बागरातवा स्टेशनों के बीच ट्रैक के 8 किमी के हिस्से पर हैं। यह पमरे के महत्त्वपूर्ण ब्रिजों में से एक अहम धरोहर के रूप में है, जिसे सन् 1927 में रीगर्डर भी किया गया। यह पुल तवा नदी पर तवा बांध से 07 किमी की दूरी पर स्थित है। इस पुल में 132 फिट के 02 स्पैन और 202 फिट के 04 स्पैन के नीचे वेब गर्डर है। इसके साथ 05 पियर और 02 एबटमेंट हैं, जो तत्कालीन समय की एशलर महीन चिनाई से बनी है। पुल की ऊँचाई 22 मीटर है। इस खण्ड के दोहरीकरण का कार्य भारतीय रेल द्वारा फरवरी 2020 में कमीशन किया गया। वर्तमान समय में पश्चिम मध्य रेलवे द्वारा तवा नदी पर एक अतिरिक्त नया तवा ब्रिज का निर्माण किया गया है। तवा नदी पर अप और डाउन रेल लाइन बनाकर रेलखण्ड की क्षमता में वृद्धि की गई है। पश्चिम मध्य रेलवे द्वारा इस पुराने पुल के रखरखाव में विशेष ध्यान दिया जाता है। प्राचीन निर्माण कार्य शैली आज की धरोहर है और हमको गौरवान्वित करती है।



रेल डिब्बा कारख़ाना में

नैरो गेज विस्टाडोम कोच के निर्माण हेतु शेल असेम्ब्ली जिग तैयार



रेल कोच फैक्ट्री (आरसीएफ), कपूरथला ने कालका-शिमला रेलवे के लिए 30 नैरो गेज विस्टाडोम डिब्बों की शेल के निर्माण के लिए शेल असेंबली जिग का निर्माण तथा कमीशन किया है। इसका उद्घाटन 28 अक्टूबर, 2021 को आरसीएफ के महाप्रबंधक श्री अशेष अग्रवाल की उपस्थिति में किया गया।

इसका निर्माण आरसीएफ की टूल रूम शॉप द्वारा सीनियर सेक्शन इंजीनियर अजय कुमार सिंह के नेतृत्व में किया गया है।

यह गौरतलब है कि रेल कोच फैक्ट्री कालका-शिमला रेलवे के लिए 30 नैरो गेज विस्टाडोम डिब्बों का निर्माण कर रही है। आरसीएफ ने एलएचबी तकनीक पर आधारित नए एन जी कोचों के शेल, फर्निशिंग और बोगी लिए डिजाइन तैयार किए हैं। नए शेल के अलावा, बोगियों को अपग्रेड करने और ब्रेक सिस्टम में सुधार किए गए हैं, जिससे गाड़ी की मौजूदा 25/35 किमी प्रति घंटे से 40/55 किमी प्रति घंटे की गति क्षमता में उल्लेखनीय सुधार लाने में मदद मिल सके। ये कोच सीसीटीवी और फायर अलार्म आदि जैसी आधुनिक सुरक्षा सुविधाओं से भी लैस होंगे। उपरोक्त विशेषताओं के इलावा, इन डिब्बों का मुख्य आकर्षण बड़ी और चौड़ी खिड़कियाँ हैं, जिन्हें जरूरत के अनुसार खोला भी जा सकता है, जिससे गुजरते परिदृश्य का मनोरम दृश्य यात्रियों को प्राप्त होगा। प्रत्येक कोच में यात्री ग्लास छत के माध्यम से मन्त्र मुग्ध करने वाले पहाड़ी दृश्यों का आनंद उठा सकेंगे। इसके अतिरिक्त इन डिब्बों में यात्री अपनी आरामदायक सीटों को ट्रेन की दिशा के अनुसार भी 180 डिग्री घुमा सकेंगे। कोच का अंदरूनी हिस्सा खूबसूरत एफ आरपी पैनल से सुसज्जित होगा। प्रत्येक सीट के लिए रेस्तरां की तरह स्नैक टेबल की व्यवस्था, ऑटोमेटिक दरवाजे आदि इन डिब्बों की मुख्य विशेषता होगी। आरसीएफ अब नैरो गेज के एग्जीक्यूटिव एसी चेयर कार, एसी द्वितीय श्रेणी की चेयर कार, जनरल सिटिंग और एसएलआर कोचों की मैन्युफैक्चरिंग शुरू करेगा। इन कोचों का पहला प्रोटोटाइप रेक इस साल के अंत तक तैयार हो जाएगा।



वन्दे भारत एक्सप्रेस के एक्जीक्यूटिव श्रेणी के डिब्बों की दीवारों को आदिनाथ भगवान शिव एवं आदि शक्ति की पेंटिंग्स से बनारस की समृद्ध संस्कृति के अनुरूप एक नया कलेवर प्रदान दिया गया है।
इसे जम्मू के कलाकारों द्वारा बनाया गया है। यह प्रयोग यात्रियों को काफी पसंद आ रहा है।

भारतीय रेल

1960 से रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका



अगस्त, 1960

पत्रिका

www.ir

जनवरी पौष–माघ JANUARY

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
31 चतुर्दशी					1 चतुर्दशी	2 अमावस
3 एकम्	4 द्वितीया	5 तृतीया	6 चतुर्थी	7 पंचमी	8 षष्ठी	9 सप्तमी
10 अष्टमी	11 नवमी	12 दशमी	13 एकादशी	14 द्वादशी	15 त्रयोदशी	16 चतुर्दशी
17 पूर्णिमा	18 एकम्	19 द्वितीया	20 द्वितीया	21 तृतीया	22 चतुर्थी	23 पंचमी
24 षष्ठी	25 सप्तमी	26 नवमी	27 दशमी	28 एकादशी	29 द्वादशी	30 त्रयोदशी

26 गणतंत्र दिवस/Republic Day
01 नववर्ष दिवस/New Year's Day
09 श्री गुरु गोविन्द सिंह जन्मदिवस/Shri Guru Gobind Singh's Birthday
13 लोहड़ी/Lohri
14 मकर संक्रांति/पोंगल/Makar Sankranti/Pongal

फरवरी माघ–फाल्गुन FEBRUARY

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
	1 अमावस	2 एकम्	3 तृतीया	4 चतुर्थी	5 बसंत	6 षष्ठी
7 सप्तमी	8 अष्टमी	9 अष्टमी	10 नवमी	11 दशमी	12 एकादशी	13 द्वादशी
14 त्रयोदशी	15 चतुर्दशी	16 पूर्णिमा	17 एकम्	18 द्वितीया	19 तृतीया	20 चतुर्थी
21 पंचमी	22 षष्ठी	23 सप्तमी	24 अष्टमी	25 नवमी	26 दशमी	27 एकादशी
28 त्रयोदशी						

05 बसंत पंचमी/श्री पंचमी/Basant Panchami/Sri Panchami
15 हजरत अली जयन्ती/Hazrat Ali's Birthday
16 श्री गुरु रविदास जन्मदिवस/Shri Guru Ravidas's Birthday
19 शिवाजी जयन्ती/Shivaji Jayanti
26 स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती/Swami Dayananda Saraswati Jayanti

मार्च फाल्गुन–चैत्र MARCH

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
	1 चतुर्दशी	2 अमावस	3 एकम्	4 फुलेरादूज	5 तृतीया	6 चतुर्थी
7 पंचमी	8 षष्ठी	9 सप्तमी	10 अष्टमी	11 नवमी	12 नवमी	13 दशमी
14 एकादशी	15 द्वादशी	16 त्रयोदशी	17 चतुर्दशी	18 पूर्णिमा	19 एकम्	20 द्वितीया
21 तृतीया	22 पंचमी	23 षष्ठी	24 शीतला सप्तमी	25 शीतला अष्टमी	26 नवमी	27 दशमी
28 एकादशी	29 द्वादशी	30 त्रयोदशी	31 चतुर्दशी			

01 महाशिवरात्रि/Maha Shivratri
18 होली/Holi
17 होलिका दहन/Holika Dahan

अप्रैल चैत्र–वैशाख APRIL

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
				1 अमावस	2 एकम्	3 द्वितीया
4 तृतीया	5 चतुर्थी	6 पंचमी	7 षष्ठी	8 सप्तमी	9 दुर्गाष्टमी	10 रामनवमी
11 दशमी	12 एकादशी	13 द्वादशी	14 तृतीया	15 चतुर्दशी	16 पूर्णिमा	17 एकम्
18 द्वितीया	19 तृतीया	20 चतुर्थी	21 पंचमी	22 षष्ठी	23 शीतला सप्तमी	24 नवमी
25 दशमी	26 एकादशी	27 द्वादशी	28 त्रयोदशी	29 चतुर्दशी	30 अमावस	

14 महावीर जयंती/Mahavir Jayanti
15 गुड फ्राइडे/Good Friday
02 चैत्र शुकलड़ी/गुडी पडवा/उगाड़ी/चेती चांद
Chaitra Shukladi/Gudi Padva/Ugadi/Cheti Chand
10 राम नवमी/Ram Navami
14 वैशाखी/विशु/मैसादी/Vaisakhi/Vishu/Meshadi
15 वैशाखदी (बंगाल)/बहाग बिहु (असम)
Vaisakhadi (Bengal)/Bahag Bihu (Assam)
17 ईस्टर रविवार/Easter Sunday
29 जमात–उल–विदा/Jamat-ul-Vida

मई वैशाख–ज्येष्ठ MAY

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
30 बड़मावस	31 एकम्					1 एकम्
2 द्वितीया	3 अक्षय तृतीया	4 तृतीया	5 चतुर्थी	6 पंचमी	7 षष्ठी	8 सप्तमी
9 अष्टमी	10 नवमी	11 दशमी	12 एकादशी	13 द्वादशी	14 त्रयोदशी	15 चतुर्दशी
16 पूर्णिमा	17 एकम्	18 तृतीया	19 चतुर्थी	20 पंचमी	21 षष्ठी	22 सप्तमी
23 अष्टमी	24 नवमी	25 दशमी	26 एकादशी	27 द्वादशी	28 त्रयोदशी	29 चतुर्दशी

03 ईद–उल–फितर/Id-ul-Fitr
16 बुद्ध पूर्णिमा/Budha Purnima
09 श्री गुरु रवीन्द्रनाथ जयंती/Shri Guru Rabindranath's Birthday

जून ज्येष्ठ–आषाढ़ JUNE

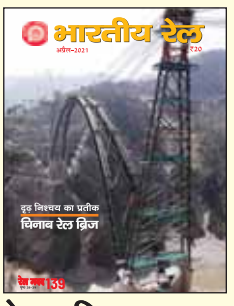
सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
		1 द्वितीया	2 तृतीया	3 चतुर्थी	4 पंचमी	5 षष्ठी
6 षष्ठी	7 सप्तमी	8 अष्टमी	9 नवमी	10 दशमी	11 एकादशी	12 त्रयोदशी
13 चतुर्दशी	14 पूर्णिमा	15 एकम्	16 द्वितीया	17 तृतीया	18 पंचमी	19 षष्ठी
20 सप्तमी	21 अष्टमी	22 नवमी	23 दशमी	24 एकादशी	25 द्वादशी	26 त्रयोदशी
27 चतुर्दशी	28 चतुर्दशी	29 अमावस्	30 एकम्			

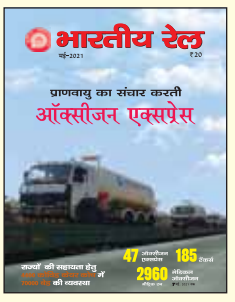












■ शनिवार/रविवार/राजपत्रित अवकाश ■ प्रतिबन्धित अवकाश

©भारतीय रेल पत्रिका

website: www.indi

की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

ctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

या क्यूआर कोड को स्कैन करें

2022

विक्रमी संवत्-2077-2078 | शक् संवत्-1942-1943

जुलाई आषाढ़-श्रावण JULY

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
				1 द्वितीया	2 तृतीया	3 चतुर्थी
4 पंचमी	5 षष्ठी	6 सप्तमी	7 अष्टमी	8 नवमी	9 दशमी	10 एकादशी
11 द्वादशी	12 त्रयोदशी	13 गुरुपूर्णिमा	14 एकम्	15 द्वितीया	16 तृतीया	17 चतुर्थी
18 पंचमी	19 षष्ठी	20 सप्तमी	21 अष्टमी	22 नवमी	23 दशमी	24 एकादशी
25 द्वादशी	26 त्रयोदशी	27 चतुर्दशी	28 अमावस	29 एकम्	30 द्वितीया	31 हरियाली तृतीया

10 ईद-उल-जुहा (बकरीद)/Id-ul-Zuha (Bakrid)

01 रथ यात्रा/Rath Yatra

अगस्त श्रावण-भाद्रपद AUGUST

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
1 चतुर्थी	2 पंचमी	3 षष्ठी	4 सप्तमी	5 अष्टमी	6 नवमी	7 दशमी
8 एकादशी	9 द्वादशी	10 त्रयोदशी	11 चतुर्दशी	12 पूर्णिमा	13 द्वितीया	14 तृतीया
15 चतुर्थी	16 पंचमी	17 षष्ठी	18 सप्तमी	19 अष्टमी	20 गोगा नवमी	21 दशमी
22 एकादशी	23 एकादशी	24 द्वादशी	25 त्रयोदशी	26 चतुर्दशी	27 अमावस	28 एकम्
29 द्वितीया	30 तृतीया	31 चतुर्थी				

09 मुहर्रम/Muharram
15 स्वतंत्रता दिवस/Independence Day
19 जन्माष्टमी/Janmashtami

11 रक्षा बंधन / Raksha Bandhan
16 पारसी नव वर्ष / नौरोज / Parsi New Year Day/Nauraj
18 जन्माष्टमी (स्मार्त) / Janmashtami (Smart)
31 विनायक चतुर्थी / गणेश चतुर्थी / Vinayak Chaturthi/Ganesh Chaturthi

सितम्बर भाद्रपद-आश्विन SEPTEMBER

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
			1 ऋषि पंचमी	2 षष्ठी	3 सप्तमी	4 राधाष्टमी
5 नवमी	6 एकादशी	7 द्वादशी	8 त्रयोदशी	9 अनंत चतुर्दशी	10 पूर्णिमा	11 एकम्
12 द्वितीया	13 तृतीया	14 चतुर्थी	15 पंचमी	16 षष्ठी	17 सप्तमी	18 अष्टमी
19 नवमी	20 दशमी	21 एकादशी	22 द्वादशी	23 त्रयोदशी	24 चतुर्दशी	25 अमावस
26 एकम्	27 द्वितीया	28 तृतीया	29 चतुर्दशी	30 पंचमी		

08 ओणम / थिरु ओणम दिवस / Oham or Thiru Onam Day

अक्टूबर आश्विन-कार्तिक OCTOBER

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
31 सप्तमी					1 षष्ठी	2 सप्तमी
3 दुर्गाष्टमी	4 महा नवमी	5 दशहरा	6 एकादशी	7 द्वादशी	8 चतुर्दशी	9 शरद पूर्णिमा
10 एकम्	11 द्वितीया	12 तृतीया	13 चतुर्थी	14 पंचमी	15 षष्ठी	16 षष्ठी
17 सप्तमी	18 अष्टमी	19 नवमी	20 दशमी	21 एकादशी	22 द्वादशी	23 धनतेरस
24 दीवाली	25 अमावस्	26 एकम्	27 द्वितीया	28 तृतीया	29 चतुर्थी	30 षष्ठी

02 महात्मा गाँधी जन्मदिवस/Mahatma Gandhi's Birthday
05 दशहरा/Dussehra
09 मिलाद-उल-नबी व ईद-ए-मिलाद (पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्मदिवस)/ Milad-un-Nabi or Id-e-Milad (Birthday of Prophet Mohammad)
24 दीवाली / दीपावली/Diwali (Deepavali)

02 दशहरा (महा सप्तमी)/Dussehra (Maha Saptami)
03/04 दशहरा (महा अष्टमी) Dussehra (Maha Ashtami)
09 महर्षि वाल्मीकि जन्मदिवस/Maharishi Valmiki's Birthday
13 करक चतुर्थी (करवा चौथ) / Karak Chaturthi (Karwa Chouth)
24 नरक चतुर्दशी / Naraka Chaturdasi
25 गोवर्धन पूजा/Govardhan Puja
26 भाई-दूज/Bhai Duj
30 प्रतिहार षष्ठी व सूर्य षष्ठी (छठ पूजा)/ Pratihar Shashthi or Surya Shashthi (Chhat Puja)

नवम्बर कार्तिक-मार्गशीर्ष NOVEMBER

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
	1 गोपाष्टमी	2 नवमी	3 दशमी	4 एकादशी	5 द्वादशी	6 त्रयोदशी
7 चतुर्दशी	8 पूर्णिमा	9 एकम्	10 द्वितीया	11 तृतीया	12 चतुर्थी	13 पंचमी
14 षष्ठी	15 सप्तमी	16 अष्टमी	17 अष्टमी	18 नवमी	19 दशमी	20 एकादशी
21 द्वादशी	22 त्रयोदशी	23 चतुर्दशी	24 एकम्	25 द्वितीया	26 तृतीया	27 चतुर्थी
28 पंचमी	29 षष्ठमी	30 सप्तमी				

08 श्री गुरु नानक देव जन्मदिवस/Shri Guru Nanak Dev's Birthday

24 श्री गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस/ Shri Guru Tegh Bahadur's Martyrdom Day

दिसम्बर मार्गशीर्ष-पौष DECEMBER

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
			1 अष्टमी	2 दशमी	3 एकादशी	4 द्वादशी
5 त्रयोदशी	6 चतुर्दशी	7 चतुर्दशी	8 पूर्णिमा	9 एकम्	10 द्वितीया	11 तृतीया
12 चतुर्थी	13 पंचमी	14 षष्ठी	15 सप्तमी	16 अष्टमी	17 नवमी	18 दशमी
19 एकादशी	20 द्वादशी	21 त्रयोदशी	22 चतुर्दशी	23 अमावस्	24 एकम्	25 तृतीया
26 चतुर्थी	27 पंचमी	28 षष्ठी	29 सप्तमी	30 अष्टमी	31 नवमी	

25 क्रिसमस दिवस/Christmas Day

24 क्रिसमस पूर्व संध्या/Christmas Eve
29 गुरु गोबिंद सिंह जन्मदिवस/Guru Govind Singh Birthday













ianrailways.gov.in

Email : editorbhartiyarail@gmail.com

भारती
पत्रिका की ऑनलाइन सदस्यत

STEP 1

ऑनलाइन सदस्यता हेतु **www.irctc.co.in** पर जाएं। ❶

इस पेज के **विज्ञापन** (Promotions) पर जाएं। ❷

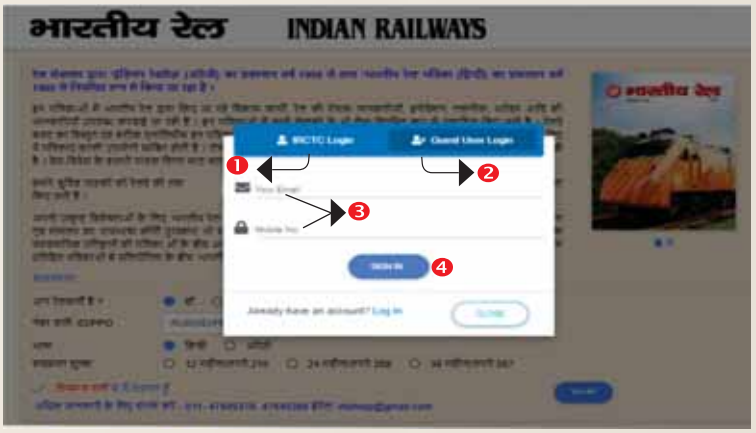
आप सीधे www.irctctourism.com/ IRBRmag/#/home/hn पर भी जा सकते हैं।



❸ **'भारतीय रेल पत्रिका'** पर क्लिक करें।

STEP 3

❶ इस बॉक्स में यदि आप के पास आईआरसीटीसी का लॉग-इन, पासवर्ड है तो उसका उपयोग करें।

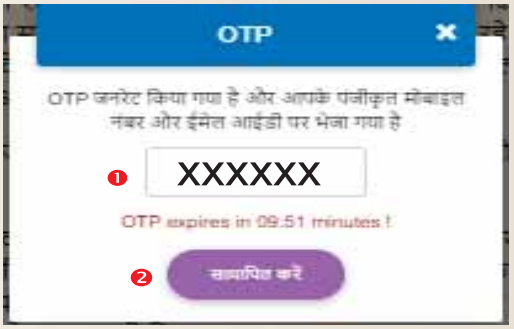


❷ लॉग-इन आईडी नहीं है तो गेस्ट लॉग-इन पर क्लिक करें।

❸ उसमें अपना ई-मेल तथा मोबाइल नंबर दर्ज करें।

❹ सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 5



❶ आपके पंजीकृत मोबाइल एवं ई-मेल पर आए ओटीपी को बॉक्स में दर्ज करें एवं

❷ सत्यापित करें

STEP 6



❶ पेमेंट मोड (कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई, वॉलेट, इंटरनेशनल कार्ड तथा आईपे) एवं

❷ पेमेंट गेट-वे का ऑप्शन पसंद करें

❸ मेक पेमेंट का बटन दबाएं

ीय रेल
ना प्राप्त करने की सरल प्रक्रिया

STEP 2

❶ यदि आप रेलकर्मी हैं तो 'हां' पर या रेलकर्मी नहीं हैं तो 'नहीं' पर क्लिक करें।

❷ यदी 'हां' तो बॉक्स में अपना आरयूआईडी/ आईडी/पीपीओ नंबर तथा एक आधिकारिक आईडी की स्कैन कॉपी अपलोड करें।

❸ 'भारतीय रेल' पत्रिका के लिए 'हिंदी' को और 'इंडियन रेलवेज' पत्रिका के लिए 'अंग्रेजी' में क्लिक करें।

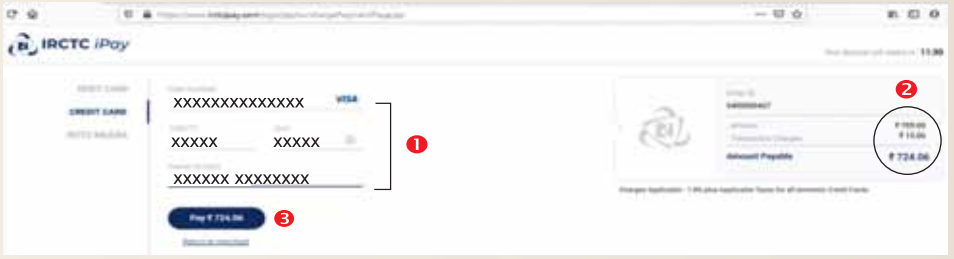
❹ एक, दो या तीन यानि जितने साल की सदस्यता चाहते हैं, उस बिन्दु पर क्लिक करें।



STEP 4



STEP 7



❶ पेमेंट मोड की डीटेल भरें ❷ पेमेंट एमाउंट की जानकारी देखें।
❸ संतुष्ट होने पर ही 'पे' बटन को दबाएं।
➲ बैंक ओटीपी की प्रक्रिया पूर्ण होने पर पेमेंट सक्सेस फुल का मैसेज स्क्रीन पर दिखाई देगा।

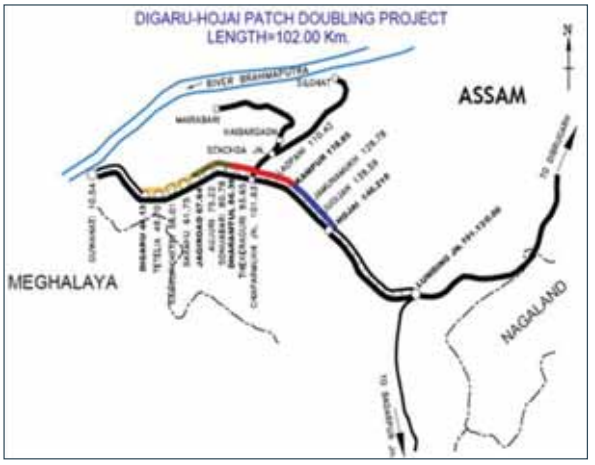
कृपया ध्यान दें

- पेमेंट के समय नियमानुसार ट्रांजेक्शन शुल्क लगते हैं, कृपया पेमेंट करते समय देख लें।
- पेमेंट की प्रक्रिया पूर्ण होने पर आपको सदस्यता संबंधित जानकारी का एस.एम.एस. तथा मेल प्राप्त होगा।
- पेमेंट प्राप्त होते ही निर्धारित माह से आपको पत्रिका प्राप्त होनी शुरू हो जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 011- 47845378, 47845380 ईमेल: irbrhelp@gmail.com

डिगारु-होजाई खण्ड का दोहरीकरण कार्य प्रगति पर

पूर्वोत्तर सीमा रेल का गुवाहाटी-लामडिंग खंड (लगभग 180 किमी) रेलवे परिवहन की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण है। यह खंड में ऊपरी असम और दक्षिण असम जिलों के अलावा मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और नगालैंड जैसे पूर्वोत्तर राज्यों के लिए माल और यात्री ट्रेनों का आवागमन होता है। ट्रेनों की बढ़ती संख्या के कारण यह खंड जो पहले सिंगल था, ट्रेन परिचालन में बाधाओं का सामना कर रहा था। इस समस्या को कम करने के लिए इस खण्ड के दोहरीकरण को मंजूरी दी गई तथा खण्ड को विभिन्न भागों में बाँट कर कार्य शुरू किया गया। वर्ष 2015-16 के रेल बजट में 102 किमी. लम्बे डिगारू-होजाई खंड के दोहरीकरण को मंजूरी दी गई थी। इस परियोजना का शिलान्यास तत्कालीन रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभाकर प्रभु ने 10 नवम्बर, 2016 को किया था। इस खंड में 36 लाख घन मीटर भूमि कार्य के अलावा 11 बड़े, 73 छोटे और 5 सड़क ऊपरी पुल का निर्माण शामिल है। कार्य की संशोधित अनुमानित लागत रुपये 2,136 करोड़ से अधिक है। वर्ष 2020-21 के दौरान कुल 50.87 किमी के रेल पथ को पहले ही चालू कर दिया गया है और अब व्यापक योजना बनाकर वित्तीय वर्ष 2021-22 के अंदर पूरे खंड का दोहरीकरण कर दिए जाने की संभावना है। 102 किमी लंबे डिगारू-होजाई खंड के दोहरीकरण का काम एक बार पूरा हो जाने पर लामडिंग मंडल के अधीन आने वाले इस खंड में ट्रेन परिचालन की क्षमता बढ़ जाएगी। ट्रेनों की क्रॉसिंग के समय में होने वाली बचत के कारण यात्रा समय में भी काफी कमी आएगी। ऊपरी असम और दक्षिण असम क्षेत्रों के अलावा मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और नगालैंड जैसे राज्यों के लिए ज्यादा से ज्यादा मालगाड़ियों का परिचालन किया जा सकेगा।



डिगारू-होजाई खंड के दोहरीकरण परियोजना का नक्शा

पूर्वोत्तर सीमा रेल के सक्रिय प्रयासों से पूर्वोत्तर के किसानों में आई उल्लेखनीय समृद्धि

पूर्वोत्तर सीमा रेल 'भारतीय रेल के लिए राजस्व की वृद्धि' तथा पूर्वोत्तर के लोगों के लिए बेहतर परिवहन की सुविधा मुहैया कराने के दोहरे उद्देश्यों के साथ आगे बढ़ रही है।

पूर्वोत्तर सीमा रेल की व्यापार विकास इकाइयों के अथक प्रयासों के कारण अप्रैल, 2021 से 30 अक्टूबर, 2021 तक भारतीय रेल के विभिन्न गंतव्यों यानी नई दिल्ली, लखनऊ, पटना, न्यू जलपाईगुड़ी इत्यादि तक परिवहन हेतु तिनसुकिया मंडल के न्यू तिनसुकिया तथा मरियानी स्टेशनों से 51.78 टन काली इलायची लोड की गई और 4,14,489/- रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। इस अवधि के दौरान भारतीय रेल के विभिन्न गंतव्यों यानी डिमापुर, नामति आलि इत्यादि तक परिवहन हेतु तिनसुकिया मंडल के न्यू तिनसुकिया, लीडो तथा सापेखाती स्टेशनों से 174.57 टन सुपारी लोड की गई और 1,56,243/- रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। तिनसुकिया मंडल की बीडीयू द्वारा किए गए प्रयासों से इस क्षेत्र के किसानों को उल्लेखनीय लाभ मिल रहा है।

इसके अलावा, पू. सी. रेल के अलीपुरद्वार मंडल ने बीडीयू के विपणन प्रयासों के फलस्वरूप बांग्लादेश के विभिन्न स्टेशनों तक भेजे जाने के लिए नई धाराओं के रूप में गेहूँ का परिवहन किया है। जून से अक्टूबर, 2021 की अवधि के दौरान मंडल ने फालाकाटा स्टेशन से कई रेकों में 11,192 टन गेहूँ लोड करके 60.54 लाख रुपये का राजस्व अर्जित किया।



यह उल्लेखनीय है कि माल परिवहन की मात्रा में वृद्धि के लिए पू.सी. रेल ने सभी मंडलों यानी कटिहार, अलीपुरद्वार, रंगिया, लामडिंग तथा तिनसुकिया में तथा जोनल मुख्यालय स्तर पर व्यापार विकास इकाइयों (बीडीयू) की स्थापना की है। विभिन्न मंडलों की बीडीयू द्वारा किए गए उपायों के कारण सड़क क्षेत्र से रेलवे तक यातायात के नए साधन उपलब्ध कराने में सफलता मिली है।

दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे में 'घूम उत्सव' का उद्घाटन





'घूम उत्सव' का उद्घाटन करते हुए महाप्रबंधक, श्री अंशुल गुप्ता, (बाएं) तथा उत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम का एक दृश्य (दाएं)

यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (डीएचआर) में तीन सप्ताहव्यापी 'घूम उत्सव' का शुभारम्भ 13 नवम्बर को महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता ने वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों तथा स्थानीय लोगों की उपस्थिति में किया।

150 वर्ष पुरानी विश्व धरोहर दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (डीएचआर) के केंद्र बिंदु में दार्जिलिंग के पर्यटन उद्योग को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से घूम (भारत का सबसे ऊंचा रेलवे स्टेशन) तथा दार्जिलिंग रेलवे स्टेशनों पर दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे द्वारा इस उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। उत्सव 13 नवम्बर से आरम्भ होकर 05 दिसम्बर (डीएचआर दिवस) तक चला, वर्ष 1999 में इस दिन डीएचआर को यूनेस्को विश्व धरोहर का तमगा प्राप्त हुआ था। इस उत्सव का उद्देश्य एक प्रमुख पर्यटन गंतव्य के रूप में दार्जिलिंग की प्रतिष्ठा को और बढ़ाना तथा भारतीय रेल के उपार्जन में वृद्धि करना भी है। पर्यटकों की जरूरतों के अनुसार डीएचआर जॉय राइड्स, जंगल-टी सफारी, रेड पांडा, हिम कन्या, न्यू जलपाईगुड़ी-दार्जिलिंग पैसेंजर ट्रेन नामक कई टॉय ट्रेनें सवारी का संचालन कर रही हैं। इस उत्सव को सफल बनाने के लिए पर्यटन उद्योग के साथ दार्जिलिंग कालिंपोंग हिमालयन टूरिज्म एसोसिएशन, दार्जिलिंग होटल ऑनर एसोसिएशन, दार्जिलिंग होमस्टे एसोसिएशन, दार्जिलिंग हिल रनर्स एसोसिएशन इत्यादि जैसी अनेक संस्थाएं साथ मिल कर काम कर रही है।

उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में हुआ स्वर्णिम विजय मशाल का भव्य स्वागत

वर्ष 1971 के भारत-पाक युद्ध में भारत की ऐतिहासिक विजय के 50 वर्ष पूरे होने के कार्यक्रमों के हिस्से के रूप में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा विजय दिवस (16 दिसंबर) 2020 को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक नई दिल्ली से स्वर्णिम विजय मशाल को प्रज्ज्वलित कर राष्ट्र के विभिन्न हिस्सों के लिए रवाना किया गया था। 25 नवंबर, 2021 को यह उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय पहुंची। इस मशाल को सशस्त्र बलों की एक टुकड़ी द्वारा सजाए गए वाहन में उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय लाया गया था, जहां खिलाड़ियों और भारत स्काउट्स एंड गाइड्स के सदस्यों ने अपने हाथों में तिरंगा लहराते हुए मशाल की अगवानी की।

मुख्य समारोह का आयोजन मुख्यालय प्रांगण में सम्पन्न हुआ। वाहन से मशाल के उतरते ही उसको सेना के बैगपाइपर द्वारा सलामी स्थल की ओर ले जाया गया। परेड कमांडर योगेश राणा के नेतृत्व में आरपीएफ परेड ने स्वर्णिम विजय मशाल को गार्ड ऑफ ऑनर दिया। स्टेशन कमांडर और डिप्टी जनरल ऑफिसर कमॉडिंग पूर्वा यूपी और एमपी सब एरिया ब्रिगेडियर अजय पासबोला द्वारा मशाल को उत्तर मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार को सौंपा गया। महाप्रबंधक द्वारा सलामी स्थल पर साहस और पराक्रम की प्रतीक इस मशाल की स्थापना की गई। सलामी स्थल पर महाप्रबंधक महोदय के साथ आईजी/आरपीएफ/उत्तर मध्य रेलवे श्री रवीन्द्र वर्मा उपस्थित थे । रेल सुरक्षा बल गारद ने



मशाल को सामान्य सलामी दी और उसके उपरांत राष्ट्रगान हुआ। समारोह में भारतीय सेना के अधिकारी, उत्तर मध्य रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी, डीआरएम/प्रयागराज और 970 रेलवे प्रादेशिक सेना, झांसी के अधिकारी उपस्थित थे।

पूर्वोत्तर सीमा रेल में मनाई गई बिरसा मुंडा की 146वीं जयंती



पूर्वोत्तर सीमा रेल ने भारत के जनजातीय गौरव दिवस के रूप में चिह्नित भगवान बिरसा मुंडा की 146वीं जयंती मनाई। इस दिवस का पालन भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान वर्तमान में झारखण्ड क्षेत्र में ब्रिटिश राज के खिलाफ जनजाति आंदोलन की अगुवाई करने वाले भारत के इस महान जनजाति स्वतंत्रता सेनानी के योगदान के स्मरण में मनाया गया।

पूर्वोत्तर सीमा रेल मुख्यालय में पू. सी. रेल के वरिष्ठ उप महाप्रबंधक एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री बोनीफेस लकरा, पू.सी. रेल के अपर महाप्रबंधक श्री राहुल गौतम ने अन्य वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों की उपस्थिति में भगवान बिरसा मुंडा की छवि पर पुष्पांजलि अर्पित की। श्री लकरा ने ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार के शोषण प्रणाली के खिलाफ लड़ाई में भगवान बिरसा मुंडा के योगदान पर वक्तव्य रखा गया।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जयंती का आयोजन

पूर्वोत्तर सीमा रेल ने 11 नवंबर, 2021 को पू.सी. रेल मुख्यालय में स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद की 133वीं जन्म जयंती मनाई। मौलाना आजाद एक स्वतंत्रता सेनानी, एक राजनेता और एक प्रख्यात शिक्षाविद् थे। यह आयोजन भारत की आजादी की 75वीं सालगिरह 'आजादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में किया गया है।



पू.सी. रेल के अपर महाप्रबंधक श्री राहुल गौतम ने मौलाना अबुल कलाम आजाद के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर पू.सी. रेल मुख्यालय के अधिकारी और कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

सभा को संबोधित करते हुए श्री राहुल गौतम ने कहा कि मौलाना आजाद एक महान विद्वान और कवि थे; वह अरबी, अंग्रेजी, उर्दू, हिंदी, पर्शियन और बांग्ला आदि भाषाओं में पारंगत थे। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा के समर्थक मौलाना आजाद देश की मिश्रित संस्कृति के मिसाल हैं। मौलाना आजाद ने मुफ्त शिक्षा, भारतीय शिक्षा प्रणाली और उच्च शिक्षा संस्थान स्थापित करने का काम किया।

मुफ़्त नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन

मालीगाँव स्थित पूर्वोत्तर सीमा रेल के सेंट्रल अस्पताल द्वारा श्री शंकरदेव नेत्रालय, गुवाहाटी के सहयोग से 8 नवंबर को मुख्यालय स्थित स्वास्थ्य इकाई परिसर में एक मुफ्त नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन विशेष रूप से रेलवे कर्मचारी एवं उनके परिवार के सदस्यों के सुविधार्थ किया गया। महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता ने इस शिविर का उद्घाटन किया। नेत्र परीक्षण के दौरान कुल 96 मरीजों के परीक्षण किए गए, जिनमें से 90% सेवारत रेलवे कर्मचारी थे। परीक्षण में 35 नेत्र रोगियों में मोतियाबिंद के लक्षण पाए गए, जबकि 14 रोगियों में सूखी आँखों की बीमारी पाई गई।

शिविर में लाभार्थियों के बीच नेत्र-पीड़ा से संबंधित रोगियों की आखों की स्क्रीनिंग के लिए यथोचित अग्राधिकार दिए गए।



मोतियाबिंद, ग्लूकोमा, टेरिजियम, मधुमेह व रेटिनोपैथी जैसे नेत्र-पीड़ा से संबंधित मरीजों को परामर्श प्रदान किए गए। 40 साल से ऊपर की आयु एवं ज्ञात मधुमेह के मरीजों को भी विशेष परामर्श प्रदान किए गए। उल्लेखनीय है कि 'आजादी का अमृत महोत्सव' के स्मरणार्थ पूर्वोत्तर सीमा रेल में वेलनेस शिविर की एक श्रृंखला के आयोजन की परिकल्पना की गई है।

भारत स्काउट्स एंड गाइड्स ने आयोजित किया 'राज्य स्तरीय कैंपोरी'

पूर्वोत्तर सीमा रेल भारत स्काउट्स एंड गाइड्स द्वारा 6 से 8 नवंबर, 2021 तक मालीगांव में तीन दिवसीय राज्य स्तरीय कैंपोरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पूर्वोत्तर सीमा रेल भारत स्काउट्स एंड गाइड्स (बीएसजी/पू.सी.रेल) के सभी 10 जिला संघों ने विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लिया, जैसे रोवर्स के लिए पायोनियरिंग प्रतियोगिता, रेंजर्स के लिए वेस्ट मैटेरियल क्राफ्ट प्रतियोगिता, लोकगीत, लोकनृत्य, प्रदर्शनी आदि। पूर्वोत्तर सीमा रेल के महाप्रबंधक और बीएसजी/पू.सी. रेल के मुख्य संरक्षक श्री अंशुल गुप्ता ने श्रीमती आभा गुप्ता, अध्यक्षा, एनएफआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ और बीएसजी, पू.सी. रेल के संरक्षक, पूर्वोत्तर सीमा रेल के पीसीपीओ (प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी) और बीएसजी, पू.सी. रेल के राज्य मुख्य आयुक्त श्री चंद्रजीत सैकिया और मुख्यालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति



में कैंपोरी को संबोधित किया। महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेल ने लॉर्ड बैडेन-पॉवेल, लेडी बैडेन-पॉवेल और स्वतंत्रता सेनानी बिपिन चंद्र पाल की प्रतिमा पर फूल चढ़ाकर और दीप जलाकर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

बी. आर. सिंह अस्पताल, पूर्व रेलवे में मेडिकल ऑक्सीजन स्टोरेज प्लांट का उद्घाटन



पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक, श्री अरुन अरोरा ने 30 नवम्बर, 2021 को बी.आर. सिंह अस्पताल, पूर्व रेलवे, सियालदह में एक 13 किलोलीटर तरल मेडिकल ऑक्सीजन (एलएमओ) भंडारण संयंत्र का उद्घाटन किया। 13 किलोलीटर एलएमओ भंडारण संयंत्र की स्थापना का महत्त्व रेलवे प्रशासन द्वारा कोविड-19 महामारी की पहली और दूसरी लहर के चरम समय के दौरान महसूस किया गया। कई हाई-एंड जीवन रक्षक उपस्कर, जैसे इनवेसिव और नॉन-इनवेसिव वेंटीलेटर, हाइपरबेरिक ऑक्सीजन थेरेपी (एचबीओटी), हाई फ्लो नेजल ऑक्सीजन (एचएफएनओ) आदि निर्बाध मेडिकल ऑक्सीजन आपूर्ति पर निर्भर करते हैं।

पश्चिम मध्य रेल मुख्यालय में 'भारतीय रेल लेखा दिवस' का आयोजन

सम्पूर्ण भारतीय रेल में प्रतिवर्ष भारतीय रेल के लेखा विभाग के अधिकारियों द्वारा 'भारतीय रेल लेखा सेवा दिवस' (आईआरएएस डे) के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर राष्ट्रीय रेल संग्रहालय, नई दिल्ली में आयोजित मुख्य कार्यक्रम से भारतीय रेल के सभी आईआरएएस अधिकारियों को जोड़ा गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में वित्त सचिव एवं व्यय सचिव, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, डॉ. टी. वी. सोमानाथन ने 'लोक सेवा : बदलते परिवेश को अपनाना' विषय पर अपने विचार रखे। इस कार्यक्रम में सदस्य वित्त तथा पदेन सचिव भारत सरकार, रेल मंत्रालय श्री नरेश सलेचा की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इसी क्रम में पश्चिम मध्य रेल जबलपुर मुख्यालय में भी 'भारतीय रेल लेखा सेवा दिवस' मनाया गया। कार्यक्रम में सेवारत एवं सेवानिवृत्त भारतीय रेल लेखा सेवा अधिकारी मुख्यालय में कॉन्फ्रेंस हॉल से जुड़े रहे, जिसमें प्रधान वित्त सलाहकार श्री कार्तिक चौहान, वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी श्रीमती दीपा चावला, वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी कारखाना एवं भण्डार, श्री अजीत कुमार रघुवंशी, वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी यातायात, श्री यशवंत कुमार, वरिष्ठ मण्डल वित्त प्रबंधक, जबलपुर, श्री अभिराम खरे, उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी वित्त बजट, श्री ए. एम. खान, उप मुख्य लेखा अधिकारी, श्री एच. एल. महावर, उप मुख्य उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी भण्डार एवं श्री एस.पी. तिवारी सेवानिवृत्त आईआरएएस उपस्थित रहे।

पश्चिम मध्य रेलवे : आधुनिक तकनीक से 800 फिट से भी लंबे न्यू ओपन वेब गर्डर ब्रिज का निर्माण अंतिम चरण में

पश्चिम मध्य रेलवे की अधोसंरचना में त्वरित गति से विस्तार किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि कोविड-19 की आपदा को अवसर में बदलकर पमरे ने अपने अधोसंरचना में न केवल मजबूती प्रदान की है, बल्कि इसमें बेतहाशा वृद्धि की है। सतना-रीवा खंड के दोहरीकरण के कार्य ने काफी तेजी पकड़ी है। सतना-रीवा खंड के सकरिया-हिनौता स्टेशनों के मध्य गुजरने वाली तमस नदी पर ब्रिज का निर्माण एक आधुनिक तकनीक से तेज गति एवं निर्बाध रूप से चल रहा है। इसमें छोटे एवं बड़े ब्रिजों का निर्माण किया जा रहा है। इस 50 किमी के सेक्शन में 22 किमी के सेक्शन का कार्य पूर्ण हो चुका है। इसमें तमस नदी पर बनने वाला यह ब्रिज आधुनिक पद्धति से बनने वाला न्यू ओपेन वेब गर्डर ब्रिज है, जिसकी लम्बाई 45.07 मीटर है और इसमें 06 स्पान हैं। इस ब्रिज की कुल लागत 30 करोड़ रुपये है



एवं लगभग नवम्बर 2021 तक बनकर पूर्ण हो जाएगा। इस ब्रिज के निर्माण से सतना-रीवा खंड के दोहरीकरण के कार्य में गति आयेगी। इस प्रकार के अन्य कार्य भी तेज गति से चल रहे हैं। कोविड काल में भी अधोसंरचना के कार्य में गतिशीलता एवं निर्बाधता के कारण पश्चिम मध्य रेलवे, भारतीय रेल में अग्रणी की भूमिका निभा रहा है।

उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक ने टपरी-मेरठ सिटी रेल सेक्शन का निरीक्षण किया



उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, श्री आशुतोष गंगल ने 10 दिसम्बर, 2021 टपरी-मेरठ सिटी रेल सेक्शन का गहन निरीक्षण किया। इस अवसर पर उनके साथ उत्तर रेलवे के प्रमुख विभागाध्यक्षगण, दिल्ली मंडल के मंडल रेल प्रबंधक, श्री डिम्पी गर्ग भी उपस्थित थे। श्री गंगल ने स्मॉल ट्रैक मशीन, यूएसएफडी परीक्षण और स्विच रूम की कार्य प्रणाली का निरीक्षण किया और टीएसएस परिसर में पौधारोपण भी किया। उन्होंने तलहरी बुजुर्ग- देवबंद सेक्शन पर समपार संख्या-71 का निरीक्षण किया। उन्होंने मुजफ्फरनगर स्टेशन पर प्रेस प्रतिनिधियों, जेडआरयूसीसी एसोसिएशन के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की और क्षेत्र में चल रही विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति से उन्हें अवगत कराया।

दिल्ली मंडल ने एक दिन में रिकॉर्ड 63 क्रैक मालगाड़ियाँ चलाईं

उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, श्री आशुतोष गंगल ने बताया कि उत्तर रेलवे के दिल्ली मंडल ने माल ढुलाई परिवहन की बढ़ती मांग को कुशल तरीके से पूरा करने के लिए तथा माल ढुलाई में तेजी लाने के लिए 'मिशन रफ्तार' को सफलतापूर्वक गति दी है। दिल्ली मंडल द्वारा 22 नवम्बर, 2021 को एक ही दिन में रिकॉर्ड 63 क्रैक मालगाड़ियां चलाई गईं, जिनमें 1 भटिंडा-तुगलकाबाद सुपर क्रैक, 10 रोहतक क्रैक (गाजियाबाद-रोहतक), 14 घग्गर क्रैक (तुगलकाबाद-जींद), 2 हिंडन क्रैक (जींद-गाजियाबाद), 2 यमुना क्रैक (जींद-तुगलकाबाद), 1 भटिंडा-शकूरबस्ती डाउन क्रैक, 2 रोजा क्रैक (गाजियाबाद-रोजा), 12 मारकंडा क्रैक (अंबाला-तुगलकाबाद), 1 सरस्वती क्रैक (अंबाला-गाजियाबाद), 2 गंगा क्रैक (गाजियाबाद-अंबाला), 16 तंगरी क्रैक (तुगलकाबाद-अंबाला) हैं। इन मालगाड़ियों को प्रारंभिक और गंतव्य के बीच नॉन-स्टॉप संचालित किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप खाद्यान्न, कोयला, कंटेनर और स्टील आदि जैसे सामान का प्राथमिकता और तेजी से परिवहन हुआ। इनमें से सबसे लंबा मार्ग भटिंडा से तुगलकाबाद तक सुपर क्रैक था, जिसमें 313.81 किमी की दूरी को मार्ग में लॉबी (जींद, शकूरबस्ती) में चालक दल के परिवर्तन के बिना कवर किया गया। क्रैक ट्रेनें न केवल कार्य क्षमता बढ़ाती हैं बल्कि यह माल ढुलाई के परिवहन का समय प्रभावी तरीका भी है। उत्तर रेलवे अपने फ्रेट ग्राहकों की मुस्कान के साथ सेवा करते हुए रेल माल ढुलाई सेवाओं में नए रिकॉर्ड हासिल करने का प्रयास जारी रखेगा।

दक्षिण पूर्व रेलवे के मुख्यालय में हैरिटेज वॉक का आयोजन

दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा अपनी समृद्ध विरासत के संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करने हेतु 27 नवम्बर, 2021 को गार्डनरीच में 'हैरिटेज वॉक' का आयोजन किया गया, जिसमें इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज, रेलवे सोसाइटी और अन्य संगठनों के सदस्यों ने भाग लिया। श्री अतुल्य सिन्हा, अपर महाप्रबंधक और अध्यक्ष, विरासत समिति, दक्षिण पूर्व रेलवे ने लोगों को विभिन्न रेलवे प्रतिष्ठानों की समृद्ध विरासत के बारे में जानकारी दी।



विरासत के प्रति उत्साही लोगों ने सन् 1907 में निर्मित दक्षिण पूर्व रेलवे मुख्यालय भवन, हैरिटेज रूम, भारत में संचालित होने वाले पहले बैराज बैलून की याद में पीतल की गोली, गॉडफ्रे मैंशन (ब्रिटिश काल के दौरान निर्मित भवन), हुगली नदी के तट पर बीएनआर ऑफिसर्स क्लब इत्यादि का दौरा किया। विरासत के प्रति उत्साही लोगों ने इस कदम की सराहना की।

दक्षिण पूर्व रेलवे ने मनाया 66वां रेल सप्ताह



दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा 7 दिसम्बर, 2021 को कोलकाता में 66वां रेलवे सप्ताह मनाया गया। सुश्री अर्चना जोशी, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। श्री अतुल्य सिन्हा, अपर, महाप्रबंधक, श्री विजय कुमार पंजियार, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक सहित सभी प्रमुख विभागाध्यक्ष इस समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर खड़गपुर, आद्रा, चक्रधरपुर और रांची के मंडल रेल प्रबंधक भी उपस्थित थे।

वर्ष 2020-21 के दौरान उत्कृष्ट सेवाओं और कर्तव्य के प्रति समर्पण के लिए समूह पुरस्कार सहित 164 चयनित रेलवे अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। सर्वश्रेष्ठ सर्वांगीण प्रदर्शन के लिए खड़गपुर मंडल को समग्र दक्षता शील्ड प्रदान की गई। 28 अन्य श्रेणियों में दक्षता शील्ड विभिन्न मंडलों, कार्यशालाओं और स्टेशनों को प्रदान की गईं। रांची स्टेशन को सर्वश्रेष्ठ रख-रखाव स्टेशन के लिए पुरष्कृत किया गया है। सुश्री अर्चना जोशी, महाप्रबंधक ने संबोधित करते हुए भारतीय रेल के विकास में दक्षिण पूर्व रेलवे के योगदान का उल्लेख किया और रेलवे कर्मचारियों को उनके ईमानदारी से प्रयास और सराहनीय प्रदर्शन के लिए बधाई दी। महाप्रबंधक ने यात्रियों और माल ढुलाई ग्राहकों की संतुष्टि प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करने पर जोर दिया। उन्होंने विभिन्न संघों और ट्रेड यूनियनों द्वारा दिए गए सहयोग की भी सराहना की।

महाप्रबंधक द्वारा नोआपाड़ा-बिमानबंदर मेट्रो विस्तार खण्ड का निरीक्षण

महाप्रबंधक श्री मनोज जोशी ने मेट्रो रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ नोआपाड़ा-बारासात वाया बिमानबंदर मेट्रो परियोजना की प्रगति का आकलन करने के लिए नोआपाड़ा-बिमानबंदर मेट्रो खंड का गहन निरीक्षण किया। श्री जोशी ने नोआपाड़ा परियोजना स्थल पर मेट्रो के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय बैठक की। बैठक में इस परियोजना के इंजीनियरी, इलेक्ट्रिकल और सिग्नल एवं दूरसंचार कार्यों की प्रगति की समीक्षा की गई। उन्होंने जेसोर रोड, विमानबंदर मेट्रो स्टेशन, वायडक्ट और विमानबंदर भूमिगत निर्माण स्थल और यार्ड का निरीक्षण किया। इस निरीक्षण के दौरान महाप्रबंधक के साथ मेट्रो रेलवे के प्रधान विभागाध्यक्ष मौजूद थे।



श्री जोशी ने इस परियोजना के कार्यों की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और संबंधित अधिकारियों को कार्य की अच्छी गति को बनाए रखने के निर्देश दिए।

'आजादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर सेंट्रल पार्क डिपो में साइकिल मैराथन का आयोजन



'आजादी का अमृत महोत्सव' के एक भाग के रूप में मेट्रो रेलवे ने 14 दिसम्बर, 2021 को ईस्ट-वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर के सेंट्रल पार्क डिपो में एक साइकिल मैराथन का आयोजन किया, जिसमें श्री एस.एस. मुखर्जी उप मुख्य विद्युत अभियंता/ई एंड डब्ल्यू, सुश्री अपर्णा घोष, उप सचिव (खेल एवं सामान्य) ने मेट्रो रेलवे स्पोर्ट्स एसोसिएशन के सदस्यों और डिपो के कर्मचारियों के साथ भाग लिया।

इस महोत्सव के महत्त्व को समझने और सभी स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु सभी प्रतिभागियों ने इस मैराथन के दौरान पूरे सेंट्रल पार्क डिपो का दौरा किया।

फूलबागान और सिटी सेंटर स्टेशनों के ब्रांडिंग अधिकार

मेट्रो रेलवे ने ईस्ट-वेस्ट मेट्रो के फूलबागान और सिटी सेंटर स्टेशनों के सह-ब्रांडिंग अधिकार देने के लिए दिनांक 30.11.2021 को भारतीय जीवन बीमा निगम लिमिटेड (एलआईसी) के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

मेट्रो रेलवे की ओर से श्री कौशिक मित्रा, उप मुख्य परिचालन प्रबंधक ने श्री एन.पी. सिन्हा, क्षेत्रीय प्रबंधक, एलआईसी की उपस्थिति में इस करार पर हस्ताक्षर किए।

मेट्रो रेलवे ने एलआईसी को इन दोनों स्टेशनों में से प्रत्येक के लिए 1,500 वर्ग फुट जगह की पेशकश की है। एलआईसी को स्टेशन सह-ब्रांडिंग अधिकार मिल गया है और वह अपने ब्रांड नाम, लोगो (उपसर्ग/प्रत्यय) को स्टेशन के नाम पर उन सभी स्थानों पर जोड़ सकता है जहां स्टेशन का नाम प्रदर्शित होता है। वे स्टेशनों के सभी प्रवेश और निकास द्वारों पर अपने ब्रांड का लोगो, रंग और नाम भी लगा सकते हैं।

एलआईसी ब्रांडिंग/विज्ञापन के लिए मौजूदा रेलवे प्रतिष्ठानों और संरचनाओं को प्रभावित और उल्लंघन किए बिना प्लेटफॉर्म स्क्रीन डोर, पिलर रैप्स, प्रवेश/निकासी गेटों पर, जहां भी संभव हो, कॉनकोर्स और प्लेटफॉर्म सतहों पर मुख्य/प्रमुख स्थानों का उपयोग करने में सक्षम होगा। इनके अलावा, एलआईसी को स्टेशनों के सबसे प्रमुख और विशिष्ट फर्श स्थानों पर प्रचार/अभियान के लिए अपने कियॉस्क लगाने और स्टेशनों के प्रवेश/निकास संरचना के साथ-साथ अंदर की ब्रांडिंग के अधिकार भी होंगे। पांच साल के इस अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के साथ ही मेट्रो रेलवे पहली बार अपने किसी स्टेशन के सह-ब्रांडिंग अधिकार एलआईसी जैसे किसी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम को सौंप रहा है।

'हृदय रोगों के बारे में मिथक और तथ्य' विषय पर सेमिनार का आयोजन

दिनांक 10.12.2021 को चिकित्सा विभाग, उत्तर मध्य रेलवे द्वारा उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में 'हृदय रोगों के बारे में मिथक और तथ्य' पर एक इंटरैक्टिव सत्र का आयोजन किया गया। महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, श्री प्रमोद कुमार की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्यालय एवं मण्डल के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। इस अवसर पर विख्यात हृदय रोग चिकित्सक डॉ. संजीव शर्मा ने हार्ट अटैक एवं हार्ट अटैक के लक्षणों के बारे में बताया तथा इससे जुड़े सामान्य मिथकों, जैसे हृदय रोग सिर्फ अमीरों की बीमारी है, महिलाओं को हृदय रोग नहीं होता, हृदय रोग का पता नहीं चल सकता इसलिए इसके विषय में चिंता नहीं करनी चाहिए तथा यदि जेनेटिक है तो हम इससे बच नहीं सकते तथा शाकाहारी लोगों को हृदय रोग नहीं होता, के विषय में विस्तृत जानकारी देते हुए इससे जुड़े हुए तथ्यों की पूर्ण जानकारी भी दी। उन्होंने बताया कि हृदय से सम्बन्धी 80% बीमारियों से नियमित दिनचर्या के द्वारा बचा जा सकता है। उन्होंने हृदय रोग की संभावनाओं को रोकने के लिए धूम्रपान से बचाव, संतुलित आहार, शारीरिक गतिविधियों पर ध्यान देने की सलाह दी। महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार ने कहा कि यह सत्र सभी के लिए ज्ञानवर्धक साबित होगा।

स्वर्णिम विजय वर्ष के उपलक्ष्य में रेलवे सुरक्षा बल, क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र में परेड का आयोजन

1971 के भारत-पाक युद्ध में भारत की विजय के 50 वर्ष पूर्व पूर्ण होने पर रेलवे सुरक्षा बल, क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र, सूबेदारगंज, प्रयागराज में एक परेड का आयोजन किया गया। ज्ञात हो कि स्वर्णिम विजय वर्ष के उपलक्ष्य में दिनांक 13 से 19 दिसंबर के दौरान उत्तर मध्य रेलवे में कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। युद्ध में बलिदान देने वाले वीर शहीदों को श्री राजीव सिंह बुन्देला, सहायक सुरक्षा आयुक्त, श्री रवि कुमार सिवाच, निरीक्षक, श्री सुरजीत सिंह, उप निरीक्षक रेलवे सुरक्षा बल / क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र /सूबेदारगंज व 70 बल सदस्यों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई एवं सशस्त्र टुकड़ी द्वारा सलामी दी गई।



चिरेका में 66वाँ रेल सप्ताह समारोह आयोजित

चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना (चिरेका) में 66वाँ रेल सप्ताह समारोह 2021 10 दिसंबर, 2021 को बासंती सभागार में आयोजित किया गया। श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक, चिरेका ने इस समारोह की अध्यक्षता की समारोह में 101 कर्मचारियों और अधिकारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर श्रीमती नमिता कश्यप, अध्यक्षा, चिरेका महिला कल्याण संगठन सम्मानित अतिथि के रूप में एवं संगठन की अन्य सदस्याएं, श्री एस. डी. पाटीदार, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी उपस्थित थे। समारोह में सुरक्षा, सफाई, सबसे अच्छी उत्पादन शॉप, सबसे अच्छी समूह शॉप्स के उत्पादन, सर्वश्रेष्ठ भंडार एवं स्वास्थ्य व्यवस्था, सभी इकाइयों हेतु शील्ड एवं सर्वश्रेष्ठ स्कूल, शिक्षक और छात्रों को भी प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।



अन्तरराष्ट्रीय रेलवे उपस्कर प्रदर्शनी में चिरेका द्वारा लगाया गया स्टॉल बना आकर्षण का केंद्र

भारतीय रेल और कन्फेडरेशन आफ इंडियन इंडस्ट्री (CII) के सहयोग से प्रगति मैदान नई दिल्ली में 16 दिसंबर से 18 दिसंबर तक आयोजित अंतरराष्ट्रीय रेलवे उपस्कर प्रदर्शनी (IREE) 2021 का सफल आयोजन किया गया। इस उपस्कर प्रदर्शनी में चितरंजन रेलइंजन कारखाने ने भी हिस्सा लिया। चिरेका द्वारा नवविक्रेता विकास को लेकर बहुत सारे उपकरण प्रदर्शित किए गए। चिरेका स्टॉल विद्युत इंजनों में अपनाई जा रही नवीनतम तकनीक पर पोस्टरों के साथ सुसज्जित था, जिसने संभावित विक्रेताओं और जनता को आकर्षित किया। श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक चितरंजन रेलइंजन कारखाने सहित भारतीय रेल के अन्य अधिकारियों ने भी प्रदर्शनी में लगाए गए विभिन्न स्टालों का परिभ्रमण किया एवं इनकी प्रशंसा की।



भारतीय रेल ने मनाया संविधान दिवस

दिनांक 26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान को अंगीकृत किया गया था। इसी दिवस के याद में प्रतिवर्ष 26 नवम्बर को 'संविधान दिवस' मनाया जाता है। इस वर्ष 26 नवम्बर को श्री राम नाथ कोविंद, माननीय राष्ट्रपतिजी द्वारा संविधान की प्रस्तावना को पढ़ा गया और इसी अनुक्रम में भारतीय रेल के अंतर्गत सभी रेलवे जोन के महाप्रबंधकों सहित रेलकर्मियों ने लाइव वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 'संविधान दिवस' की प्रस्तावना को पढ़ा। पेश है, इन कार्यक्रमों पर एक नजर:

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

संविधान दिवस' के अवसर पर भारतीय संविधान की प्रस्तावना का पाठ करते हुए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक, श्री आलोक कुमार





दक्षिण पूर्व रेलवे

'संविधान दिवस' के अवसर पर भारतीय संविधान की प्रस्तावना का पाठ करते हुए दक्षिण पूर्व रेलवे की महाप्रबंधक सुश्री अर्चना जोशी

पश्चिम मध्य रेलवे

मुख्यालय जबलपुर एवं तीनों मण्डलों – जबलपुर, भोपाल एवं कोटा पर 'संविधान दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक श्री सुधीर कुमार गुप्ता एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा प्रस्तावना का पाठ किया गया।





उत्तर मध्य रेलवे

संविधान दिवस के अवसर पर उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में राष्ट्र के संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया, जिसमें महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार एवं अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।

पूर्वोत्तर सीमा रेल में अंतर रेलवे आरपीएफ तीरन्दाजी प्रतियोगिता संपन्न

अंतर रेलवे आरपीएफ तीरन्दाजी प्रतियोगिता का आयोजन 28 अक्टूबर, 2021 को एनएफआरएसए स्टेडियम, मालीगाँव में किया गया। पू. सी. रेल आरपीएफ स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित इस टूर्नामेंट का उद्घाटन पूर्वोत्तर सीमा रेल के महानिरीक्षक सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त, श्री प्रणव कुमार ने किया। टूर्नामेंट में पूर्वोत्तर सीमा रेल और दक्षिण पूर्व रेलवे के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। टूर्नामेंट में दक्षिण पूर्व रेलवे ओवरऑल चैंपियन बनी। दक्षिण पूर्व रेलवे के आरपीएफ कांस्टेबल श्री नितेश कुमार ने पहला स्थान हासिल किया, जबकि पूर्वोत्तर सीमा रेल के आरपीएफ कांस्टेबल श्री एस. आर. सिंह और श्री एन.जे. मनगंग ने टूर्नामेंट की ओवरऑल श्रेणी में क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान हासिल किया। टूर्नामेंट आयोजन समिति के अध्यक्ष लामडिंग के मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री मिगोम डोले और सचिव मालीगाँव के सहायक सुरक्षा आयुक्त (सीआईबी) श्री आर. एल. मीणा थे। टूर्नामेंट के दौरान पूर्वोत्तर सीमा रेल स्पोर्ट्स एसोसिएशन की तीरन्दाजी अकादमी ने तकनीकी सहायता प्रदान की। पू.सी. रेल के महानिरीक्षक सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त टूर्नामेंट के समापन समारोह में उपस्थित थे और विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए।



पहलवानों ने सीनियर नेशनल में जीते दो रजत पदक

पहलवानों ने सीनियर नेशनल में जीते दो रजत पदक

गोंडा, उत्तर प्रदेश में आयोजित हो रही सीनियर नेशनल कुश्ती प्रतियोगिता में उत्तर मध्य रेलवे के पहलवान रवि ने ग्रीकोरोमन शैली के 97 किलो ग्राम भार वर्ग में और विकास ने ग्रीकोरोमन शैली के 60 किलोग्राम भार वर्ग में रजत पदक जीता है। श्री रवि एवं श्री विकास, दोनों उत्तर मध्य रेलवे के आगरा मंडल में वाणिज्य विभाग में कार्यरत हैं। उत्तर मध्य रेलवे के कुश्ती कोच संदीप दहिया ने खिलाड़ियों को बधाई दी। उन्होंने 130 किलोग्राम भार वर्ग में चौथा स्थान प्राप्त करने वाले आर्यन पवार का भी उत्साहवर्धन किया। इन मेडल के साथ ही इन दोनों खिलाड़ियों ने 3 से 5 दिसंबर 2021 को साउथ अफ्रीका मे होने वाली कॉमनवेल्थ चौंपियनशिप के लिए भी क्वालीफाई कर लिया है, जहां ये राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करेंगे।





पहलवान रवि (बाएं) ने ग्रीकोरोमन शैली के 97 किलो और विकास (दाएं) ने ग्रीकोरोमन शैली के 60 किलो भार वर्ग में रजत पदक जीता

अलीपुरद्वार मंडल की कर्मचारी ने जीता स्वर्ण पदक

पू.सी. रेल के अलीपुरद्वार मंडल में कार्यरत एसडब्ल्यूआई सुश्री स्वप्ना बर्मन ने 60वीं राष्ट्रीय ओपन एथलेटिक्स चैंपियनशिप की ऊंची कूद (1.78 मीटर) स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। ओपन एथलेटिक्स चैंपियनशिप का आयोजन 15 से 19 सितंबर, 2021 तक वारंगल (तेलंगाना) में किया गया था।



उत्तर मध्य रेलवे की महिला टीम

ने अखिल भारतीय अंतर रेलवे क्रॉस कंट्री चैम्पियनशिप में जीता स्वर्ण पदक

दिनांक 17 दिसंबर 2021 को उदयपुर, राजस्थान में आयोजित हुई अखिल भारतीय अंतर रेलवे क्रॉस कंट्री चैम्पियनशिप में उत्तर मध्य रेलवे की महिला खिलाड़ियों की टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीता। उत्तर मध्य रेलवे की छवि यादव ने 10 किलोमीटर रेस में तीसरा स्थान प्राप्त किया। इसी क्रम में पुरुष टीम ने भी उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए चतुर्थ स्थान प्राप्त किया।

टीम में प्रयागराज मंडल में कार्यरत सुश्री छवि यादव, सुश्री नंदिनी गुप्ता, सुश्री रिशु सिंह तो उपस्थित थीं, किंतु चौथी खिलाड़ी समय से नहीं पहुंच सकी तो टीम की कोच रागिनी गौर ने टीम का हिस्सा बनने की अनुमति प्राप्त कर रेस पूरी की। उनके उल्लेखनीय



योगदान से टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर उत्तर मध्य रेलवे खेल संघ के अध्यक्ष श्री शरद मेहता तथा महासचिव श्री नितिन गर्ग ने पूरी टीम को बधाई दी।

अखिल भारतीय रेल सुरक्षा बल

बैडमिंटन, लॉन टेनिस व टेबल टेनिस प्रतियोगिता का हुआ समापन



दिनांक 22 नवम्बर, 2021 को अखिल भारतीय रेल सुरक्षा बल बैडमिंटन, लॉन टेनिस व टेबल टेनिस प्रतियोगिता का समापन समारोह महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे श्री प्रमोद कुमार के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त श्री रवीन्द्र वर्मा सहित उत्तर मध्य रेलवे के प्रमुख विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे।

इस अवसर पर महाप्रबंधक द्वारा विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण किया गया। उन्होंने इस तीन दिवसीय आयोजन के लिए आयोजक मंडल को भी बधाई दी। महानिरीक्षक रेल सुरक्षा बल द्वारा कार्यक्रम के समापन पर महाप्रबंधक को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। श्री मनोज सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दो मेट्रो कर्मियों ने देश का नाम रौशन किया

श्री सुमित मुखर्जी, श्री देवव्रत मजूमदार और चार अन्य लोगों की भारतीय टीम ने हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात की टीम को हराकर नोएडा में आयोजित एशिया और मध्य-पूर्व ब्रिज चैंपियनशिप जीती। इस जीत के साथ ही भारतीय टीम ने 2022 में इटली में होने वाली वर्ल्ड ब्रिज चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई कर लिया है। श्री सुमित मुखर्जी और श्री देवव्रत मजूमदार, दोनों ही मेट्रो रेलवे, कोलकाता के कर्मचारी हैं। श्री मुखर्जी वर्तमान में भारतीय रेल ब्रिज टीम के कप्तान हैं और श्री मजूमदार ने 2018 में जकार्ता एशियाई खेल में कांस्य पदक जीता था। इसके अलावा सुमित और देवव्रत ने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खिताब जीते हैं।



श्री सुमित मुखर्जी *श्री देवव्रत मजूमदार*

मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री मनोज जोशी ने उन्हें इस सफलता के लिए बधाई देते हुए आगामी विश्व ब्रिज चैंपियनशिप के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

उत्तर मध्य रेलवे : 'अखिल भारतीय अंतर रेलवे बॉडी बिल्डिंग चैम्पियनशिप' में जीता रजत पदक

चेन्नई में दिनांक 15 से 17 दिसंबर 2021 को आयोजित हुई अखिल भारतीय अंतर रेलवे बॉडी बिल्डिंग चैम्पियनशिप में उत्तर मध्य रेलवे के महीप कुमार ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए रजत पदक जीता। श्री महीप कुमार उत्तर मध्य रेलवे आगरा मंडल में जूनियर क्लर्क के पद पर कार्यरत हैं।

इनकी इस उपलब्धि पर उत्तर मध्य रेलवे खेल संघ के अध्यक्ष श्री शरद मेहता एवं खेल संघ के महासचिव श्री नितिन गर्ग ने इनको बधाई दी।

उत्तर मध्य रेलवे के कोच जीतेंद्र सिंह ने भी इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि पिछले वर्ष 2020 में भी कांस्य पदक जीता था। इसके अतिरिक्त महीप पॉवर लिफ्टिंग में भी रिकॉर्ड प्रदर्शनों के साथ कई पदक प्रात कर चुके हैं। इस प्रदर्शन के साथ महीप का चयन मिस्टर इंडिया प्रतियोगिता 2021-22 के लिए भी हो गया है।



पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर में 'अखिल भारतीय रेल सुरक्षा बल वॉलीबॉल प्रतियोगिता' का समापन





रेलवे बोर्ड द्वारा पश्चिम मध्य रेल को अखिल भारतीय रेल सुरक्षा बल वॉलीबॉल प्रतियोगिता कराने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई थी। पश्चिम मध्य रेल द्वारा 02 से 07 दिसम्बर, 2021 तक 'अखिल भारतीय रेल सुरक्षा बल वॉलीबॉल प्रतियोगिता' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न क्षेत्रीय रेलों से 16 पुरुष संवर्ग व 07 महिला संवर्ग की कुल 23 टीमों ने भाग लिया। पुरुष वर्ग वॉलीबॉल प्रतियोगिता का फाइनल मैच रेलवे सुरक्षा विशेष बल ने पूर्व रेलवे को 3-1 से हराकर जीता। समापन समारोह में महाप्रबंधक पश्चिम मध्य रेलवे श्री सुधीर कुमार गुप्ता तथा रेलवे सुरक्षा बल के महानिरीक्षक-सह-प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त श्री प्रदीप कुमार गुप्ता द्वारा पुरुष वर्ग की विजेता टीम रेलवे सुरक्षा विशेष बल, उपविजेता टीम पूर्व रेलवे एवं तृतीय स्थान प्राप्त दक्षिण रेलवे को ट्रॉफी प्रदान की गई। पश्चिम मध्य रेलवे, महिला कल्याण संगठन अध्यक्षा, श्रीमती संध्या गुप्ता एवं श्रीमती चारु गुप्ता ने महिला वर्ग की विजेता टीम दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, उपविजेता टीम पूर्व रेलवे एवं तृतीय स्थान प्राप्त रेलवे सुरक्षा विशेष बल को ट्रॉफी प्रदान की।

अखिल भारतीय रेल पॉवरलिफ्टिंग चैम्पियनशिप संपन्न





पश्चिम रेलवे की दोनों, पुरुष और महिला टीमों ने जीती चैम्पियनशिप

पश्चिम रेलवे खेलकूद संघ (WRSA) ने 7 से 10 दिसंबर, 2021 तक महालक्ष्मी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, मुंबई में आयोजित 17वीं पुरुष और 11वीं महिला अखिल भारतीय रेल पॉवरलिफ्टिंग चैम्पियनशिप की मेजबानी की। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक और पश्चिम रेलवे खेलकूद संघ के संरक्षक श्री आलोक कंसल और पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती तनुजा कंसल की उपस्थिति में 10 दिसंबर, 2021 को पुरस्कार वितरण और समापन समारोह सम्पन्न हुआ। चैम्पियनशिप में 13 क्षेत्रीय रेलवे और उत्पादन इकाइयों के 150 से अधिक पावरलिफ्टरों ने भाग लिया। विजेताओं को श्री कंसल और श्रीमती कंसल द्वारा पुरस्कार एवं ट्रॉफियाँ प्रदान की गईं। उल्लेखनीय है कि पुरुष वर्ग में पश्चिम रेलवे चैंपियन रही और दक्षिण पश्चिम रेलवे उपविजेता रही जबकि महिला वर्ग में भी पश्चिम रेलवे चैंपियन रही और उत्तर पश्चिम रेलवे उपविजेता रही।

उत्तर मध्य रेलवे के खिलाड़ियों का प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन

अखिल भारतीय अंतर रेलवे पॉवरलिफ्टिंग (शक्तितोलन) चैम्पियनशिप में उत्तर मध्य रेलवे के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए एक स्वर्ण एवं एक रजत पदक जीता। उत्तर मध्य रेलवे के आगरा मंडल में वरिष्ठ लिपिक पद पर कार्यरत अमनप्रीत सिंह ने +120 किग्रा भारवर्ग में 1077.5 किलो भार उठाकर स्वर्ण पदक और संदीप कुमार ने 105 किलोग्राम भार वर्ग में 925 किलोग्राम भार उठाकर रजत पदक जीता। महिलाओं में उत्तर मध्य रेलवे की शशि यादव नें 84 किलोग्राम भार वर्ग में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया।





ताशकन्द उज्बेकिस्तान में आयोजित सीनियर कॉमनवेल्थ चैंपियनशिप में भारतीय रेल की भारोत्तोलक सुश्री झिल्ली डालाबेहरा ने (बाएं) एवं भारोत्तोलक सुश्री पूनम यादव ने अलग-अलग भारवर्ग में रजत पदक जीत कर देश का नाम रौशन किया

सोनभद्र

श्री सुरेंद्र अग्निहोत्री

सोन पंखी पहाड़ों के पोखर में भरा जल, पीयू-पीयू करते चातक मना रहे बादल।
मिट्टी की सुगंध से निकाले घर से हल, भोर का सूरज हुआ फिर कितना निर्मल।
सूर्य सिन्होरा ताल में खिला रह कमल, भौंरे पराग के लिए गाते-आते प्रतिपल।
कोयल चूस रही मीठे-मीठे महुआ फल, पवन बीच-बीच आकर करता है छल।

'अग्निवेद' के गीत के भावों की तह में सोनभद्र को समझने के लिए पल-प्रतिपल सजग और संवेदनशील रहना जरूरी है। रोमांच और रहस्य के बीच आध्यात्मिकता से सराबोर, प्राकृतिक स्थलों का क्षेत्र सोनभद्र का भ्रमण अतीत के गौरवशाली इतिहास के साथ-साथ प्रकृति और प्राचीन लोक कला एवं संस्कृति को देखने समझने का अवसर प्रदान करता है। 'रामायण' और 'महाभारत' के साक्ष्य के आधार पर यहां मिले सांस्कृतिक प्रतीक बताते हैं कि जरासंध द्वारा महाभारत के युद्ध में कई शासकों को यहां कैदी बनाए रखा गया था। सोन नदी घाटी की गुफाओं में मूल निवासियों के प्रारंभिक निवास स्थान थे। ऐसा कहा जाता है कि 'भार' ने जिले में चेरो, सिरी, कोल और खरवार समुदायों के साथ बस्तियों का गठन किया था, जहां 5वीं सदी तक विजयगढ़ किले पर कोल राजाओं का शासन था। 11वीं से 13वीं शताब्दी के दौरान यह जिला 'दूसरी काशी' के रूप में प्रसिद्ध था। 9वीं शताब्दी ईसा पूर्व में ब्रह्मादत्त वंश के नागाओं द्वारा विभाजित किया गया था। 8वीं और 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व में, जिले का वर्तमान क्षेत्र कौशल और मगध में था। गुप्त काल के आगमन से पहले कुशाण और नागा भी इस क्षेत्र की सर्वोच्चता रखते थे। 7वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद यह 1,025 तक गुर्जर और प्रतिहारों के नियंत्रण में रहा। 1775 के बाद के दशक में, अंग्रेजों ने बनारस के राजाओं के अधिकतर प्रदेशों का प्रशासनिक नियंत्रण संभाला। वर्तमान में मिर्जापुर व सोनभद्र, दो अलग-अलग जिले हैं, सोनभद्र मे कुल तीन तहसीलें (रॉबर्ट्सगंज, घोरावल, बुद्धी) हैं। अपने अनूठेपन के लिए विश्वविख्यात सोनभद्र जनपद का सृजन 4 मार्च, 1989 के किया गया। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 7,388.80 वर्ग किमी है। इसकी सीमा बिहार, झारखण्ड छत्तीसगढ़ से मिलती है। जनपद का 54 प्रतिशत भूभाग वन हैं। जाड़े के दिनों में तापमान 10 से 20 डिग्री तक रहता है जबकि गर्मी में 21 से 40 डिग्री तक रहता है। वर्षा 1,134 मिमी आंकी गई है। सोनभद्र का मुख्यालय सोनभद्र नगर (राबर्ट्सगंज) है। जनपद खनिज सम्पदाओं से समृद्ध है। यहां



डोलोमाइट, माइका, संगमरमर, कोयला, बिल्डिंग स्टोन प्रचुर मात्रा में हैं। यहां यूरेनियम, सोना व हाइड्रोकार्बन का भी पता लगाया गया है।

यहाँ सोन, कर्मनाशा, चन्द्रप्रभा, रिहन्द, कनहर, रेणु, घाघरा, बेलन इत्यादि प्रमुख नदियां हैं। अनपरा, ओबरा में तापीय विद्युतगृह स्थित है। हिण्डालको ने एल्युमीनियम उत्पादन द्वारा विश्व में अपना स्थान बनाया है। अन्य प्राइवेट उद्योगों में कनो हाइटेक कार्बन प्लाण्ट व डाला-ओबरा में लगभग 150 स्टोन क्रशर इकाइयां स्थित है। यहाँ घांगर, बैगा, कोल, खरवार घासिया इत्यादि आदिवासी जातियाँ भी निवास करती हैं, जिनके अनेक प्रकार के लोकनृत्य मन को मोह लेते हैं। राजकुमारी चन्द्रकान्ता के प्रेम के किस्सों व तिलिस्म के लिए प्रसिद्ध विजयगढ़ दुर्ग, शिव प्रतिमाओं के मानव सभ्यता के विकास के गवाह आदिमानवों द्वारा बनाए गए गुफाचित्र, प्राकृतिक परिवर्तनों के 140 करोड़ वर्ष के साक्षी फॉसिल्स (जीवाश्म) आजादी के मतवालों की तीर्थस्थली व स्वतंत्रता आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु शहीद उद्यान, मुक्खा फाल के झरने की कल-कल और वन्य जीव विहार में कुलांचें भरते कृष्ण मृग व चिंकारा, प्रणय और शौर्य का प्रतीक वीर लोरिक पत्थर, सोनघाटी के विहंगम दृश्य और मूर्तियाँ स्थित हैं। निश्चित रूप से अद्भुत, विस्मयकारी, रोमांचकारी व आस्था से भरी है सोनभद्र यात्रा। यात्रा के लिए सबसे उत्तम समय जुलाई से दिसम्बर तक का माह रहता है जब प्रकृति पूरे यौवन के साथ पहाड़ों, कन्दराओं में अपना वैभव लुटा चुकी होती है। वनों से आती वासन्ती बयार के बीच आनन्द मग्न होने का अविरल अवसर सुलभ होता है। रॉबर्ट्सगंज से पश्चिम में (रॉबर्ट्सगंज-घोरावल रोड) 1.5 किमी पर बरैला, शिव मंदिर, 5 किमी पर परासी शहीद उद्यान, 8 किमी पर गौरीशंकर शिवमंदिर, 26 किमी पर महुअरिया वन्य जीवन बिहार, 40 किमी पर शिवद्वार शिवमंदिर, 40 किमी पर मुक्खा जल प्रपात और गुफा चित्र हैं। राबर्ट्सगंज से दक्षिण-पूर्व में (चुर्क होकर) 7 किमी पर पंचमुखी गुफा चित्र, सोनाघाटी व शिवमंदिर, 18 किमी पर बुद्ध व शिवमंदिर, 22 किमी पर विजयगढ़ दुर्ग, रॉबर्ट्सगंज से दक्षिण (सीधे चोपन की ओर) - 10 किमी पर मारकुण्डी लोरिक पत्थर तथा सोन व्यू और 16 किमी पर सलखन फॉसिल्स पार्क है।

बरैला - इस स्थान पर भगवान शिव का एकमुखी शिवलिंग स्थित है। आठवीं शताब्दी का यह शिवलिंग बलुआ पत्थर से निर्मित है। यहाँ बसंत पंचमी, शिवरात्रि व सावन माह में मेले का आयोजन होता है।

गौरीशंकर - इस स्थान पर भगवान शिव की ग्यारहवीं शताब्दी की मूर्ति एक विशाल वट वृक्ष के नीचे स्थित है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर प्राचीन व दुर्लभ मूर्तियाँ हैं। यहाँ बसंत पंचमी, शिवरात्रि को विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। सावन में कांवड़ियों व श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।

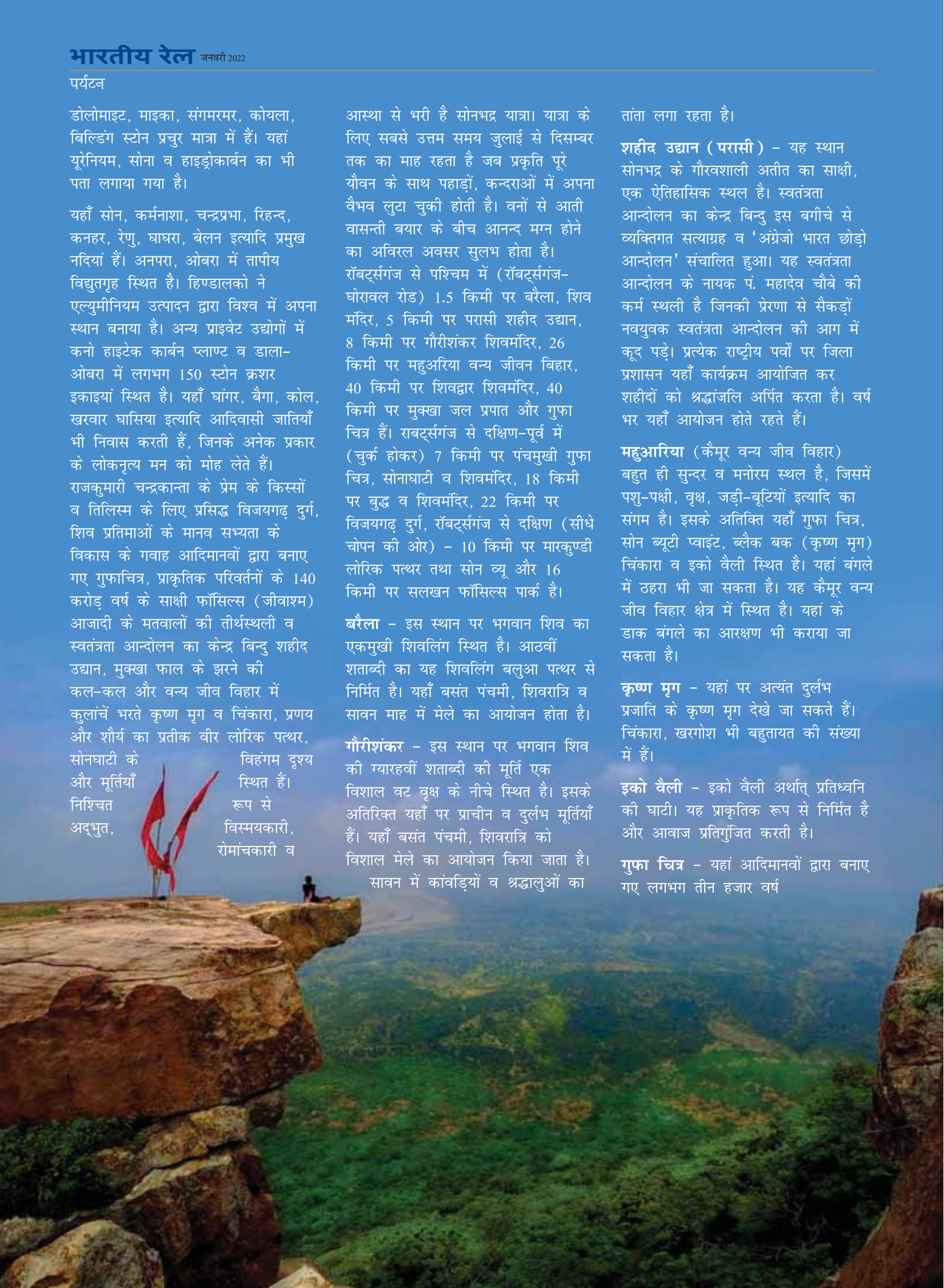
शहीद उद्यान (परासी) - यह स्थान सोनभद्र के गौरवशाली अतीत का साक्षी, एक ऐतिहासिक स्थल है। स्वतंत्रता आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु इस बगीचे से व्यक्तिगत सत्याग्रह व 'अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन' संचालित हुआ। यह स्वतंत्रता आन्दोलन के नायक पं. महादेव चौबे की कर्म स्थली है जिनकी प्रेरणा से सैकड़ों नवयुवक स्वतंत्रता आन्दोलन की आग में कूद पड़े। प्रत्येक राष्ट्रीय पर्वों पर जिला प्रशासन यहाँ कार्यक्रम आयोजित कर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता है। वर्ष भर यहाँ आयोजन होते रहते हैं।

महुआरिया (कैमूर वन्य जीव विहार) बहुत ही सुन्दर व मनोरम स्थल है, जिसमें पशु-पक्षी, वृक्ष, जड़ी-बूटियों इत्यादि का संगम है। इसके अतिक्ति यहाँ गुफा चित्र, सोन ब्यूटी प्वाइंट, ब्लैक बक (कृष्ण मृग) चिंकारा व इको वैली स्थित है। यहां बंगले में ठहरा भी जा सकता है। यह कैमूर वन्य जीव विहार क्षेत्र में स्थित है। यहां के डाक बंगले का आरक्षण भी कराया जा सकता है।

कृष्ण मृग - यहां पर अत्यंत दुर्लभ प्रजाति के कृष्ण मृग देखे जा सकते हैं। चिंकारा, खरगोश भी बहुतायत की संख्या में हैं।

इको वैली - इको वैली अर्थात् प्रतिध्वनि की घाटी। यह प्राकृतिक रूप से निर्मित है और आवाज प्रतिगुंजित करती है।

गुफा चित्र - यहां आदिमानवों द्वारा बनाए गए लगभग तीन हजार वर्ष



पुराने गुफाचित्र स्थित हैं जो देशी-विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र हैं।

शिवद्वार - यह प्राचीन, लेकिन उत्कृष्ट शिव मंदिर जिला मुख्यालय से लगभग 40 किमी उत्तर-पश्चिम और घोरवाल से 10 किमी दूर है। इस शानदार शिव मंदिर में प्रवीण मुद्रा में शिव और पार्वती की चौंकाने वाली ब्लैकस्टोन मूर्ति है जोकि 3 फीट ऊंची है। ऐसा लगता है कि यह शिव साधना के लिए एक महान जगह हो सकती है। शिवरात्रि यहां का मुख्य त्यौहार है। सावन के दौरान कांवड़ियों द्वारा जलाभिषेक की परंपरा है। लोग वहां पर भगवान शिव की पूजा करने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से समूहों में आते हैं। पुरातात्विक विभाग द्वारा संचालित एक संग्रहालय है, जिसमें आस-पास के क्षेत्रों से एकत्रित कई मूर्तियां हैं। यहां देशी-विदेशी पर्यटकों व श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। यहां बसंत पंचमी व शिवरात्रि को विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। यह अद्वितीय मूर्ति विश्व की उत्कृष्ट व अनूठी धरोहर है। सावन माह में कांवड़िये यहीं पर जलाभिषेक कर अपनी कांवड़ यात्रा समाप्त करते हैं।

गोथानी शिव मंदिर (गुप्त काशी): ग्रैंड प्राचीन मंदिरों के कारण इसे 'गुप्त काशी' के नाम से जाना जाता है। इस जगह के धार्मिक महत्त्व को इस तथ्य के कारण हजार गुणा किया गया है कि यह रेणु, सोन और विजूल नदी के संगम पर स्थित है। 11वीं और 12वीं शताब्दी से संबंधित काले पत्थर की कई कलात्मक मूर्तियां यहां प्रचलित हैं। यह जनजातियों का मुख्य तीर्थ केंद्र है। शिवरात्रि यहां मुख्य त्यौहार और कार्य है। इसमें स्थानीय कलाकार अपनी कला प्रदर्शित करते हैं और दर्शकों, आगंतुकों और पर्यटक का मनोरंजन करते हैं और इस प्रकार जीवित रहते हैं और अपनी कला परंपरा और संस्कृति को समृद्ध करते हैं।

कुंड वासिनी धाम (कुद्री देवी): महान धार्मिक और ऐतिहासिक महत्त्व का यह स्थान जिला मुख्यालय के 35 किमी पश्चिम में दक्षिण में नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह महान पौराणिक मूल्य का मंदिर खजुराहो शैली में खुता और चूड प्रणाली पर बनाया गया है। सीमेंट और



गुर्डर्स इत्यादि का पूरा उपयोग नहीं है। भक्तों की बड़ी संख्या देवी की पूजा करने के लिए साल भर यात्रा करती है। यह पर्यटन की दृष्टि से भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

अमिला भवानी धाम: ओबरा मंडल की तारिया रेंज की पहाड़ियों में 77 किमी की दूरी पर स्थित इस जगह के लिए लोगों में बहुत सम्मान है। स्थानीय निवासियों के अलावा बिहार, मध्य प्रदेश और झारखंड आदि जैसे आसपास के राज्यों के भक्त बड़े समूहों में यहां आते हैं।

पंचमुखी महादेव: चुर्क पहाड़ी पर स्थित, जिला मुख्यालय से 3 किमी दूर। ऐसा कहा जाता है कि पंचमुखी पांचवीं शताब्दी में दिखाई दिए। निचली पहाड़ियां गुफा चित्रों और नक्काशी से भरी हुई हैं, जो बताती हैं कि यह जगह जनजातियों का निवास स्थान रही होगी और उन्होंने अपनी संस्कृति और परंपरा के अनुरूप कलात्मक तरीके से अपनी इच्छाओं और भावनाओं को दर्ज किया होगा। यहां सोलह ऐसी ऐतिहासिक गुफाएं हैं जो बड़ी संख्या में पर्यटकों और भक्तों को आकर्षित करती हैं।

मुक्खा फॉल - यह बहुत सुन्दर जल प्रपात है। बरसात के दिनों में यहां प्रकृति प्रेमियों व पर्यटकों का मेला लगा रहता है। दूधिया जल पहाड़ों से अठखेलियां करता प्राकृतिक झरनों से नीचे गिरता है तो मन मोहित करने वाला दृश्य उत्पन्न करता है। प्रकृति ने अपना पूरा यौवन जैसे जल प्रपात के माध्यम से उंड़ेल दिया प्रतीत होता है। चूंदड़ी जल प्रपात बहुत सुन्दर जल प्रपात है।

विजयगढ़ दुर्ग, मऊ - इस दुर्ग का निर्माण अतिप्राचीन काल में हुआ। इस पर वनवासी राजाओं का भी आधिपत्य रहा। इस दुर्ग के अंतिम स्वतंत्र शाक राजा चेत सिंह रहे। बाद में इस पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। यह तिलस्मी दुर्ग है। उपन्यासकार बाबू देवकीनन्दन खत्री ने इस





दुर्ग व चन्द्रकान्ता की प्रेमकथा का अपनी रचना 'चन्द्रकान्ता' में बखूबी वर्णन किया है। इस उपन्यास पर आधारित धारावाहिक 'चन्द्रकान्ता' अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका है। विजयगढ़ दुर्ग पर स्थित राम सागर तालाब स्थापत्य का नमूना है जहाँ वर्ष में कभी भी पानी कम नहीं होता है। सावन माह में कांवड़िए इसी तालाब का पवित्र जल भरकर कांवड़ यात्रा आरंभ करते हैं।

मऊ – यहाँ गौतम बुद्ध की कई मूर्तियां व शिलालेख बिखरे पड़े हैं। यहाँ संग्रहालय निर्माणाधीन है। मऊ गांव में भगवान शिव का एकमुखी शिवलिंग व सहस्त्र शिवलिंग तथा कई दुर्लभ मूर्तियां स्थित हैं।

मारकुण्डी – यहां से संपूर्ण सोनघाटी का विहंगम दृश्य देखकर 'सोन इको प्वांट' पर चाय पी जा सकती है। लोक गायकों द्वारा गाए जाने वाले 'लोरिकी' में वर्णित नायक लोरि मंजरी के प्रेम और वीरता का प्रेथिक लोरिक पत्थर है।

सोनभद्र फॉसिल्स पार्क: सोनभद्र में एक और फॉसिल पार्क की खोज की गई। चोपण विकास खंड के तहत बदागांव गांव में 150 करोड़ रुपये से अधिक जीवाश्म पाए गए। यहां सलखान गांव के पार्क में पाए गए जीवाश्मों की तुलना में जीवाश्म अधिक हैं। सोनभद्र जिले में एक और जीवाश्म पार्क की पहचान और खोज के बाद जिले को न केवल उत्तर प्रदेश में बल्कि विश्व मानचित्र पर भी अपना स्थान मिला है। जिले में यह सम्मान है क्योंकि जिले में दो जीवाश्म पार्क पाए गए थे।

अब सोनभद्र जिला को भाग्यशाली जगह माना जा रहा है जहां पृथ्वी पर जीवन का पहला सबूत पाया गया था। बड़ी संख्या में जीवाश्मों की खोज के बाद हाइड्रोकार्बन, यूरेनियम और फॉस्फोराइट खोजने की संभावना बढ़ गई है। बदागांव का नया जीवाश्म पार्क तब खोजा गया था जब लखनऊ के बीरबल साहनी संस्थान के एक वैज्ञानिक डॉ. मुकुंद शर्मा, सलखान गांव में जीवाश्म पार्क में थे। इस बीच, एक चरवाहा वहां आया और उनसे उसके साथ आने के लिए कहा। वे बादागांव गांव के जाट शंकर पहाड़ी पहुंचे और देखा कि साल्खन और बदागांव गांवों के जीवाश्म समान थे। बाद में, वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ये जीवाश्म स्ट्रैमेटोलाइट थे और 150 करोड़ साल से अधिक उम्र के थे। अध्ययन और शोध के बाद यह तथ्य प्रकाश में आया कि भूवैज्ञानिक जॉन ओडोन ने जीवाश्मों की उपस्थिति को स्वीकार कर लिया था, लेकिन लोगों को उनके बारे में जानकारी नहीं दी थी। उन्होंने इन जीवाश्मों को नींबू-पत्थर के रूप में वर्णित किया। डार्विन ने विकासवाद के सिद्धान्तों की पुष्टि फॉसिल्स से की। फॉसिल्स का निर्माण समुद्र में होता है यानि सोनभद्र में कभी समुद्र की लहरें हिलोरें मारा करती थीं। लापरवाही के कारण अपने अनेक कीमती खनिज पदार्थ तथा प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर होने के बाद भी यह जिला विकास की दौड़ में पिछड़ गया है। तलाश है सोनभद्र को उस भागीरथ की, जो विकास की गंगा लाकर देवकी नन्दन खत्री के रहस्य रोमांचकारी उपन्यास की पृष्ठभूमि के नगर विजयगढ़ को उसके अतीत का गौरव दिला सके।

सोनभद्र
कैसे पहुँचे



रेल मार्ग

जिला मुख्यालय के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन (रॉबर्ट्सगंज) है जो चुनार (दिल्ली-हावड़ा लाइन) से लूप लाइन पर है। जिला सोनभद्र में चोपन, रेणुकूट, शक्तिनगर आदि कई अन्य स्टेशन हैं।



सड़क मार्ग

सोनभद्र सड़क से लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी, मिर्जापुर आदि से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। सोनभद्र आने का सबसे आसान तरीका वाराणसी या मिर्जापुर तक ट्रेन/वायुमार्ग है, फिर सोनभद्र के लिए बस/निजी टैक्सी लें, जो वाराणसी और मिर्जापुर से 24 घंटे उपलब्ध हैं।



वायु मार्ग

सोनभद्र के लिए निकटतम हवाई अड्डा लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है जो जिला वाराणसी में है और रॉबर्ट्सगंज (जिला मुख्यालय) से 110 किमी दूर है। वाराणसी से विभिन्न प्रमुख शहरों अर्थात् दिल्ली, आगरा, खजुराहो, कोलकाता, मुंबई, लखनऊ और भुवनेश्वर इत्यादि लिए सीधी उड़ानें हैं।

डिजिटल मीडिया की हदें और सरहदें

प्रो. संजय द्विवेदी

विश्व के मशहूर लेखक मारियो वर्गास लियोसा कहते हैं, 'Journalism should be more like science. As far as possible, facts should be Verified. If journalists want long-term credibility for their profession, they have to go in that direction.' यानी पत्रकारिता को बहुत कुछ विज्ञान की तरह होना चाहिए। जहां तक संभव हो, तथ्य सत्यापन योग्य होने चाहिए। यदि पत्रकार टिकाऊ विश्वसनीयता चाहते हैं, तो उन्हें इसी दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। मारियो का ये कथन 'सोशल मीडिया', जिसे हम 'न्यू मीडिया' भी कह सकते हैं, की आवश्यकता को दर्शाता है।

हर एक शताब्दी अपनी किसी न किसी चीज के लिए पहचानी जाती है। ऐसे ही 21वीं शताब्दी 'इंटरनेट और सोशल मीडिया' के युग की शताब्दी मानी जा रही है। मीडिया के बदलते आयामों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मौजूदा समय बदलाव का समय है। संप्रेषण के ऐसे नए तरीके और नए माध्यम सामने आए हैं, जो पूरी तरह हमारे जीवन का हिस्सा बन गए हैं। लोगों को जोड़ने वाला सोशल मीडिया ऐसा ही एक माध्यम है, जिसे हमने जीवन के एक अटूट हिस्से के रूप में अपनाया है। आज सोशल मीडिया हमारे जीवन के कई पहलुओं को तय कर रहा है। सोशल मीडिया रोटी, कपड़ा और मकान की तरह हमारी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है। कंप्यूटर और इंटरनेट पर आधारित डिजिटल क्रांति ने अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज तीनों को प्रभावित किया है। फेसबुक, ट्विटर और व्हाट्सऐप जैसे ऑनलाइन सोशल प्लेटफॉर्म्स के बिना आज जीवन की कल्पना करना बेमानी है। इन सोशल प्लेटफॉर्मों से बनी सोसाइटियों में सबके अपने-अपने सत्य हैं और देखा यह जाता है कि लोग एक आंशिक सत्य को ही पूर्ण सत्य बनाकर आगे बढ़ा देते हैं। अपने आंशिक सत्य के सामने वह दूसरे के पूर्ण सत्य को देखना भी नहीं चाहते। सोशल मीडिया ऐसा माध्यम है, जिस पर एक बार संदेश प्रसारित हो गया, तब उसका नियंत्रण हमारे हाथ में नहीं रहता। वह समाज के सामने किस प्रकार प्रस्तुत होगा, समाज पर किस प्रकार का प्रभाव डालेगा, यह तय नहीं है। विचार किए बिना प्रसारित किया गया यह आंशिक सत्य समाज में कई बार तनाव का कारण बनता है।



दुनियाभर में सोशल मीडिया का क्रेज किस तरह बढ़ रहा है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अब दुनियाभर में सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वालों की संख्या, इसे इस्तेमाल नहीं करने वालों की संख्या से ज्यादा हो गई है। 'हूटसूट' और 'वी आर सोशल' की रिपोर्ट के मुताबिक, दुनियाभर में सोशल मीडिया यूजर्स की संख्या 3 अरब 96 करोड़ हो गई है, जो दुनिया की आबादी का 51 प्रतिशत है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले एक साल में दुनियाभर में सोशल मीडिया यूजर्स की संख्या में 10 फीसदी से ज्यादा का इजाफा हुआ है। इस दौरान 37 करोड़ 6 लाख लोग सोशल मीडिया से जुड़े हैं। अगर इसका औसत निकाला जाए तो हर दिन 10 लाख यूजर्स और हर सेकंड 12 लोग सोशल मीडिया से जुड़े हैं। 'डेटा रिपोर्टल' नामक एक रिपोर्ट के अनुसार, सोशल मीडिया पर एक यूजर रोजाना औसतन 2 घंटे 22 मिनट का समय बिताता है। अगर सोशल मीडिया पर सभी यूजर्स के द्वारा बिताए गए वक्त को जोड़ दिया जाए, तो हर दिन 10 लाख साल के बराबर का समय सिर्फ सोशल मीडिया पर ही खर्च हो जाता है। ये आंकड़े आपको यह बताने के लिए काफी हैं कि वर्तमान समय में सोशल मीडिया की क्या प्रासंगिकता है। मेरा मानना है कि सोशल मीडिया की अच्छाईयों और बुराईयों दोनों पर हमें चर्चा करनी चाहिए, तभी हम किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं।

सूचना क्रांति के इस दौर ने साहित्य और संस्कृति को फिर से एक नई जगह उपलब्ध करवाई है। और इस जगह का नाम है सोशल मीडिया। आज दुनिया भर की ज्ञान-विज्ञान की किताबें इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। सोशल मीडिया द्वारा हम अपने प्राचीनतम इतिहास की जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। हमारे वेद, पुराण, श्रुतियां, उपनिषद, महाकाव्य और जितने भी ग्रंथ हैं, विभिन्न विषयों पर ऋषि मुनियों ने जिनकी रचनाएं की है, उन सब की जानकारी हमें आज केवल एक क्लिक की दूरी पर प्राप्त हो जाती है। हिंदी साहित्य में लेखन की विभिन्न विधाओं में आज नया लेखक मंच स्थापित हो चुका है, जो सोशल मीडिया पर ही अपनी रचनाओं को प्रकाशित कर रहा है। आप कह सकते हैं कि नई तकनीक के जरिए साहित्य में लोकतंत्र बन रहा है। फेसबुक, ट्विटर पर लिखने वाले लेखक किसी से पूछ कर, सहमति या स्वीकृति लेकर नहीं लिख रहे हैं। ये नए लेखक प्रयोग कर रहे हैं। यही साहित्य का लोकतंत्र है। ये हो सकता है कि नए मंचों, नए माध्यमों पर जो आए, वह कच्चा हो, सुघड़ ना हो। लेकिन समय की छलनी में छनकर जो कुछ भी सार्थक है, काम का है, वो बचा रह जाएगा। एक दौर था, जब साहित्य प्रकाशन के लिए रचनाकार प्रकाशकों के पास जाते थे या

फिर प्रकाशक प्रतिभाओं को ढूंढ़ने के लिए हिन्दुस्तान की सड़कें नापते थे, लेकिन पिछले एक दशक से भाषा की उन्नति और प्रतिभा की खोज का सरलीकरण सोशल मीडिया के माध्यम से हो रहा है। किताबों की जगह अब सोशल मीडिया और स्मार्टफोन ने ले ली है। किसी जमाने में हम अखबार के संपादकीय पढ़ा करते थे। लेकिन अब नया दौर है, स्मार्टफोन पर ही हम लोग न्यूज ऐप से समाचार पढ़ लेते हैं। हालांकि सोशल मीडिया ने अपनी एक नई भाषा गढ़ ली है। भाषा और शब्दों के सौंदर्य, मर्यादा, गरिमा और स्वरूप की चिंता करने वाले सभी लोग इस नई भाषा के प्रभाव और भविष्य पर चिंतित हैं। कुछ लोग ये भी कहते हैं कि इससे पढ़ने की आदत खत्म होती जा रही है। लेकिन मेरा मानना है कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं और अपवाद हर जगह मौजूद हैं। आप देखिए कि हर तकनीकी आविष्कार निरपेक्ष होता है, जो हर तरह के काम के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। चाहे वह अच्छा हो या बुरा। तो क्यों ना हम किसी भी चीज के सकारात्मक पक्ष की बात ज्यादा करें, ताकि हमारे विचार भी सकारात्मकता की ओर उन्मुख हों।

सोशल मीडिया पर धार्मिक साहित्य के माध्यम से हम भारतीय संस्कृति का भी प्रचार-प्रसार कर सकते हैं। साहित्य का जितना प्रचार-प्रसार होगा, जितनी उपलब्धता होगी, उसका उतना ही विस्तार होगा। और जब साहित्य का विस्तार होगा, तो यह साहित्य के साथ साथ समाज के लिए भी कल्याणकारी होगा। सोशल मीडिया एक अदृश्य भूमिका निभाकर समाज में सामाजिक चेतना, नैतिकता एवं धार्मिक मूल्य तथा मानवीय चरित्र का निर्माण कर सकता है। साहित्य शब्द दो शब्दों से मिलकर बनता है। सः और हितः, यानी एक ऐसा तरीका, जिसमें किसी एक वर्ग-जाति-धर्म-समाज-समूह-संप्रदाय या देश की जगह, समस्त विश्व और समाज के कल्याण की भावना निहित हो। लेकिन बाजार ने हमारे भीतर की रचनात्मकता को भी नकली और सतही बना दिया है। ऐसे में सिर्फ साहित्य एक रास्ता है, जहां हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए एवं बचाए रख सकते हैं और मुझे पूरी उम्मीद है कि सोशल मीडिया इसमें एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आज न्यू मीडिया के दौर में सूचनाओं का आदान-प्रदान काफी आसान हो गया है। सोशल मीडिया भी आज एक मीडिया की भूमिका निभा रहा है या फिर ऐसा कहें कि यह भी मीडिया संस्थानों का एक अभिन्न अंग बन गया है। मेरा मानना है कि तकनीक का इस्तेमाल हम अच्छे परिणामों के लिए करते हैं, लेकिन उसके साथ-साथ इसके कुछ दुष्परिणाम भी होते हैं। आज खबरें जितनी तीव्र गति से हर किसी के मोबाइल में पहुंच जाती हैं, उतनी ही तेजी से फेक न्यूज भी फैलाई जा रही है। मेरा मानना है कि फेक न्यूज आज सोशल मीडिया के लिए अभिशाप है। भारत में सूचना क्रांति के निरंतर प्रसार और सोशल मीडिया जैसी नई तकनीकों के आने से सूचनाओं के कई स्रोत लोगों को उपलब्ध हो गए हैं। पहले सूचनाएं एक



निर्धारित प्रक्रिया से होकर ही लोगों तक पहुंचती थीं। उनके पीछे सीमित लोग थे, जो कायदे और कानून से चलते थे, लेकिन तकनीक ने सब कुछ बदल दिया। आज हर व्यक्ति प्रकाशक है। तकनीक ने यह सुविधा सबको दे दी है। इसलिए सूचनाओं के स्रोत असंख्य हो गए हैं। जाहिर है, इस कारण अब हर कोई अपनी बात अपने तरीके से कहना चाहता है। इसमें कुछ लोग जिम्मेदार हैं, तो उनसे कई गुना ज्यादा लोग जिम्मेदारी के पास भी नहीं फटकते। इससे आम आदमी दुविधा में पड़ जाता है कि वह किसे सही माने और किसे गलत। एक ही सूचना किसी खास समुदाय के लिए अच्छी हो सकती है, तो किसी और के लिए बुरी। विकसित देशों के नागरिकों का सामना इस प्रक्रिया से थोड़ा पहले हुआ, लिहाजा वे अपने विवेक से फैसला करते हैं कि किस चीज को सही मानकर उपयोग में लाना उनके लिए ठीक रहेगा। लेकिन भारत जैसे विकासशील देश में, जहां शिक्षा और जागरूकता का स्तर एक जैसा नहीं है, वहां लोग खबरों और सूचनाओं के अनेक विकल्पों के बीच दुविधा में पड़ जाते हैं। कई बार वे तथ्यों की जांच नहीं कर पाते और गलत को सही मान बैठते हैं।

वर्ष 2019 में माइक्रोसॉफ्ट की एक सर्वे रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत में इंटरनेट उपभोक्ताओं को फर्जी खबरों का सबसे अधिक सामना करना पड़ता है। दुनिया के 22 देशों में किए गए सर्वेक्षण के बाद तैयार की गई इस रिपोर्ट में कहा गया था कि 64 फीसदी भारतीयों को फर्जी खबरों का सामना करना पड़ रहा है, और यह चिंता की बात इसलिए है क्योंकि वैश्विक स्तर पर यह आंकड़ा 57 फीसदी का है। इस रिपोर्ट की सबसे अहम बात यह भी कि फर्जी खबरों के प्रचार-प्रसार में परिवार या दोस्तों की भी अहम भूमिका होती है। भारत इंटरनेट और स्मार्टफोन्स के सबसे बड़े बाजार के तौर पर विकसित हो रहा है। अमेरिका की कंपनी सिस्को के मुताबिक, वर्ष 2021 तक भारत में स्मार्टफोन इस्तेमाल करने वालों की तादाद दोगुनी होकर लगभग 83 करोड़ तक पहुंचने की संभावना है। इसके अलावा वर्ष 2022 तक भारत में इंटरनेट डाटा की खपत आज के मुकाबले पांच गुना ज्यादा बढ़ने की संभावना है। भारत में फेसबुक इस्तेमाल करने वालों की तादाद लगभग 30 करोड़, जबकि व्हाट्सऐप इस्तेमाल करने वालों की संख्या लगभग 20 करोड़ है। ट्विटर के उपभोक्ताओं की तादाद भी बढ़ कर तीन करोड़ से ज्यादा हो गई है। इन तीनों के लिए भारत सबसे बड़ा बाजार है और इन्हीं तीनों माध्यमों से फेक न्यूज का सबसे ज्यादा ज्यादा प्रचार हो रहा है।

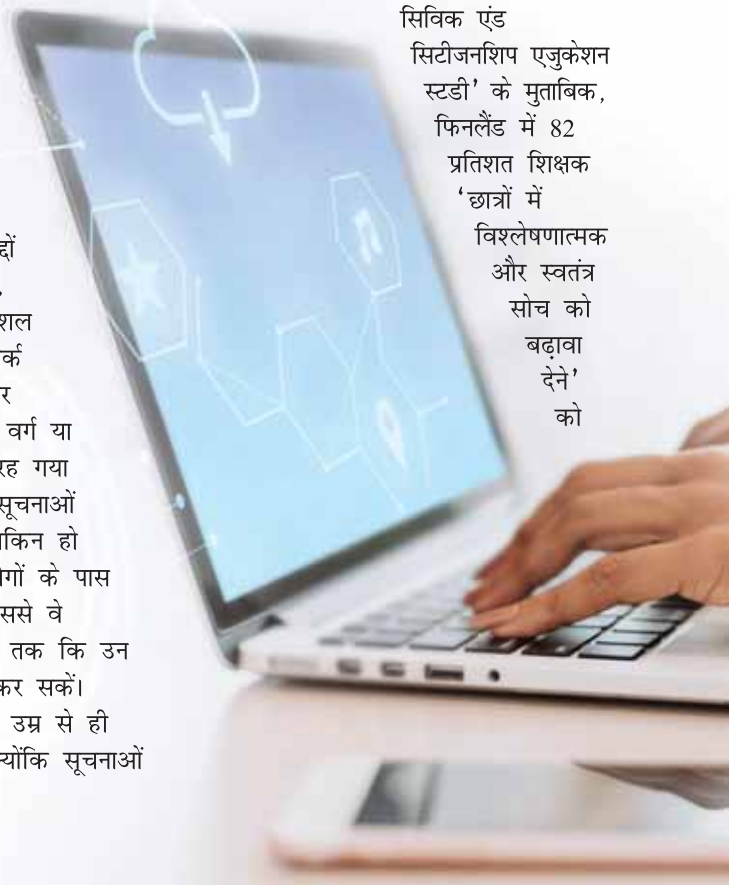
हमें फेक न्यूज पर मलेशिया, फिलीपींस और थाइलैंड की तरह सख्त नियम बनाने की आवश्यकता है। मलेशिया के कानून के मुताबिक फेक न्यूज की वजह से अगर मलेशिया या मलेशियाई नागरिकों को नुकसान होता है, तो इसे फैलाने वाले पर करीब 1 लाख 23 हजार अमेरिकी डॉलर यानी लगभग 90 लाख रुपये का जुर्माना और छह साल की सजा हो सकती है। फिलीपींस में गलत जानकारी फैलानों वालों को 20 साल तक की कैद की सजा का प्रावधान करने की तैयारी चल रही है।

थाइलैंड में साइबर सिक्योरिटी लॉ कार्य करता है, जिसके तहत गलत सूचना फैलाने पर 7 साल तक की कैद की सजा हो सकती है। सोशल मीडिया के इस दौर में 'फैक्ट' और 'फिक्शन' एक ही घाट पर पानी पीते हैं। इसे सोशल मीडिया का दूसरा अवतार कह सकते हैं, जिसे तकनीकी भाषा में सोशल मीडिया 'टू पॉइंट ओ' (2.0) कहा जा सकता है। अमेरिका के मशहूर लेखक निकोलस कार ने अपनी किताब 'द शैलोज' में लिखा है कि इंटरनेट के इस्तेमाल के कारण हम अपने दिमाग का प्रयोग बहुत कम करने लगे हैं, क्योंकि हर सामग्री इंटरनेट पर उपलब्ध है। इस वजह से तार्किक विश्लेषण करने की हमारी क्षमता भी घट रही है और हम चीजों पर आसानी से विश्वास भी करने लगे हैं। प्रतिष्ठित मीडिया कंपनी बजफीड की तरफ से फेसबुक के छह बड़े पेजों की एक हजार पोस्ट का सर्वे किया गया। इस सर्वे में ये पता चला कि जिन पेजों पर सच्ची खबरों का अनुपात सबसे कम था, उन्हें सबसे ज्यादा लाइक, शेयर और कमेंट प्राप्त हुए थे। इन पेजों पर 38 फीसदी खबरें या तो सच और झूठ का मिश्रण थीं या फिर पूरी तरह झूठ थीं। इसलिए हमें बेहद सावधान रहने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री बनने के बाद वर्ष 2015 में जब श्री नरेंद्र मोदी अमेरिका गए थे, तब उन्होंने फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग से मुलाकात की थी। इस दौरान उन्होंने एक सेशन में हिस्सा लिया, जिसमें सोशल मीडिया पर चर्चा की गई। इस चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री ने कहा था कि 'खबरों को फॉरवर्ड करने का जो फैशन है, उस पर वेरिफिकेशन की संभावना होना जरूरी है।'

संकट का समय हमेशा से ही ऐसा दौर माना जाता रहा है, जब अफवाहों और षड्यंत्र के सिद्धांतों का बोलबाला होता है। लोगों के पास पुख्ता जानकारियां कम होती हैं और भय एवं आशंकाएं बहुत ज्यादा। ऐसे में वे कई तथ्यहीन चीजों पर विश्वास करने के लिए तैयार हो जाते हैं, और यह सब हमें कोरोना महामारी के दौरान देखने को मिला है। इस दौर में अकेला कोरोना ही लोगों को नहीं डरा रहा है, बल्कि फेक न्यूज भी लोगों को परेशान कर रही है। लॉकडाउन के दौरान लोग घरों में बंद थे और वे अपना काफी समय इंटरनेट की विभिन्न वेबसाइटों, खासकर सोशल मीडिया पर व्यतीत कर रहे थे। इस संदर्भ में मई 2021 में आई एक रिपोर्ट हमें ये बताती है कि लॉकडाउन के बाद से देश के लोग अब सोशल मीडिया पर 87 फीसदी अधिक समय बिता रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, पहले लोग सोशल मीडिया पर प्रतिदिन औसतन 150 मिनट का समय बिताते थे, लेकिन अब यह समय बढ़कर 280 मिनट प्रतिदिन हो गया है। इसमें से लोग ज्यादातर समय फेसबुक, व्हाट्सऐप और ट्विटर पर बिताते हैं। तकरीबन यही हाल बाकी दुनिया का भी है। समय बिताने के लिए फिलहाल लोगों के पास यही सबसे अच्छा तरीका है। दूसरी तरफ, फर्जी खबरें चलाने वालों के लिए भी यही सबसे अच्छा मौका है, जब लोगों तक सबसे आसानी से पहुंचा जा सकता है।

आज हम ऐसे दौर में रह रहे हैं, जहां सूचनाओं का अंबार है और रोजमर्रा की बातचीत में 'पोस्ट ट्रूथ' जैसे शब्द शामिल हो गए हैं। जब कोई बात सत्य से परे हो, जब झूठ और सच में कोई अंतर न हो, जब सही और गलत का विचार तथ्य या ज्ञान से न हो, बल्कि भावनाओं के आधार पर हो, तो उसे 'पोस्ट ट्रूथ' कहते हैं। ऐसे दौर में 'सूचनाओं' को लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ानी होगी और समझ पैदा करनी होगी। अपने मतलब के लिए बातें गढ़ना और उनका प्रचार करना कोई नई बात नहीं है, लेकिन डिजिटल दुनिया में जिस तरह से राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक मुद्दों पर झूठी खबरें आ रही हैं, वह चिंता की बात है। सोशल मीडिया और मैसेंजिंग नेटवर्क की वजह से बड़े पैमाने पर सूचनाओं का प्रसार संभ्रांत वर्ग या मीडिया तक सीमित नहीं रह गया है। इन नेटवर्क के चलते सूचनाओं के प्रवाह को रोकना नामुमकिन हो गया है। ऐसे माहौल में लोगों के पास ऐसे टूल्स होने चाहिए, जिससे वे उनका विश्लेषण और यहां तक कि उन सूचनाओं को खारिज भी कर सकें। इसके लिए हमें बहुत कम उम्र से ही जागरूकता बढ़ानी होगी, क्योंकि सूचनाओं की बमबारी बचपन की उम्र से ही शुरू हो गई है। इसके लिए हमें स्कूली कोर्स, पढ़ाने के तरीकों और शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करने होंगे। ऐसे तरीके ढूंढ़ने होंगे, जिनसे तथ्यों और काल्पनिक बातों में फर्क किया जा सके।

स्मार्टफोन और टैबलेट की संख्या बढ़ने से आज की पीढ़ी के छात्रों की सूचनाओं तक पहुंच काफी आसान हो गई है। वर्ष 2016 में स्टेनफोर्ड हिस्ट्री एजुकेशन ग्रुप की एक रिसर्च से यह पता चला कि अलग-अलग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करने वाले छात्रों में से 80 प्रतिशत छात्र, विज्ञापन और खबरों के बीच फर्क नहीं कर पाते। इसका मतलब ये है कि छात्रों को जिस बड़े पैमाने पर सूचनाओं से जूझना पड़ रहा है, उसमें वे सच या झूठ का फर्क करने में खुद को मुश्किल स्थिति में पाते हैं। हालांकि, कुछ देशों ने इस दिक्कत को पहले ही समझ लिया था और वे पिछले कुछ वर्षों से इससे निपटने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसा ही एक देश है फिनलैंड, जिसे दुनिया के बेहतरीन सरकारी स्कूलों वाला देश कहा जाता है। वर्ष 2014 के बाद से फिनलैंड में झूठी खबरों के खिलाफ एक अभियान शुरू किया गया, जिसका मकसद छात्रों में विश्लेषण की क्षमता और सूझबूझ को बढ़ाना था। वर्ष 2016 की 'इंटरनेशनल सिविक एंड सिटीजनशिप एजुकेशन स्टडी' के मुताबिक, फिनलैंड में 82 प्रतिशत शिक्षक 'छात्रों में विश्लेषणात्मक और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा देने' को



जरूरी काम मानते हैं। फैक्ट चेकिंग यानी सच्ची और झूठी खबरों का फर्क बताने वाले संस्थानों या जानकारों के साथ मिलकर फिनलैंड छात्रों को हुनरमंद बना रहा है, ताकि वे झूठी खबरों की पहचान कर सकें। इसके लिए छात्रों के साथ मौजूदा मुद्दों पर बातचीत की जाती है एवं सवाल पूछने के कल्चर को और विमर्श को बढ़ावा दिया जाता है। इसी तरह, सितंबर 2018 में अमेरिका के सरकारी स्कूलों में मीडिया साक्षरता बढ़ाने के लिए एक विधेयक लाया गया। इसके जरिये राज्य के शिक्षा विभाग के लिए मीडिया साक्षरता बढ़ाने और शिक्षकों को उसके मुताबिक ट्रेनिंग देने को अनिवार्य बनाया गया है।

भारत की स्कूली शिक्षा व्यवस्था काफी हद तक सिलेबस पूरा करने तक सीमित है। वह छात्रों को झूठी और सच्ची खबरों का फर्क सिखाने की बड़ी जिम्मेदारी के लिए तैयार नहीं है। पहली बात तो यह है कि, अभी तक प्रशासनिक स्तर पर यह स्वीकार भी नहीं किया गया है कि झूठी खबरों की समस्या कितनी बड़ी है। अधिकतर शिक्षक डिजिटल टेक्नोलॉजी से अच्छी तरह वाकिफ नहीं हैं। इस अभियान में सबसे बड़ी बाधा तो यही है। हमारे यहां अखबारों में छपे हुए शब्दों को या टीवी पर कही गई बात को या व्हॉट्सऐप पर फॉरवर्ड संदेशों को आंख बंद करके सच मानने की एक सामाजिक संस्कृति है, जिसे बदलने के लिए हमें हर स्तर पर सुधार करने होंगे। शिक्षा विभाग इसकी शुरुआत मीडिया साक्षरता को कोर्स का हिस्सा बनाने के साथ कर सकता है। इसके बाद इस विषय पर शिक्षकों का ट्रेनिंग मॉड्यूल तैयार करने के लिए जानकारों की समितियां बनाई जानी चाहिए। इन समितियों में इस क्षेत्र में काम करने वालों और फैक्ट चेकिंग संस्थानों को शामिल करना होगा, जो सूचनाओं की सच्चाई का पता लगाने का सिस्टम तैयार कर चुके हैं। ये समितियां राज्य या क्षेत्र के आधार पर बनाई जानी चाहिए, ताकि वे अपने छात्रों को ध्यान में रखकर कारगर मॉड्यूल तैयार कर सकें। ट्रेनिंग मॉड्यूल भी व्यापक होना चाहिए और सालाना आधार पर उसकी समीक्षा की जानी चाहिए, ताकि बदलती हुई जरुरतों के मुताबिक उसमें तब्दीली लाई जा सके।

बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग यह मानता है कि आज के दौर में हम सभी 'नॉलेज सोसायटी' का हिस्सा हैं, जिसमें ज्ञान के एक बड़े हिस्से को समाज के सभी वर्गों तक पंहुचाने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी मीडिया पर है। मीडिया का रोल आधुनिक जीवन में इतना ज्यादा है कि दैनिक दिनचर्या में सुबह उठने से लेकर रात में सोने तक हम मीडिया के ही माध्यम से दुनिया को जीते और सुनते हैं। फिर चाहे वो टेलीविजन के माध्यम से हो, अखबार के माध्यम से हो या न्यू मीडिया के इस दौर में इंटरनेट के माध्यम से हों, जहां खबरों की बमबारी वैश्विक स्तर पर होती है। सोशल मीडिया के एक हिस्से में खबरों को अनावश्यक रूप से सनसनीखेज बनाने का रुझान दिखाई देता है और इसके लिये तथ्यों से खिलवाड़ भी होता रहता है। ऐसे में सोशल मीडिया पर अफवाहें फैलाने, झूठे समाचार प्रसारित करने वालों पर रोक लगाने के प्रावधानों का होना बहुत जरूरी है। इसके लिये कुछ मानदंड तय करने होंगे और इनमें संतुलन कायम करना होगा। ये मानदंड इतने लचर भी नहीं होने चाहिए कि लोगों को इनका भय ही न रहे और न ही इतने कठोर होने चाहिये कि जिनसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर आंच आती हो। इसके लिये ऐसी व्यवस्था बनानी होगी कि झूठी खबर प्रचारित-प्रसारित करने वालों में यह डर तो रहे, कि यदि ऐसा किया तो परिणाम अच्छा नहीं होगा।

महानिदेशक,
भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

आप सबका **भारतीय रेल** के साथ अटूट रिश्ता है

भारतीय रेल के साथ आप अपने संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत, लेख आदि हिन्दी में हमें भेज सकते हैं।
पसंद आने पर रचनाओं को हम रेल मंत्रालय की आधिकारिक मासिक पत्रिका

भारतीय रेल
में प्रकाशित करेंगे

ईमेल editorbhartiyarailrb@gmail.com

चयनित सामग्री लेख की जानकारी ईमेल से दी जाएगी,
प्रकाशित रचनाओं के लिए रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानदेय भी दिया जाएगा

शर्तें लागू

तीन सौ वर्षों से खेला जा रहा 'प्रेम' का खूनी खेल: गोटमार

श्री विपिन पवार

भारत समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एवं अनूठी परंपराओं का देश है, जहां कुछ परंपराएं तो धार्मिक मान्यताओं एवं विश्वासों पर आधारित हैं तो कुछ परंपराएं बड़ी मनोरंजक एवं रोचक हैं – जैसे बरसाने की लठ्ठमार होली, जहां पुरुषों को महिलाओं द्वारा डंडे से पीटा जाता है। लेकिन हमारे देश में एक परंपरा ऐसी भी है, जिसमें खून की होली खेली जाती है। आपको जानकर आश्चर्य होगा, लेकिन यह अविश्वसनीय किंतु सत्य है।

नई दिल्ली–चेन्नई ग्रैंड ट्रंक रेल मार्ग पर मध्य रेल के नागपुर मंडल में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की सीमा पर छिंदवाड़ा जिले का एक कस्बा स्थित है – पांढुरना, जो इटारसी से सड़क मार्ग से नागपुर जाते समय रास्ते में पड़ता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में अमावस्या को महाराष्ट्र का पारंपरिक त्यौहार 'पोला' मनाया जाता है, जिसमें बैलों को खूब सजाया जाता है तथा उनकी पूजा की जाती है। 'पोला' के दूसरे दिन पांढुरना में गोटमार मेले का आयोजन किया जाता है। महाराष्ट्र की सीमा से लगे होने के कारण पांढुरना में मराठी भाषा–भाषियों की भरमार है। मराठी में पत्थर को 'गोटा' कहते हैं। 'गोटमार' का अर्थ है – पत्थर मारना। शब्दार्थ के अनुरूप ही मेले के दौरान पांढुरना और सांवरगांव के बीच बहने वाली जाम नदी के दोनों ओर बड़ी सुबह से ही पांढुरना एवं सांवरगांव के लोग एकत्रित होना प्रारंभ कर देते हैं तथा सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक पत्थर मार–मारकर एक–दूसरे का खून बहाते हैं। इस परंपरा के निर्वहन में अनेक लोग गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं, तो कुछ लोगों की मौत होने के मामले भी सामने आए हैं।

बताया जाता है कि सत्रहवीं शताब्दी के आसपास इस मेले की शुरुआत हुई। इस क्षेत्र से होकर जाम नदी बहती है। नदी के एक ओर पांढुरना तो दूसरी ओर सांवरगांव स्थित है। कृष्ण पक्ष की अमावस्या को दोनों गांवों में बड़ी धूमधाम से बैलों का त्यौहार पोला उत्सव मनाया जाता है। इस अवसर पर सांवरगांव के लोग पलाश (टेसू) के वृक्ष को काटकर जाम नदी के बीचो–बीच गाड़ देते हैं। उस वृक्ष पर लाल कपड़ा, बंदनवार, नारियल, हार, फूल–पत्ते, झाड़ियां आदि चढ़ाई जाती हैं तथा पेड़ पर लाल रंग का एक बड़ा–सा झंडा लगा दिया जाता है। दूसरे दिन सुबह होते ही दोनों गांवों के लोग उस वृक्ष एवं झंडे की पूजा–अर्चना करते हैं और फिर सुबह आठ बजते ही शुरू हो जाता है एक–दूसरे को पत्थर मारने का खूनी एवं रोमांचक खेल।

ढोल, ताशों, नगाड़ों की तीव्र ध्वनि के बीच कभी पांढुरना के खिलाड़ियों का दल आगे बढ़ता है तो कभी सांवरगांव के खिलाड़ियों का। दोनों दलों के जांबाजों को पत्थर मार–मारकर पीछे धकेलने का प्रयास किया जाता है और यह क्रम लगातार चलता रहता है। अपने खिलाड़ियों को जोश दिलाने के लिए की जा रही ललकार वातावरण में प्रतिद्वंद्विता की एक रोमांचक उत्तेजना भर देती है। दोपहर बाद दोनों ओर सैकड़ों की संख्या में खड़े दर्शकों का मजा और भी बढ़ जाता है, जब पांढुरना के जवान खिलाड़ी तेजधार वाली चमचमाती कुल्हाड़ी लेकर झंडे के निकट पहुंचने का प्रयास करते हैं। ये लोग जैसे ही झंडे के निकट पहुंचते हैं, सांवरगांव के लोग उन पर पत्थरों की भारी वर्षा करते हैं और पांढुरना वालों को पीछे हटने के लिए विवश कर देते हैं। फिर यही सिलसिला सांवरगांव वालों के साथ दोहराया जाता है। शाम को फिर से पांढुरना के खिलाड़ी अपनी पूरी शक्ति तथा जोश–खरोश के साथ चंडीमाता का जयघोष करते हुए तथा



'भगाओ-भगाओ' के नारे लगाते हुए सांवरगांव के खिलाड़ियों को पीछे धकेल देते हैं और झंडा तोड़ने वाले अग्र पंक्ति के खिलाड़ी कुल्हाड़ी से झंडा काट देते हैं। जैसे ही झंडा टूट जाता है, दोनों पक्ष पत्थर मारना बंद कर देते हैं तथा मेल-मिलाप कर एक-दूसरे के गले मिलते हैं और गाजे-बाजे के साथ नाचते हुए झंडे को चंडीमाता के मंदिर में ले जाते हैं। कभी पांढुरना वालों को विजयश्री हासिल होती है तो कभी सांवरगांव वालों को। किसी भी पक्ष द्वारा झंडा न तोड़ पाने की स्थिति में शाम छह-साढ़े छह बजे प्रशासन द्वारा दोनों पक्षों से बातचीत की जाती है और आपस में समझौता कराकर गोटमार बंद कराया जाता है। पत्थरबाजी की इस अर्वाचीन परंपरा के दौरान जो खिलाड़ी घायल होते हैं, उनका उपचार अस्थायी रूप से स्थापित शिविरों में किया जाता है। गंभीर रूप से घायल खिलाड़ियों को नागपुर भेजा जाता है।

आखिर है क्या इस परंपरा के मूल में, जिसकेनिर्वहन के चलते मनुष्य अपने प्राणों से हाथ धो बैठता है? वैसे तो इस मेले के आयोजन के संबंध में कई प्रकार की किंवदंतियां हैं, लेकिन इन किंवदंतियों में सर्वाधिक प्रचलित, बहुश्रुत एवं आम किंवदंती यह है कि सांवरगांव की एक आदिवासी कन्या पांढुरना के किसी युवक के प्रेमपाश में गिरफ्त हो गई और दोनों ने चोरी-छिपे प्रेमविवाह भी कर लिया। एक दिन पांढुरना का वह प्रेमवीर अपने साथियों के साथ सांवरगांव पहुंचा और कन्या को भगाकर अपने साथ ले जाने लगा। उस समय जाम नदी पर आज की तरह पुल तो था नहीं और नदी में गर्दन तक पानी हुआ करता था, आज की तरह घुटनों या कमर तक नहीं, जिसे युवा तैरकर पार करते थे तो वृद्धों, महिलाओं एवं बच्चों को पीठ पर लादकर या कंधे पर बैठाकर नदी पार कराई जाती थी। हुआ यूं कि जैसे ही लड़का और उसके साथी लड़की को लेकर नदी तट पर पहुंचे तो सांवरगांव के लोगों को पता चला कि उनके गांव की इज्जत खतरे में है, लेकिन जब तक वे पहुंचते प्रेमवीरों की टोली नदी की मझधार में पहुंच चुकी थी। बस! फिर क्या था? सांवरगांव के लोगों ने अपने मान-सम्मान की रक्षा के लिए प्रेमवीरों की टोली पर जमकर पत्थर बरसाना प्रारंभ कर दिया। जानकारी मिलने पर पांढुरना के लोग भी नदी तट पर पहुंचे और उन्होंने जवाब में पत्थरों की बारिश प्रारंभ कर दी। दोनों पक्षों की ओर से जमकर पत्थरबाजी हुई। जहां एक पक्ष अपने मान-सम्मान की रक्षा के लिए कटिबद्ध था तो दूसरा पक्ष अपने प्रेमवीर की प्राण रक्षा के लिए जी-तोड़ प्रयास कर जवाबी हमला कर रहा था, लेकिन इसका परिणाम अत्यंत दुखद हुआ। भारी पत्थरबाजी के चलते दोनों प्रेमियों की नदी की मझधार में ही मृत्यु हो गई। दोनों प्रेमियों की मृत्यु के पश्चात् दोनों गांवों के निवासियों ने देखा कि अरे! यह क्या हो गया? उन्हें बेहद शर्मिन्दगी का अनुभव हुआ। सभी के सिर लज्जा से झुक गए। दोनों पक्षों ने मिलकर दोनों प्रेमियों के शवों को ससम्मान उठाकर किले पर स्थित मां चंडिका के दरबार में रखा एवं पूजा-अर्चना करने के बाद दोनों का अंतिम संस्कार कर दिया। शायद इसी दुर्घटना की याद में प्रतिवर्ष मां चंडिका की पूजा-अर्चना कर गोटमार मेले का आयोजन किया जाता है।



गहन आस्था एवं विश्वास से सम्बद्ध इस परंपरा में एक दूसरे का खून बहाते लोगों को असहाय देखते रहने के अलावा और कुछ नहीं हो पाता। कभी-कभी निर्धारित समयावधि में पत्थरबाजी समाप्त कराने के लिए प्रशासन को बल प्रयोग भी करना पड़ता है। प्रशासन ने कई बार पत्थरों के स्थान पर रबड़ की छोटे आकार की हजारों गेंदें भी उपलब्ध कराई थीं, किंतु दोनों गांवों के लोगों ने रबड़ की गेंदों के स्थान पर पत्थरों का उपयोग करना ही पसंद किया। कई बार तो प्रशासन ने पर्याप्त समय रहते परिसर से पत्थरों को गायब करवा दिया था, लेकिन सुबह पता नहीं कैसे गोटमार के लिए हजारों की संख्या में पत्थर उपलब्ध थे। वर्ष 2009 में मानवाधिकार आयोग के निर्देशों के बाद छिंदवाड़ा जिला प्रशासन ने पांढुरना एवं सांवरगांव के बीच होने वाले गोटमार मेले में पत्थर फेंकने पर रोक लगाते हुए मेला क्षेत्र में छह दिनों के लिए धारा 144 लागू कर दी थी, लेकिन इसका भी कोई फायदा नहीं हुआ। भारत वह देश है जहां बात यदि आस्था एवं विश्वास की हो तो वहां कानून, व्यवस्था एवं प्रशासन-अनुशासन का कोई महत्त्व नहीं रह जाता।

समय के साथ-साथ गोटमार मेले में कई सामाजिक बुराइयां भी शामिल हो चुकी हैं। गोटमार के दिन ग्रामीण मदिरा पान करते हैं तथा प्रतिबंधों के बावजूद गोफन के माध्यम से तीव्र गति और लंबी दूरी तक निशाना लगाकर पत्थर फेंकते हैं, जिससे घायलों की संख्या बढ़ने की संभावना बढ़ जाती है। जिला प्रशासन द्वारा ग्रामीणों एवं दर्शकों की सुरक्षा के लिए यथासंभव भरपूर उपाय किए जाते हैं। शराब के विक्रय पर रोक लगाई जाती है, गोफन का प्रयोग प्रतिबंधित होता है। गोफन से पत्थर फेंकने वालों की वीडियोग्राफी कराई जाती है, अनेक स्थानों पर कैमरे लगाए जाते हैं, हफ्तों पहले सोशल मीडिया एवं जनसूचना प्रचार-प्रसार माध्यमों की सहायता से जनजागृति के प्रयास किए जाते हैं, लेकिन परिणाम कुछ खास नहीं होता।

अब समय आ गया है कि हम इस प्रकार की प्राचीन परंपराओं के निर्वहन पर विचार-विमर्श करें। आस्था एवं विश्वास से बढ़कर कुछ नहीं है, लेकिन अति प्राचीन परंपरा के नाम पर बेवजह खून बहाना कहां तक उचित है?

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
मध्य रेल मुख्यालय

पिंजरा

सुश्री सविता मिश्रा 'अक्षजा'

कभी इस पिंजरे में कैद चिड़िया थी मैं। जो फड़फड़ाती रहती थी बाहर निकलने के लिए, बिलकुल इसी चिड़िया की तरह।" सीमा दर्द-भरी आवाज में यूँ दो-चार लाइन बोली तो वातावरण में थोड़ी देर के लिए पिनड्रॉप सायलेंस फैल गई। सबके चेहरे की तरफ जब सीमा की नजर गई तो सहज होते हुए वह बोली, "लो नीतू! 'पिंजरे में कैद पंछी' पर मैंने काफी कुछ बोल दिया, अब तुम्हारी बारी है।" कहकर उसने टेबल पर रखा पिंजड़ा नीतू की ओर सरका दिया।

"यार! तूने तो डरा ही दिया था। इतनी इमोशनल होकर दर्द-भरी आवाज में जो कुछ भी तूने अभी बोला, तो लगा कि यह सीमा को क्या हो गया, भई!" स्वरा उसकी तरफ आश्चर्य से देखकर बोली।

"तुझे तो एक्ट्रेस होना चाहिए था, सीमा। बला की खूबसूरत तो तू है ही। कमाल की अदाकारा भी है, भई।" हँसकर नीतू ने स्वरा की बात का समर्थन किया।

"आजमाया नहीं होगा वर्ना जरूर होती। हम लोग फिर यूँ इसे अपने पास नहीं, बल्कि पर्दे पर देख रहे होते।" शिखा ने कंधों से सीमा को धक्का मारते हुए अपनी बाईं आँख दबाकर कहा।

शिखा के यह कहते ही वहाँ पर किटी पार्टी के लिए आई महिलाओं के बीच ठहाकों का दौर चल पड़ा। सबकी हँसी-ठिठोली के बीच सीमा को उसके अतीत ने झपट्टा मारकर अपनी गिरफ्त में ले लिया: "मेरी खूबसूरती को देखकर ही तो शिकारी ने जाल फेंका था। मैं नादान उसकी मक्कारी को समझ नहीं पाई थी। पापा-मम्मी की अनुभवी नजरों ने शायद उसकी नीयत को बखूबी पढ़ लिया था, तभी तो उन्हें वह फूटी आँख भी नहीं सुहाता था, लेकिन मैं उसके प्यार में पड़कर शिकारी को ही अपना साथी समझ बैठी थी। दिल ने समझा यह ही है मेरे सपनों का वह राजकुमार जो मेरे पंखों को परवाज देगा। दकियानूसी की जंजीरों में जकड़ा मेरा परिवार मुझे आगे बढ़ने से रोक रहा था। यहाँ तक की मेरी पढ़ाई पर भी रोक लगा दी गई थी। मेरे पिता ने मेरी गायन प्रतिभा का भी मर्दन कर दिया था। शादी करके संयुक्त परिवार में भेजकर मुझसे मेरा ही परिवार मुक्ति चाहता था। पापा ने सख्त आदेश पारित कर दिया था- "किसी भी कोचिंग-क्लासेस में जाने की कोई जरूरत नहीं है।" कोचिंग के बाहर ही तो पापा ने मुझे सुधीर की बांह में हाथ डाले बात करते पकड़ लिया था। उस दिन मैंने उनकी आँखों में खून उतरते हुए देखा था। पापा तो मुझे घूरते हुए वहाँ से चले गए थे, लेकिन मेरे अंदर भय ने बवंडर मचा दिया था। भीगी बिल्ली की तरह डरी-सहमी मैं उस दिन घर लौटी थी।

सुधीर ने घर के मोड़ पर मुझे छोड़ते हुए मेरे कानों में उसी दिन एक मंत्र फूंका था, "यदि



तुम्हें तुम्हारे पापा मारे-पीटें तो तुरंत अपना घर छोड़ देना, मैं तुम्हें लेने के लिए यहीं नुक्कड़ पर खड़ा मिलूँगा। आखिर प्यार करता हूँ मैं तुमसे। तुम्हें तकलीफ में कैसे देख सकता हूँ?" उसकी प्यार भरी बातें सुनकर मेरी आँखे पनीली हो उठी थीं। मेरी उन आँखों में जीवन की नैया तैरकर पार होते हुए मुझे उसी समय दिख रही थी। थोड़ी देर बाद मैंने पलटकर उसे भयाक्रांत नजरों से देखा था। किन्तु उसने नजरों से ही खुद पर भरोसा जतलाया था।

उसने कहा था, "तुम चिंता न करना। हम भागकर मन्दिर में जाकर शादी कर लेंगे। आखिर बालिग हैं हम दोनों। कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता हैं हमारा।" उसकी इन्हीं शहद-भरी बातों से चिपक गई थी मैं मधुमक्खी की तरह। उसके इस कथन को दिल में छुपाकर रख लिया था मैंने, फिर तो मैंने आगा-पीछा सोचा ही नहीं था।

सुधीर ने मेरे मन के अंदर कैद पंछी को परवाज भरने का लालच देकर ही तो जाल में फांसा था। मैं प्यार में अंधी-बहरी होकर उड़ चली थी उसके साथ। तुरंत मंदिर में जाकर शादी कर लिया हमने। आसमान में अठखेलियाँ करते हुए पंछी जैसे सुनहले सपने मेरी आँखों में तैरने लगे थे। उस दिन उसका भरपूर स्नेह पाकर लगा था कि मैं कोई अप्सरा या फिर स्वर्गलोक की कोई परी हूँ जो धरती पर पापा-मम्मी के घर में गलती से जा फंसी थी।

आठ-दस महीने भी नहीं बीते थे कि मैं आसमान से सीधे धरातल पर धड़ाम से आ गिरी थी लहूलुहान! कितना मारा था सुधीर ने मुझे। मैं उसके घर के बीच बने आंगन में पड़ी तड़प रही थी। सास-ससुर-देवर, सब के सब ठहाके लगा रहे थे। मैंने जब अपनी पलकें उठाईं तो अपने चारों तरफ मुझे गिद्ध ही गिद्ध दिख रहे थे।

"अब तुझे घर के बाहर कदम रखते भी देखा तो टांगें तोड़ दूँगा।" सुधीर के चीखते हुए इन शब्दों से मैं अंदर तक कांप उठी थी। पापा जब बोलते थे तो उनके स्वर में मेरे प्रति उनका डर रहता था, लेकिन सुधीर के शब्द तो बड़े तल्ख और क्रूरता भरे थे। गलती क्या

थी मेरी स्कूटर से ठोकर खाकर चोट लग जाने के कारण उस अपरचित ने मुझे मेरे घर तक ही तो छोड़ा था। मैं तो जानती भी नहीं थी उसे। दर्द से कराहते हुए मैंने सुधीर से बताया भी था, लेकिन वहां उपस्थित सारे कान तो मेरे विरुद्ध जा चुके थे। मेरी आवाज मेरे ही कानों से टकराने के वास्ते वापस आई थी। जैसे घने पहाड़ों से टकराकर कोई ध्वनि वापस आ जाती है।

''सुधीर के साथ भागकर शादी करने के दो-तीन महीने बाद ही मुझे थोड़ा-थोड़ा आभास होने लगा था कि मैं अपनी खूबसूरती के कारण इस बहेलिए की शिकार बनी हूँ। बबूल के पेड़ से रिसते हुए गोंद की तरह धीरे-धीरे सुधीर की सच्चाई भी मेरे सामने रिस रही थी। उस समय मेरे आँखों से प्यार की पट्टी उतरने का नाम ही नहीं ले रही थी। मुझे लग रहा था कि मैं अपनी सुंदरता के बल पर, अपने प्यार से सुधीर को बांधे रखूँगी। घर की जिम्मेदारी का पूरा भार अपने सिर लेकर घर वालों को खुश रखूँगी, लेकिन होना तो वही था जो लिखा था मेरे भाग्य में।''

मच्छरों की भिनभिनाहट जैसी आवाज उसके कान में गूंज रही थी कि अचानक उसको लगा कि कोई झकझोर रहा है उसे। आवाजें भी अब काले भंवरों की तरह भन्न-भन्न होने लगी थीं। "अरे सीमा! कहाँ खो गई हो, भई!" झकझोरते हुए स्वरा पूछ रही थी।

"अपनी ही सुंदरता के जाल में फंस गई है क्या?" नीतू ने उसे छेड़ते हुए कहा।

"क्या हुआ? सबने पिंजरे में बंद चिड़िया के विषय पर बोल लिया क्या?" सीमा ने अचकचाकर कहा था।

"और क्या! तूने किसी का बोलना सुना भी नहीं! तेरे और सुधा आंटी के सिवा सबने कितना प्यारा-प्यारा बोला इस सुंदर-सी चिड़िया के लिए।"

सीमा ने नजरें उठाईं और सुधा आंटी के चेहरे पर टिका दी। दोनों की नजरों ने एक-दूसरे को देखा-परखा। ऐसा लग रहा था जैसे कि दोनों की आँखों ने एक-दूसरे की आँखों के टीवी स्क्रीन पर एक दूसरे के जीवन के सारे घाव देख डाले थे।

फिर दूसरे गेम का दौर चल पड़ा था। थोड़ी देर चुहलबाजी के बीच वह भी खेल खत्म हो गया। सब ने अपने-अपने जीतने की खुशी मनाई और कुछ ने अपने हारने पर अफसोस किया। गेम सिमट चुका था। डाइनिंग टेबल पर तरह-तरह के पकवान सज गए थे। सभी ने अपने-अपने हाथों में प्लेट लिया और डोंगों में पड़े लजीज पकवानों पर टूट पड़ीं।

चटकारे लेते हुए आवाजें आने लगीं - "वाह स्वरा! तू तो बड़ा लजीज खाना बना लेती है। हम लोगों को तो पता ही नहीं था।" स्वरा मौन हो मुस्कुराते हुए सबका धन्यवाद कर रही थी। सबकी वाहवाही से वह सेमर की रूई-सी हल्की हो उठी थी। पुलक-पुलककर सबकी प्लेटों में व्यंजन डाल रही थी।

फिरकी की तरह रसोई से डाइनिंग टेबल, डायनिंग-टेबल से सभी दस-बारह लोगों की प्लेट तक एक पैर पर वह नाच रही थी। उसके खाने के साथ-साथ उसकी फुर्ती के भी सब कायल हुए जा रहे थे। उस समय कोई भी उसे देखकर दांतों तले उंगली दबा सकता था। भारी-भरकम स्वरा नीतू और सीमा के छरहरे बदन को भी मात देती दिख रही थी।

"सीमा, तुम कुछ क्यों नहीं ले रही हो? तुम भी तो कुछ लो!" कहते हुए स्वरा ने छोले और एक भटूरा उसकी प्लेट में डाल दिया था।

''उस छह फुट के नवयुवक की प्लेट में छोले देते समय ही तो सुधीर की त्योरियाँ चढ़ गई थीं।'' सीमा की यादों के गलियारे से चटखती याद रिस पड़ी। सुधीर की बर्थडे पार्टी थी। सारा खाना मैंने खुद ही बनाया था। सोचा था, घरवाले खुश हो जाएंगे। सुबह से ही मैं रसोई घर में लगी हुई थी। शाम तक कोई भी रसोई में झांकने तक नहीं आया था।

उस दिन ऑफिस जाते हुए सुधीर ने फरमान जारी कर दिया था, ''शाम को पार्टी रखी है। मुहल्ले और ऑफिस के लोगों को मिलाकर तीस-पैंतीस लोग आएंगे! इंतजाम कर लेना।'' 'जी' कहकर मुस्कुरा दी थी मैं। लेकिन सुधीर की भौहें धनुष की तरह तनी ही रही थीं। वह माथे पर खिंची लकीरों के साथ ही ऑफिस के लिए निकल गया था।

मैं अक्सर उसको खुश करने के लिए पुराने वाकये को दोहराती हुई उसके चेहरे पर अपनी नजरें टिका देती थी किन्तु प्यार की पींगे भरने वाला वह पुराना वाला सुधीर उसे कहीं भी नजर नहीं आता था।'

"लो सीमा! एक और भटूरा।" सुनकर सीमा यंत्रवत् मुस्कुरा दी। और फिर सुधियों में डूब गई। 'ऐसे ही सब के पास जा- जाकर मैं भी तो सबको खिला रही थी, एक अच्छे मेजबान की तरह। गहरे हरे रंग की साड़ी में सज-सँवरकर मैं महकती-चहकती हुई मेजबानी में मशगूल थी। अपने दर्द भरे चेहरे को गुलमोहर-सी खिलती हुई मुस्कुराहट से पाट लिया था मैंने। कभी पलाश, कभी चमेली, कभी बेला, कभी सूरजमुखी-सी मैं एक अच्छे मेजबान के रूप में हाजिर हो रही थी हर किसी के पास।

गुलाब मेरा पसंदीदा फूल था, पर गुलाब-सी शख्सियत बन कर मैं सुधीर को कोई कष्ट नहीं पहुँचाना चाहती थी। जबकि सुधीर के दो-तीन दोस्त मेरी खूबसूरती की तारीफ करते हुए मुझे छेड़ चुके थे। इसके बावजूद मैं चुप रही थी। अपने अंदर छुपे कांटे को तब भी मैंने बाहर नहीं आने दिया था। इस डर से कि कहीं सुधीर मुझ पर ही गुस्सा न हो जाए।

"यार सुधीर! बड़ा लम्बा हाथ मारा है तूने तो! इतनी सुंदर लड़की भगा लाया। मुझे भी तो बता वो सारे टिप्स जिससे ऐसी सुंदर चिड़िया मेरी भी जाल में फंस जाए।" लावे जैसे ये वाक्य उसके कानों में पड़े थे।

फिर जोर के ठहाकों की आवाज के साथ सुधीर के पिघलते शीशे से शब्द सुनाई पड़े थे- "तू छोड़, तेरे बस की नहीं है ऐसी चिड़िया का शिकार करना!" सुनकर भी अनसुना कर गई थी मैं, लेकिन मेरे नैन कटोरे में उस समय आँसू नहीं, अंगारे भर गए थे। मैंने उस स्थिति को भी अपने मुस्कुराहट से ढंकने का भरसक प्रयास किया था और सफल भी हो गई थी।

थोड़ी देर बाद मुस्कुराकर जब मैंने उस छह फीट के चेहरे वाले युवक की प्लेट में भटूरा रखा तो उसके मना करने को बढ़े हुए हाथ से मेरा हाथ छू गया था। मैंने घबराकर झट-से हाथ पीछे कर, वहाँ से तुरंत हट गई थी। तुरंत ही सुधीर के चेहरे पर जब मैंने निगाह फेंकी, तो उसका चेहरा तमतमाया हुआ था। कढ़ाई से निकले हुए लाल भटूरे और उसके चेहरे में उस समय मुझे कोई फर्क नहीं दिख रहा था। उसकी नजरों से बचती हुई दूसरी ओर चली गई थी मैं।

''पार्टी खत्म होने के बाद, सब समेटते हुए कितना थक गई थी। यह तो पता था कि सब करने पर भी सुधीर खुश होकर मुझे अपने गले से तो नहीं ही लगाएगा, लेकिन उम्मीद बांध बैठी थी कि आज कुछ ऐसा नहीं करेगा कि मुझे तकलीफ हो! उसके

कमरे में घुसते ही जैसे उफनती नदी का बांध टूट गया हो! उसने मुझसे मारपीट तो की ही, ऊपर से उसने मुझे रौंदा भी।''

आह भरी एक चीख के साथ सीमा पुनः वर्तमान में लौट आई।

सब लोग खाने-पीने और आपस में बातें करने में मशगूल थे, परन्तु खाते वक्त सुधा आंटी की नजरें सिर्फ और सिर्फ सीमा के चेहरे पर आते-जाते भाव पढ़ रही थीं। अपने चेहरे पर मजार पर चढ़ी गोटे से सजी चादर ओढ़कर सीमा ने सुधा आंटी की ओर चोर निगाहों से देखा।

लेकिन सुधा आंटी की अनुभवी आँखें थीं कि उन्होंने कब्र खोदकर सब कुछ पढ़ लिया था उसके चेहरे पर। खाना-पीना हो गया था। अगली किटी-पार्टी किसके यहाँ होगी, इसकी भी चिट निकल चुकी थी। अगली बारी सुधा आंटी की थी तो उन्होंने सब को अपने घर आने का निमंत्रण दिया। फिर सब तितलियाँ स्वरा के घर से विदा लेकर उड़ चलीं।

फुटपाथ से अपनी कार तक जाते हुए सुधा आंटी ने सीमा को अकेले खड़ा देख आवाज दी, "चलो! मैं तुम्हें छोड़ दूँ!" दोनों कार में बैठ गईं।

रास्ते में सुधा आंटी बोलीं, "बेटा! मेरा अनुभव कह रहा है कि तू उस पिंजरे के पंछी के विषय में नहीं बोल रही थी, बल्कि तू खुद अपने ही बारे में बोल रही थी।" कहते हुए सुधा आंटी का आश्वासन और प्यार भरा हाथ जब सीमा की हथेलियों पर गया तो सीमा ने अपनी दूसरी हथेली उनके हथेली के ऊपर रख दीं। सुधा आंटी ने सीमा की हथेली उठाकर अपनी दोनों हथेलियों में भर लिया था। हथेलियों की गर्माहट से सीमा पिघल गयी।

सीमा के आँखों का काजल जो आँखों की देहरी को बांधे हुए था, सीमा के आँसुओं के प्रवाह से वह बांध टूटकर बह निकला। सारी बातें सिसकते हुए सीमा ने आंटी के आगे परोस दीं। सुधा आंटी ने पुचकारते हुए कहा, "फिर तूने क्या किया? उसके बाद भी क्या वह तुझे नोंचता रहा?"

"हाँ आंटी! उसके बाद महीनों मैं उसकी कैद में रही। वह जब भी मुझे मारता था या मेरा बलात्कार करता था तो वह जोर-जोर से चीखता था, भटूरे देने के बहाने तू उस लफंगे अजीत पर डोरे डाल रही थी। मुस्कुरा तो ऐसे रही थी जैसे उसके बिस्तर पर अभी जाकर बिछ जाएगी! अब मैं बताता हूँ तुझे!''

न जाने क्यों और कब अपने सारे दर्द बताते-बताते वह सुधा आंटी के स्पर्श में आत्मीयता पाकर उनके कंधे पर टिक गई थी। सुधा आंटी उसके बालों में ऊँगलियां फेरते हुए उसे दुलार रही थीं, बिलकुल अपनी बच्ची की तरह। सीमा के अंदर भावकुता का अथाह सागर उमड़ने लगा।

वह बोली, "उस दिन सड़क पर जब मुझे चोट लगी थी तो सामने से वह आ रहा था। उसने मुझे अपने कंधों का सहारा देकर घर पहुँचाया था। मैं बहुत मना करती रही कि मैं चली जाऊंगी लेकिन उसने यह कहकर कि अब यदि आपने मना किया तो मैं आपको गोदी में उठाकर ले जाऊँगा। आखिर आपके छोले-भटूरे का कर्ज है हम पर। उसके ऐसा बोलते ही मैं चुप लगा गई थी, मगर उसके बाद जो सुधीर की कांड-लीला होती उस अंदेशे से मैं सहमी हुई थी और वही उस दिन हुआ जिसका मुझे शक था।"

"तो फिर तू उस नरक से निकली कैसे?" सुधा आंटी ने पिंजरे से निकलने की युक्ति जानने की गरज से पूछा।

"वही छह फुटा नवजवान हनुमान बनकर आया था एक दिन और मुझे हिमालय समझ उठा ले आया।" कहते हुए उसके दर्द भरे चेहरे पर स्मित मुस्कान फैल गयी।

"वो कैसे..?" आंटी ने जिज्ञासा जतलाई।

सीमा ने बताया, "वह सुधीर को पूछता हुआ उस दिन घर आया था। मैंने ही दरवाजा खोला था। दिन में भी बिस्तर पर मेरी बर्बादी का जश्न मनाकर सुधीर घर से दस मिनट पहले ही निकला था। बहुत मारा था उस दिन भी उसने मुझे। कारण बस इतना था कि दिन में मैंने बिस्तर पर जाने से मना कर दिया था।"

"इतना सब कुछ होता रहा और तू सहती रही! मायके क्यों नहीं चली गई?"

"मैं वहाँ किस मुँह से जाती, आंटी! माँ-बाप ने तो कह ही दिया था कि अब से तू हमारे लिए मर गई है। हम लोगों के जीते जी इस घर में अपनी शक्ल नहीं दिखाना। मेरे लिए तू आज से ही मर चुकी है।"

"तुम उनसे अपनी तकलीफ बताती, तो शायद तुम्हारे जख्म का वे मरहम बनते! आखिर तुम्हारे जन्मदाता थे।"

"आंटी! मेरा घर आ गया।" सीमा कार रुकवाते हुए बोली।

"बहुत खूबसूरत है तेरा घर तो!"

मुस्कुराकर सीमा ने कहा- "आइए, आंटी! अंदर से दिखाती हूँ, मैं आपको अपना घर और चाय भी पिलाती हूँ। चाय का समय भी तो हो ही रहा है।"

आंटी ने मना नहीं किया और उसके पीछे-पीछे घर की तरफ चल पड़ी। घर में प्रवेश करते ही उनके सामने सजीला नौजवान खड़ा था। स्मार्ट-लम्बा-चौड़ा और सुंदर! उसकी जितनी तारीफ की जाए कम थी। वह आसमानी नीली वर्दी में और भी जँच रहा था।

"आंटी! इनसे मिलिए। ये हैं उस दूसरे पिंजरे से मुझे आजाद करने वाले एअर-ऑफिसर अजीत।"

"बड़ी भाग्यशाली हो जो तुम्हें पिंजरे से आजाद करने वाला इतना स्मार्ट शुभाकांक्षी मिला। सबकी किस्मत ऐसी नहीं होती है, बेटा।"

अजीत ने सम्मान के साथ उन्हें अभिवादन किया और अपनी ड्यूटी पर जाने लगा। "खुश रहो!" अनायास ही सुधा आंटी के हाथ अजीत को आशीष देने को उठ गए।

चाय बनाकर सीमा ला चुकी थी। चाय पीने के बाद चलते समय सुधा आंटी ने कहा- "चाय भी बढ़िया बना लेती हो। अगले महीने किटी पर घर आना। इस चहचहाती चिड़िया को एक गुमसुम रहने वाली चिड़िया से मिलाना है।'' कहकर उसको आशीष देते हुए वे कार की ओर बढ़ गईं।"

बाहर आकर "भगवान तुम दोनों को ढेरों खुशियाँ दें।" बुदबुदाते हुए छोटे-छोटे कदम भरती हुई वे अपने शरीर के पुराने जख्मों को अपने आँसुओं से धोने लगीं। कार के पास पहुँचकर उन्होंने आँचल से अपने आँसुओं को पोंछ लिया और झट से कार में बैठ गयी। अपने पिंजरे की ओर जाते हुए फिर से बुदबुदाई- "मैं तो पिंजरे में जीवन भर रह ली, लेकिन अब अपनी बहू के लिए मैं वह घर पिंजरा नहीं बनने दूँगी!"

भानुपुरा की लाड़ली बेटी : मन्नू भंडारी

सुश्री कल्पना मनोरमा

संसार अपनी धुन में लगातार चलते हुए पदचिह्न छोड़ता जाता है। जिस रास्ते को वह तय कर लेता है, उस पर कभी मुड़कर नहीं देखता, न ही किसी चट्टान पर बैठकर ये प्रतीक्षा करता है कि कोई प्रबुद्ध, समृद्ध या बुद्धिमान आकर उसके पाँव की छाप लेकर धरोहर के रूप में सुरक्षित कर ले। लेकिन इस सबके बावजूद भी सब कुछ लिखा जाता है। कोई है, जिसके इशारे पर हवा चलती है और सूरज दहकता है। उसके यहाँ जितना हाथी का मोल है, उतना ही चींटी का। जितनी बरगद की आवश्यकता है, उतनी ही छुईमुई की जरूरत है। कहने का मतलब जो कुछ भी क्रियात्मता के साथ घट रहा है, उसको कलमबद्ध करने का काम लिपिक करता चलता है। तो फिर संसार का लिपिक है कौन? जब सवाल उठा तो पता चला कि संसार का लिपिक और कोई नहीं काल स्वयं है। वही उसके निहोरा घूमता है या हो सकता है, संसार स्वयं अपने लिपिक के प्रति निहोरा हो! कुछ भी कहा नहीं जा सकता है। लेकिन एक बात पक्की है कि कला-काल को कोई मात देकर बाँध लेता है वह और कोई नहीं, जाग्रत चेतना का लेखक ही होता है। लेखक अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और संवेदना से लबरेज हृदय की कलम से बाह्य और अंतर जगत् को लिख डालता है। लेखक की कलम में आकाश-पाताल, सागर-गागर, नदियाँ-कुएँ, सूरज-चाँद-सितारे और समस्त प्रकृति एक साथ और एक समय में छिपकर रहते हैं और साथ में रहती है उसकी अपनी मौलिक तार्किकता, समाज को समझने की समझ और सही बात कहने की दृढ़ता। उसी के दम से एक जगा हुआ लेखक सात कोने के भीतर की घटनाओं- दुर्घटनाओं को घसीटते हुए संसार के सम्मुख रख देता है।

ऐसी ही भारत की प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित कथा लेखक थीं मन्नू भंडारीजी, जो अभी हाल ही में गोलोक वासी हो गई हैं। इस खबर को जिसने सुना, उसकी आँखें नम हो गईं। लेखिका के प्रति भावुक होने के दो कारण रहे। एक तो उनका समृद्ध-सुदृढ़ रचना संसार, जिसमें मानव पीड़ा की कहानियाँ भरी पड़ी हैं और दूसरे उनके विशालकाय एकाकीपन की नीरवता का लगाव उनके कोमल मन पर दंश था। वे जितनी बड़ी और महान लेखिका थीं, उतनी ही बड़ी मानवीय पीड़ा की भोग्या भी रहीं। लेखकीय जीवन के विस्तार के बाद उनके हिस्से आया उनका अवसादीय जीवन जो घट-घटकर भी कभी घट न सका। अन्ततोगत्वा आपको इस निस्सार संसार को उसके हवाले छोड़कर जाना ही पड़ा। हालाँकि सुनने में ये भी आया कि मन्नू जी मरने के नाम पर कहती थीं कि "मेरे पास मौत के लिए वक्त नहीं क्योंकि अभी लिखना बहुत बाकी है।" लेकिन काल के गाल से कौन बच सका है। ईश्वर उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करें। उन्हें उनके अगले जन्म में अपनों का बेहद स्नेह मिले।

वैसे तो जो बात मैं लिखने जा रही हूँ, कोई नई नहीं है, फिर भी आपको बता दूँ कि हिंदी की प्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यासकार मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल, 1931 को मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के भानुपुरा गाँव में हुआ था। उनका बाल्यकाल भानुपुरा की मिट्टी ने ही सिरजा था। आज जब लेखिका हमारे बीच नहीं हैं तो हम सबके साथ-साथ उनकी जन्मभूमि भी कितनी उदास होगी क्योंकि उसने भी अपनी लाड़ली बेटी को खोया है। दिल्ली की हवा ने मंदसौर भानुपुरा की हवा को उनके जाने की जब चिट्ठी सुनाई होगी तो सारे वायु मंडल में कैसा शोक व्याप्त गया होगा? कभी मंदसौर जिले की आबोहवा को अपने होने की महक से मन्नू जी ने ही महकाया था।

मन्नू जी के बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। उनके पिता का नाम सुख संपत राय था। सुख संपत राय जी उस दौर के विचारवान व्यक्ति थे, जब स्त्रियों को सात कोठे के भीतर उनकी खाल सड़ाने के लिए रखा जाता था। तब जाने-माने लेखक और समाज सुधारक संपत राय ने स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए लड़कियों को यह चेताया कि उनकी जगह रसोई नहीं, विद्यालय में है। उनकी दृष्टि में लड़कियाँ सिर्फ वंश-बेल बढ़ाने का माध्यम न होकर शिक्षा की अधिकारिणी भी हैं। ये बातें सुनते-समझते हुए तो यही लगता है कि मन्नू जी के दबंग और प्रखर व्यक्तित्व निर्माण में उनके पिता का भरपूर योगदान रहा होगा। वहीं मन्नू जी की माता का नाम अनूप कुँवरी था, जो धीर-गम्भीर स्त्रीगत स्वभाव की धनी महिला थीं।



उदारता, स्नेहिलता, सहनशीलता और धार्मिकता जैसे गुण जो लेखिका के अंतर्मन को हमेशा सहेजते रहे, उन्हें अपनी माँ से ही मिले होंगे। इस सबके अलावा मन्नूजी के परिवार में उनके चार-बहन भाई थे। बचपन से ही उन्हें, प्यार से 'मन्नू' पुकारा जाता था। इसलिए उन्होंने अपनी लेखनी के लिए जो नाम चुना वह 'मन्नू' था। पुस्तकें ऐसा बताती हैं कि मन्नू भंडारी ने अजमेर के सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल से शिक्षा प्राप्त की और कोलकाता से बी.ए. की डिग्री हासिल की थी। उन्होंने एम.ए. तक शिक्षा ग्रहण की और वर्षों-वर्ष तक अध्यापनरत् रहते हुए कितनी ही महिलाओं को स्त्री की अपनी भूमिका में सशक्त रहने की प्रेरणा दी है।

अंगेजी हुकूमत के बाद देश आजाद तो हुआ था, लेकिन रूढ़िवादी सोच के साथ आंतरिक रूप से जकड़ता चला गया और इस प्रकार जाति, धर्म और लैंगिक असमानता जैसे चंगुल में फँसकर समाज फिर कराहने लगा। शारीरिक गुलामी से ज्यादा मानसिक दासता खटकती है और मानसिक दैन्यता से उबरने का साधन यदि कुछ है तो वह है साहित्य। उस कठिन रूढ़िवादी समय में जब क्रांतिकारी लेखकों ने अपनी कलमें उठाईं और समाज की अंध कुरीतियों को अपना विषय बनाकर लिखना शुरू किया तब उन्हीं क्रांतिकारी लेखकों की सूची में एक नाम जोर-शोर से उभर कर सामने आया, वो नाम था 'मन्नू भंडारी' का जो बाद में हिंदी जगत् का लेखकीय चमकीला चेहरा बना। आपने लैंगिक असमानता, वर्गीय असमानता और

आर्थिक असमानता को अपनी कहानियों के माध्यम से खूब उजागर किया। सही तो कहा किसी ने कि अँधेरा जब प्रकाश के सम्मुख आ जाता है तो उसे खत्म होना ही पड़ता है। सामाजिक कुरीतियों पर उनके लेखन ने खूब कुठाराघात किया। स्त्री मन को समृद्ध बनाने के लिए मन्नू भंडारी ने एक नहीं कई एक बेहतरीन कहानी कृतियाँ और उपन्यास दिए। मन्नू भंडारी ने एक कहानी लिखी थी 'यही सच है' उस पर साल 1974 में बासु चैटर्जी ने 'रजनीगंधा' नाम से एक फिल्म बनाई थी। मन्नू भंडारी की सबसे प्रसिद्ध और अमर कृति 'आपका बंटी' को माना जाता है। आपने अपने लेखन में विषय के रूप में पिछड़े वर्ग की पीड़ा और स्त्रियों की कुंठाओं को चुना और खुले दिल से उसे उजागर भी किया।

जिसने उनको तनिक भी जाना उसको, उनकी हिम्मत- साहस का एहसास हुए बिना नहीं रहा। मन्नू भंडारी की विशेष मित्र प्रसिद्ध कथाकार सुधा अरोड़ा जी अपनी फेसबुक वाल पर लिखती हैं कि - "अपने बहुत विनम्र लहजे के साथ-साथ बहुत हिम्मती, बहुत स्वाभिमानी, बहुत बहादुर और बेहद जांबाज थीं आप, पर कभी-कभी नहीं, अक्सर ही आपकी भी हिम्मत जवाब दे जाती थी। अपनी इस हार को सबसे छिपाने की कशमकश में सारा असर आपकी नसों पर आ जाता था, जो इस कदर टीसती थीं कि देखने वाला भी घबरा जाए। अपने जीवट को बचाए रखने की कोशिश में देह और मन के बीच जो रस्साकशी चलती थी, वह आपके बहुत करीबी लोगों ने ही देखी। बाहर के लोगों ने तो न आपके मन के भीतर झाँकने की कोशिश की, न आपको कोई रियायत दी बल्कि आपने भी लांछन और तोहमतें ही झेलीं। आखिर क्यों वही आपको दिखाई देती थीं और छीलती थीं? नहीं दिखता था आपको अपने पाठकों का ऐसा बेइंतहा प्यार – जो बार-बार मुझे आपके ही पुराने खतों का जखीरा खोल-खोलकर पढ़कर आपको सुनाना पड़ता था। सन 2009 में जब कथा देश के लिए हरि नारायण जी के साथ यह निर्णय लिया था कि एक अंक आप पर केंद्रित करना है तो आपने कहा था - जब लेखक लिखना बंद कर दे तो उसे जीना भी बंद कर देना चाहिए। बार-बार आपको मुझे याद दिलाना पड़ता था कि कोई बात नहीं, जितना लिख लिया, वह अनूठा है, नायाब है। रचना की गुणवत्ता देखें, तौल के हिसाब से तो बहुत लोग लिखते हैं, वैसे लेखन का होना, न होना बराबर है।"

सही तो कह रही हैं सुधा अरोड़ा जी कि यह जरूरी नहीं कि लेखक कितना लिखता है बल्कि वह कैसा लिखता है, यह ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। इस बात के हवाले से कहा जाए तो मन्नू जी ने बेहद तथ्यपूर्ण लेखन किया है। उनके बारे में लिखते हुए मुझे गौरव का अनुभव हो रहा है कि एक स्त्री कैसे अपने भीतर पौरुषी साहस लेकर जीवन के ऊबड़-खाबड़ रास्तों को समतल करते हुए यात्रा करती रही। वे मेरी ही नहीं, अनेकों की प्रेरणास्रोत रही होंगी। मन्नू भंडारी मिरांडा कॉलेज में बतौर हिंदी की प्राध्यापिका के पद पर बनी रहीं और उन्होंने साल 1991 तक प्राध्यापिका का कार्यभार संभाला। सेवानिवृत्त होने के बाद वह दो साल तक उज्जैन में प्रेमचंद सृजनपीठ की निदेशिका (1992-1994) के पद पर कार्यरत रही थीं। उन्होंने अपने लेखन कार्यकाल में कहानियाँ और उपन्यास, दोनों लिखे हैं। 'मैं हार गई' (1957), 'एक प्लेट सैलाब' (1962), 'यही सच है' (1966), 'त्रिशंकु', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' और 'आँखों देखा झूठ' उनके द्वारा लिखे गए कुछ महत्त्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं। जहाँ 'आपका बंटी' पढ़कर कितने ही माता-पिता को बच्चों के लालन-पालन और जीने का सलीका मिला होगा, वहीं 'स्त्री सुबोधिनी', 'सयानी बुआ', 'एक प्लेट सैलाब' जैसी कहानियाँ पढ़कर कितनी स्त्रियों को दमदारी से साँस लेने का होश आया होगा, यह बात तो वे ही जानें, लेकिन हिंदी साहित्य सदैव मन्नू भंडारी जी का ऋणी रहेगा। मैं भी अपने श्रद्धा सुमन उनको प्रेम से अर्पित करती हूँ... अस्तु!

रेल पर्यटन व साहित्य को साथ संजोए
रेल मंत्रलय द्वारा विगत 60 सालों से भी
अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं



भारतीय रेल
(हिन्दी)

की सदस्यता अब
ऑनलाइन
भी उपलब्ध

विज़िट करें
www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home



Indian Railways
(English)

शर्तें एवं दरें लागू

जीवन के पक्षधर फिल्मकार
बिमल रॉय

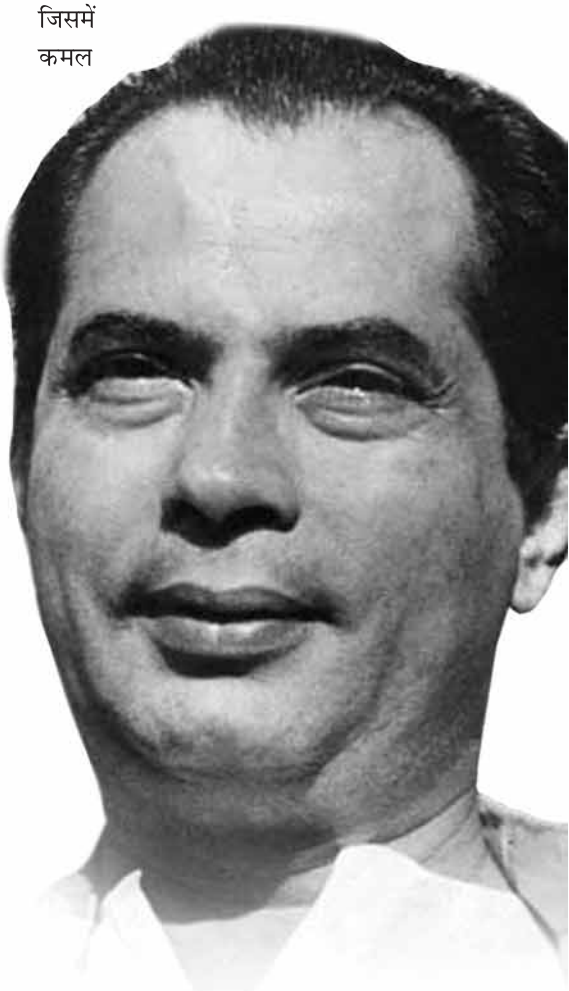
श्री अजय कुमार शर्मा

विभिन्न कला क्षेत्रों का उत्कर्ष काल उस समय के एक-दो बड़े व्यक्तियों के कृतित्व द्वारा जाना और समझा जाता है। अगर हम देश के सवाक् सिनेमा के इतिहास पर नजर डालें तो ऐसी ही एक अद्वितीय प्रतिभा के रूप में हम बिमल रॉय को पाते हैं। एक कैमरामैन के रूप में अपना कॅरियर शुरू करने वाले बिमल रॉय आने वाले समय में देश के प्रख्यात निर्देशक बने। ऐसे प्रख्यात निर्देशक कि फिल्म निर्माण की उनकी अपनी एक शैली बनी, जिसे हम 'बिमल रॉय का सिनेमा' या 'सादगी और इंसानियत' का सिनेमा भी कह सकते हैं। उनकी फिल्मों में सिनेमा के सभी कलात्मक पहलू तो हैं ही, उसमें जीवन का सौंदर्य और उसके प्रति एक निर्देशक का गहरा उत्तरदायित्व बोध भी नजर आता है। मानव जीवन की सभी विविधताएँ उनके यहाँ बिना शोर-शराबे के एक 'मौन' के रूप में प्रस्तुत होती हैं। यही कारण है कि उनके शिष्यों को एक बड़ी सूची है, जिन्होंने उनकी शैली की अपनाया और उसे आगे बढ़ाया। इस सूची में देश के कई दिग्गज नाम हैं, जैसे-ऋत्विक घटक, तपन सिन्हा, हृषिकेश मुखर्जी, कमल बोस, सुधेंदु रॉय, सलिल चौधरी, नवेंदु घोष, असित सेन, गुलजार, बासु चटर्जी एवं बासु भट्टाचार्य आदि। इतना ही नहीं, आज की युवा पीढ़ी में आशुतोष गोवरीकर, (स्व.) ऋतुपर्णो घोष, संजय लीला भंसाली, नागेश कुकनूर भी उनके व्यापक प्रभाव को स्वीकारते हैं।

बिमल रॉय का जन्म 12 जुलाई 1909 को ढाका (अब बांग्लादेश की राजधानी) से साठ किलोमीटर दूर सुआपुर के एक प्रतिष्ठित जमींदार परिवार में हुआ था। जब वे इंटरमीडियट में थे, तभी उनके पिता का देहांत हो गया। मैनेजर की धोखाधड़ी के कारण उनकी जमींदारी भी हड़प ली गई और मजबूरीवश उन्हें जीवन-यापन के लिए के कलकत्ता आना पड़ा। पास में ही उस समय की प्रसिद्ध निर्माण कंपनी न्यू थियेटर्स का ऑफिस था। वे यहाँ आने-जाने लगे। इस बीच उनका परिचय यहाँ के प्रख्यात कैमरामैन नितिन बोस से हुआ, जो कंपनी के प्रमुख कैमरामैन थे। उन्होंन राय को अपने सहायक के रूप में रख लिया। नितिन बोस जब निर्देशक बने तो उन्हें बतौर कैमरामैन लिया। 'देवदास', 'मंजिल', 'मुक्ति', 'माया', 'बड़ी दीदी' एवं 'हार जीत' जैसी महत्त्वपूर्ण फिल्मों के कैमरामैन के रूप में उन्हें बेहद प्रतिष्ठा मिली।

'न्यू थियेटर्स' के नितिन बोस एवं पी.सी. बरुआ, देवकी बोस जैसे अनुभवी निर्देशकों के साथ काम करते हुए उनकी सृजनशीलता का विकास हुआ। वे अब फिल्म निर्देशित करना चाहते थे। संकोची बिमल रॉय यह बात 'न्यू थियेटर्स' के मालिक बी.एन. सरकार से नहीं कह पा रहे थे। आखिर बांग्ला के प्रख्यात लेखक प्रमेंद्र मित्र के कहने पर उन्हें 'उदयेर पथे' नामक फिल्म, जो कि ज्योतिर्मय राय की कहानी पर आधारित थी, के निर्देशन का कार्य सौंपा गया। 1 सितंबर, 1944 को रिलीज बिमल रॉय की यह प्रयोगात्मक फिल्म 'न्यू थियेटर्स' की सबसे सफल बांग्ला फिल्म साबित हुई। यह फिल्म बंगाल में नौजवानों की प्रेरणा बन गई। बिमल रॉय ने बाद में इसे हिंदी में 'हमराही' (1945) नाम से बनाया। इसके बाद उन्होंने 'अजानगढ़' (1948), 'मंत्रमुग्ध' (1949) और 'पहला आदमी' (1950) जैसी हिंदी फिल्में निर्देशित कीं। ये तीनों फिल्में क्रांतिकारी साहित्यिक कृतियों पर आधारित थीं, लेकिन इन्हें 'उदयेर पथे' या 'हमराही' जैसी सफलता नहीं मिली।

यह समय एक तरह से 'न्यू थियेटर्स' के अवसान का समय था। कलकत्ता में काम कर रही अनेक सिने प्रतिभाएँ अब बंबई की ओर रुख कर रही थीं। बिमल रॉय ने भी अशोक कुमार और सेवक वाचा के कहने पर 'बांबे टाकीज' में कार्य करना स्वीकार कर लिया। इस तरह बिमल रॉय 1952 में अपने कुछ सहयोगियों के साथ, जिसमें कमल



बोस (कैमरा मैन), ऋषिकेश मुखर्जी (संपादक), सुधेंदु राय (कला निर्देशक) और असित सेन (अभिनेता/सहायक निर्देशक) शामिल थे, बंबई आ गए। 'मां' बंबई में उनकी पहली फिल्म थी। इस बीच अशोक कुमार ने स्वतंत्र निर्माता के रूप में शरतचंद के उपन्यास 'परिणीता' पर फिल्म बनाने का निर्णय लिया और निर्देशन की जिम्मेवारी बिमल रॉय को सौंपी। यह फिल्म अत्यंत सफल रही।

इस बीच बिमल रॉय ने भी अपनी फिल्म कंपनी 'बिमल रॉय प्रोडक्शंस' की स्थापना



की। इसके लिए निर्मित और निर्देशित उनकी पहली फिल्म 'दो बीघा जमीन' (1953) ही कालजयी साबित हुई तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर इसे व्यापक ख्याति और सम्मान मिला। 1954 के कान फिल्म समारोह और कार्लोवारी फिल्म समारोह में फिल्म सराही गई और पुरस्कृत भी हुई। फिल्म में एक गरीब किसान द्वारा जमींदार से अपनी जमीन के टुकड़े को बचाने के लिए कलकत्ता में आकर हाथ रिक्शा चलाने का मार्मिक चित्रण था। बलराज साहनी ने शंभु महतो नाम के किसान की भूमिका को ऐसे जीवंत किया कि यह आज तक बेहतर अदाकारी की जिंदा मिसाल है। हिंदी सिनेमा में ऐसा लाचार किसान फिर कभी नहीं दिखा।

इसके बाद तो बिमल रॉय द्वारा निर्मित-निर्देशित फिल्मों की एक ऐसी यादगार श्रृंखला है, जिसने हिंदी सिनेमा कहें या भारतीय सिनेमा, को नई ऊँचाइयाँ दीं; जैसे - 'बाप-बेटी' (1954), 'बिराज बहू' (1954), 'नौकरी' (1954), 'देवदास' (1955), 'यहूदी' (1958), 'मधुमती' (1958), 'सुजाता' (1959), 'परख' (1960), 'प्रेमपत्र' (1962), बंदिनी (1963) आदि।

बिमल रॉय ने अपना पूरा जीवन सिनेमा के उत्कर्ष के लिए लगा दिया। अपने 57 साल के जीवन (मृत्यु 8 जनवरी, 1966) में उनका फिल्मी कॅरियर 35 साल का था, जिसमें 1953 से 1963 उनका उत्कर्ष काल था। इन ग्यारह सालों के दौरान 'दो बीघा जमीन' से लेकर 'बंदिनी' तक उन्होंने 12 फिल्मों का निर्देशन किया। अपने प्रोडक्शन से 6 अन्य फिल्मों 'अमानत', 'परिवार', 'अपराधी कौन', 'उसने कहा था', 'काबुलीवाला' और 'बेनजीर' का निर्माण भी किया। इनमें से अधिकांशत: फिल्मों के लिए साहित्यिक कृतियों को ही आधार बनाया गया। यह उनकी रचनात्मकता का श्रेष्ठतर काल था। इस बात को इस उदाहरण से भी समझा जा सकता है कि 1953 से शुरू हुए फिल्मफेयर अवॉर्ड में 1960 तक उन्हें आठ सालों में छह बार सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए फिल्मफेयर अवॉर्ड से नवाजा गया। सिर्फ 1956 में व्ही. शांताराम और 1957 में महबूब खान इस पुरस्कार को प्राप्त कर सके वह भी तब, जब इन वर्षों में उन्होंने किसी फिल्म का निर्देशन नहीं किया। उनकी अंतिम फिल्म 'चैताली' थी, जिसे बाद में हृषिकेश मुखर्जी ने पूरा किया।

इसमें कोई दो राय नहीं कि 'दो बीघा जमीन' उनकी सर्वश्रेष्ठ फिल्म है और आज के समय में भी प्रासंगिक है, लेकिन उनकी अन्य फिल्में 'परख', 'नौकरी', 'सुजाता' भी आदर्श मानवीय मूल्यों की पक्षधर थीं जोकि सार्वभौमिक है। उनकी फिल्मों में समाज का वह पक्ष प्रतिबिंबित होता था जो सत्तावान वर्ग से विभिन्न रूपों में दमित होता था। यह शहरी अभिजात्य वर्ग ऐसा भावहीन और लोभी था जो जाति, लिंग, धर्म या अन्य किसी भी रूप में अपने शिकार ढूँढ़ ही लेता था। उन्होंने बिना किसी दलगत राजनीति के इन सामाजिक मुद्दों को बड़े सहज और सरल रूप से प्रस्तुत किया। बिमल रॉय के पसंदीदा लेखक शरतचंद्र चट्टोपाध्याय थे। उन्होंने उनकी तीन रचनाओं 'परिणीता', 'विराज बहू' और 'देवदास' पर फिल्मों का निर्माण किया। उन्होंने 16 मार्च, 1956 को शरतचंद्र पर आयोजित एक कार्यक्रम में कहा था कि शरत बाबू की कहानियाँ खूब सुगठित हैं। वे मानवीय, यथार्थपरक, मार्मिक और पावन हैं। उनके संवादों में जादू है। शरत बाबू की कोई भी कालजयी कृति फिल्म निर्माता के लिए बाक्स ऑफिस की उत्तम सामग्री प्रस्तुत करती है और दर्शक समुदाय का उससे श्रेष्ठ मनोरंजन होता है। शरत बाबू की कालजयी कृतियों को फिल्माने के कारण उत्पन्न विवादों के बावजूद इस महान् बांग्ला साहित्यकार की कृतियाँ फिल्म निर्माताओं को निरंतर आकृष्ट करती रहती हैं। शरत बाबू की कालजयी कृति के फिल्म निर्माता अच्छी फिल्म बनाने के कारण कलात्मक गौरव प्राप्त करते हैं और दर्शकों के चित्त का परिष्कार उसी तरह करते हैं, जिस तरह उनकी किसी मूल कहानी को पढ़कर होता है। बावजूद विवादों के, शरत बाबू की कालजयी कृतियां मेरे लिए भी बहुत प्रिय और आकर्षण की सामग्री हैं। मनोरंजन प्रदान करने के साथ-साथ प्रत्येक फिल्म निर्माता का अन्य बातों के साथ-साथ यह भी सामाजिक दायित्व है कि वह अपने देश की साहित्यिक विरासत के श्रेष्ठ अवदान को अपने देशवासियों के कल्याण के लिए प्रस्तुत करे। यदि फिर शरत बाबू की किसी कालजयी कृति को फिल्माने का अवसर मुझे मिला तो मैं स्वयं को धन्य मानूँगा। उक्त उद्गारों से हम साहित्यकारों के प्रति उनकी आस्था और सम्मान को महसूस कर सकते हैं।

सहज और सरल प्रस्तुति को और अधिक प्रभावी उनकी फिल्मों का संगीत बनाता था, जिसमें उनका साथ दिया आर.सी. बोराल, सलिल चौधुरी और सचिन देव बर्मन ने। 'दो बीघा जमीन', 'परिणीता', 'मधुमती', 'सुजाता' और 'बंदिनी' का संगीत कौन भुला सकता है? बिमल रॉय भारतीय सिनेमा के सबसे सफल और सम्मानित निर्माता निर्देशकों में से एक थे। अपनी साधारण जीवन शैली से उलट सिनेमा की उत्कृष्टता को बनाए रखने के लिए उनमें एक असाधारण संकल्प था। उनके फिल्म व्यक्तित्व पर उनकी बेटी रिंकी भट्टाचार्य, जो प्रख्यात फिल्म निर्देशक बासु भट्टाचार्य की पत्नी हैं, ने सही ही लिखा है, "बाबा (बिमल रॉय) अपनी फिल्मों से आधुनिक नीति कथाएँ रच रहे थे ... वह दरअसल भारतीय सिनेमा के लिए पंचतंत्र रच रहे थे। उनकी फिल्में जीवन की सत्ता की पक्षधर हैं... प्रेरक हैं।"

कलावृक्ष की स्तंभ हैं गीतांजलि शर्मा

श्री रणमत सिंह

पिछली बार जब गीतांजलि शर्मा से बात हुई तब वे कलावृक्ष का सपना साकार करने में व्यस्त थीं। इस बार जब मुलाकात हुई तो यह सपना साकार हो चुका था। लोक विधा और शास्त्रीय नृत्य (कथक) दोनों पर उनके जैसी समान दक्षता किसी और कलाकार में नजर नहीं आती। कलावृक्ष के बारे में बात करते हुए वे बताती हैं कि अकसर उनका सामना ऐसे लोगों से होता था, जो कथकली और कथक डांस फार्म को एक ही मानते हैं। ऐसे में मुझे हमेशा लगता था कि हमारे पुरखों की मेहनत हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी हम सबकी है। इधर समाज भी अपनी संस्कृति को लेकर काफी जागरूक हुआ है, जिसका एक जीता-जागता उदाहरण स्वयं कलावृक्ष स्कूल ही है, जिसने बेहद कम समय में मथुरा में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। इसके बच्चे सूरदास महोत्सव जैसे मंच पर प्रस्तुतियां दे रहे हैं। हाल ही में भजन सम्राट् अनूप जलोटा जी ने स्वयं स्कूल आकर यहां के बच्चों को आशीर्वाद दिया, तो अच्छा लगता है कि लोगों का प्यार मिल रहा है।

जिस उम्र में बच्चियां इक्खट-दुक्खट खेलती हैं, उस उम्र से गीतांजलि ने मंच पर प्रस्तुति देनी शुरू कर दी थी। मथुरा की पृष्ठभूमि से होने के कारण राधा-कृष्ण की लीलाएं देखते हुए कब उन्होंने अपने आपको राधा के साथ आत्मसात् कर लिया, उन्हें स्वयं नहीं पता। बाल्यकाल से ही उनकी प्रस्तुति दर्शकों को भाव-विभोर कर देने वाली होती थी। यही वजह थी कि उम्र से भी तेज उनकी प्रसिद्धि बढ़ी। आज वे गीतांजलि से ज्यादा 'ब्रज की राधा' के नाम से जानी जाती हैं।

आरंभ में परिवार को थोड़ी चिंता हुई, उन्हें रोका भी गया, लेकिन जिसे कान्हा की लगन लगी, वह कहां रुकी....? पहले मां और भाई का समर्थन मिला और फिर पूरा परिवार ही नहीं, पूरा मथुरा उनके साथ आ गया। 2008 में उन्होंने कथक केंद्र, नई दिल्ली में राजेंद्र गंगानी के मार्गदर्शन में कथक सीखना शुरू किया। इसके बाद आपने कथक की बारीकियों को विख्यात कथक गुरु उमा डोगरा से सीखा। इसके अलावा आपने प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से अपनी 'प्रभाकर' डिग्री पूरी की।

आज उनकी कीर्ति भारत से आगे फैलते हुए एशिया, यूरोप से होते हुए अमेरिकी महाद्वीपों तक पहुंच चुकी है। भारत में वे लगभग सभी प्रसिद्ध सांस्कृतिक महोत्सव यथा - ताज महोत्सव, खजुराहो महोत्सव, लखनऊ महोत्सव, गंगा महोत्सव (बनारस), पंडित दुर्गालाल समारोह (मुम्बई), लोकतरंग समारोह (दिल्ली), बादल राग, स्वामी हरिदास महोत्सव, सूरदास महोत्सव तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 2,000 से भी अधिक प्रस्तुतियां दे चुकी हैं।

वे अपने तमाम सांस्कृतिक कार्यक्रमों को याद करते हुए भारत और फ्रांस के प्रधानमंत्री तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सामने बनारस में गंगा किनारे दी गई अपनी प्रस्तुति मयूर रास को विशेष रूप से याद करती हैं।

आप मथुरा में 'स्वच्छ भारत अभियान' की ब्रांड एम्बेसेडर भी हैं।

गीतांजलि की इस प्रतिभा को उचित सम्मान भी मिला है। उन्हें मिले पुरस्कारों में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 2015 में दिया गया यश भारती सम्मान, 2010 में राष्ट्रीय युवा पुरस्कार, तथा संगीत नाटक अकादमी द्वारा 2011 में दिया गया उस्ताद बिस्मिल्लाह खान अवॉर्ड प्रमुख हैं।

गीतांजलि शर्मा की यह यात्रा जारी है। 'भारतीय रेल' पत्रिका उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।



शब्द पहेली

योगी

1	2		3	4		5		6
7			8			9	10	
11		12			13			
					14			15
16			17				18	
			19			20		
21								
		22		23				
	24					25		

बाएं से दाएं

1. हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नया नाम (7)
7. ....फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर (2)
8. नकली, नेट (2)
9. अक्षय कुमार अभिनीत एक फिल्म (3)
11. यमराज का निवास स्थान (4)
13. एक धातु (3)
14. अक्ल, बुद्धि (2)
16. द्रोणाचार्य को अंगूठा काट कर देने वाला शिष्य (4)
18. स्नेह, ममता, ...-माया (2)
19. बरगद का पेड़ (2)
20. बेकार, कबाड़ (3)
21. प्यार, लव, (2)
22. पर्यटकों को लुभाने वाला देश का सबसे पुराना रेल इंजन (5)
24. लड़की, कन्या (2)
25. सेना के लिए खाद्य सामग्री (3)

ऊपर से नीचे

1. प्रभु श्रीराम से संबंधित तीर्थ स्थानों की यात्रा कराती विशेष पर्यटन ट्रेन (8)
2. बोली लगाकर बेचना, (ऑक्शन) (3)
3. परिहास, हँसी, दिल्लगी (3)
4. .... मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल (2)
5. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध मंदिर ..... बालाजी (4)
6. देश में सर्वाधिक ऊंचाई पर स्थित रेलवे स्टेशन (2)
10. सतह, परत, लेवल, स्टैंडर्ड (2)
12. उपनगरीय रेलवे को .... ट्रेन भी कहते हैं। (3)
13. वाणिज्य, एक पढ़ाई की स्ट्रीम (3)
15. मुंबई ..... हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर, एक मशहूर शहर (6)
17. व्यापार, बिजनेस (4)
18. एक गीत - किसी राह पर किसी ... पर (2)
20. भारतीय ..... निगम लिमिटेड (कॉनकॉर) (4)
21. एक हास्य फिल्म - हेरा ... (2)
23. मध्य प्रदेश का एक शहर (2)



भारतीय रेल

पत्रिका अब राष्ट्रीय रेल संग्रहालय चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में भी उपलब्ध है

अपना ज्ञान टटोलें

1. भारत में पहली रेलगाड़ी कब चली थी?

(क) सन् 1850 में | (ख) सन् 1851 में | (ग) सन् 1853 में | (घ) सन् 1847 में

2. भारत के सबसे बड़े रेल सह सड़क पुल का नाम क्या है?

(क) गोदावरी आर्क | (ख) दिघा-सोनपुर | (ग) मुंगेर गंगा | (घ) बोगीबील, असम

3. डीएचआर (DHR) यूनेस्को द्वारा संरक्षित एक धरोहर है, जो भारत की पर्वतीय रेलवे है। डीएचआर (DHR) की फुल फॉर्म क्या है?

(क) डिब्रूगढ़ हिमालयन रेलवे | (ख) दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे | (ग) दबोक हिमालयन रेलवे | (घ) दाबूगांव हिमालयन रेलवे

4. आरएसी (RAC) की फुल फॉर्म क्या है?

(क) रिजर्वेशन अगेंस्ट कनेक्टिविटी | (ख) राइट अगेंस्ट कैंसिलेशन | (ग) रिजर्वेशन अगेंस्ट कैंसिलेशन | (घ) रिजर्वेशन आफ्टर कैन्सिलेशन

5. भारतीय रेल की पहली इंजनरहित ट्रेन का नाम क्या है?

(क) शताब्दी एक्सप्रेस | (ख) राजधानी एक्सप्रेस | (ग) वंदेभारत एक्सप्रेस | (घ) तेजस एक्सप्रेस

6. भारतीय रेल की उत्पादन इकाई इंटीग्रल कोच फैक्ट्री कहां स्थित है?

(क) रायबरेली | (ख) बेंगलुरु | (ग) मैसूर | (घ) चेन्नई

7. वर्तमान रेल मंत्री का नाम बताइए?

(क) पीयूष गोयल | (ख) अश्विनी वैष्णव | (ग) सुरेश प्रभु | (घ) निर्मला सीतारमण

8. भारत की सबसे लंबी सुरंग का नाम क्या है?

(क) पीर पंजाल | (ख) पातालपानी | (ग) त्रिवेन्द्रम पोर्ट टनल | (घ) संगलदान सुरंग

9. एशिया का सबसे बड़ा कंटेनर डिपो कहां स्थित है?

(क) चेन्नई | (ख) मुंबई | (ग) दिल्ली | (घ) सूरत

10. भारतीय रेल में मेट्रो रेलवे सहित कुल कितने जोन हैं?

(क) 15 | (ख) 10 | (ग) 12 | (घ) 17

1. ग 2. घ 3. ख 4. ग 5. ग 6. घ 7. ख 8. क 9. घ 10. घ

सही उत्तर

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपना विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपना उत्पादों की पहुंच बनाएं

विज्ञापन दरें

(विज्ञापन चार कलर में)

नीचे दी गई दरों के साथ 5 प्रतिशत की जीएसटी/आइजीएसटी प्राप्य होगी

विवरण	विशेष दर (वार्षिक अंक) (₹)	सामान्य अंक (मासिक दरें)	
		सामान्य दरें (₹)	अनुबंधित दरें (₹)
बैक कवर	13,300	11,400	10,450
सेकेण्ड कवर	12,350	10,450	9,500
थर्ड कवर	11,400	9,500	8,550
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति, जैसे टेक्स्ट से पूर्व व बाद में)	9,500	8,550	7,600
पूरा पृष्ठ	8,550	7,600	6,650
आधा पृष्ठ	6,650	5,130	4,180
सेंटर स्प्रेड	17,000	15,000	13,300
सेंटर स्प्रेड (दो पेज इकट्ठे (स्पेशल पोजीशन)	18,500	16,500	14,700

* तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथबा बारी-बारी देने पर अनुबंधित दरें लागू।

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार

28 X 20.5 सेमी

छपाई क्षेत्र

23 X 16.5 सेमी

भुगतान का माध्यम

व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा नकद राशि रूम नं. 310, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001 में जमा की जा सकती है

विज्ञापन सामग्री

ई-मेल, आर्टपुल, सीडी

पत्रिका का प्रसार

समग्र देश में

संपर्क करें :

प्रशांत कुमार पट्टनायक, व्यापार प्रबंधक

310, रायसीना रोड, नई दिल्ली-1,

टेलिफोन : 9717647367, 011-233822531, 23303665, 23304456

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2021-22-2023
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिकाएँ



भारतीय रेल

INDIAN RAILWAYS



की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें

या

विजिट करें : **www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn**

पत्रिका की वार्षिक सदस्यता शुल्क तथा अन्य जानकारियों के लिए देखें

कवर पृष्ठ सं. नं. 2

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**